

दावते फ़िक्र

लेखक
मुहम्मद अहमद साहब बरेलवी

क़ादरी दारुल इशाअत
मुस्तफ़ा मस्जिद वैलकम दिल्ली-53

786

92

बफ़ैज़ाने सरकार मेरे शैख़ ओ मुर्शिद हज़रत अल्लामा मौलाना हुज़ूर मुफ़्तीए आज़मे हिन्द मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा वर्रिद्वान

ईमान व अमल को रौशन करने वाली व हक़ और बातिल की पहचान कराने वाली किताब तौहफ़ए लाजवाब

दावते फ़िक्र

मुरत्तबा जनाब मुहम्मद अहमद साहब

नाशिर

आलाहज़रत एकाडमी

बरेली शरीफ़

नाम किताब	दावते फ़िक्र
लेखक	मुहम्मद अहमद नूरी
मुलाहिज़ा कर्दा	1. मुफ़्ती मुहम्मद आज़म साहब
	2. मौलाना बहा उल मुस्तफ़ा साहब
	3. मौलाना सग़ीर अख़तर साहब
मिलने के पते	आलाहज़रत एकाडमी 196,197 इंगलिश गंज क़िला बरेली
	मकतबा जामे नूर 422, मटिया महल दिल्ली
	फ़ारूक़िया बुक डिपो 422, मटिया महल दिल्ली

फेहरिस्त

पेश लफ़्ज़

अज़ हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद आज़म साहब क़िब्ला शैख़ुल हदीस दारुल उलूम मज़हरे इस्लाम बरेली शरीफ़

नहमदुहू व नुसल्लि अ़ला रसूलिहिल करीम

मैने इस किताब " दावते फ़िक्र " मुरत्तबा जनाब मुहम्मद अहमद साहब नूरी बरेलवी का मुताला किया। इस किताब में ईमान की अहमियत और उसकी हिफ़ाज़त और ईमान के लुटेरों और बद्मज़हबों से दूर रहने का बयान है। .कुरआन व हदीस और उल्माए अहले सुन्नत की किताबों ख़ुसूसन आला हज़रते इमाम अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रहमत) की किताब तम्हीदे ईमान और उनके फ़तावा के हवालाजात से पेश की गई हैं। वहाबियों की किताबों की कुफ़्री इबारात की फ़ोटो कापी पेश करके इसमें आपने एक नया रंग दिया है जो इस बात का वाज़ेह सुबूत है कि वहाबी फ़िरक़ा बद्दीन है। माशा अल्लाह किताब बहुत मुफ़ीद ईमान को महफ़ूज़ व मज़बूत करने वाली ईमान व अमल को रौशन करने वाली गुमराह व गुमराहकुन अफ़राद व फ़िरक़ों से बचाने वाली है चूंकि हिन्दी में है इसलिए ख़ास तौर से आजकल के हिन्दी-दाँ नौजवानों के लिए बहुत मुफ़ीद है। मौला तआ़ला इसे क़बूले आम फ़रमाए और साहिबे किताब मुहम्मद अहमद साहब नूरी को दूसरी और मुफ़ीद किताबें मुरत्तब करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन। बिरहमतिका या अरहमर्राहिमीन व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला सय्येदिना मुहम्मदियूँ व आलिही व असहाबिही अजमईन।

मुहम्मद आज़म .ग़ुफ़िरालहु

6 सफ़र 1413

किताब पढ़ने से पहले यह दो शब्द .जुरूर पढ़ें

अल्लाह और उसके प्यारे हबीब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के फ़ज़्ल -ओ- करम और सरकारे ग़ौसे पाक, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सरकारे आला हज़रत और मेरे पीर -ओ- मुर्शिद सरकार हुज़ूर मुफ़्ती -ए- आज़म की नज़्रे करम से यह छोटी सी किताब "दावते फ़िक्र" का नवीन संसकरण जो कि रद्दे वहाबिया पर ही है आपके हाथ में है।

यह किताब अस्ल में उन लोगों के लिए है जो सुन्नी वहाबी के झगड़े को सही तौर पर नहीं पहचानते और इधर-उधर के लोगों की बातें सुन सुन कर या सुन्नीयों की बदआमालियाँ देखकर यह समझ बैठे हैं कि सुन्नी सही रास्ते पर नहीं या फिर इन इख़्तेलाफ़ (मतभेद) से इसी वजह से दूर रहते हैं और इस इख़्तेलाफ़ को सिर्फ़ मौलवीयों की लड़ाई समझ कर छोड़ बैठे हैं। यह किताब उन लोगों के लिए नहीं जो सब कुछ जानते हुए भी अन्जान बने बैठे हैं या जिनके दिलों पर अल्लाह तआ़ला ने मोहर कर दी है और उन्हें अब हक़ नहीं सूझता और ऐसे लोगों को आप कितना ही समझाइये वह सिर्फ़ ज़बान चला कर और सच को झूट पेश कर के आज कल के वकीलों की तरह जीतने की कोशिश करते हैं जब कि वो ख़ूब समझते हैं कि ख़ुद ही झूटे और मक्कार हैं और ख़ुद तो अपनी आक़बत ख़राब कर बैठे दूसरों की आक़बत भी ख़राब कर रहे हैं।

पढ़ने वालों से मेरी गुज़ारिश है कि तंग-नज़री और शुकूक को दूर करके ***इस किताब को पूरा पढ़ें अधूरा न छोड़ें*** और फिर ठंडे दिमाग़ से सोचें कि वाक़ई मैं सही कह रहा हूँ या इस तरह से लिखने से मैं क़ौम को कोई नुक़सान

पहुँचा रहा हूँ। क्या मैंने आपको उन लोगों (जो अल्लाह व रसूल को बुरा कह कर मुरतद हो गए) से होशयार करके बुरा किया है या अच्छा? क्या मैं ईमान (जो सबसे अहम चीज़ है) के छीनने वाले से आपको होशयार करके मुसलमानों को फ़ायदा पहुँचा रहा हूँ या नुक़सान?

यह किताब पाठकों की अदालत में पेश है और कहना यह है कि क्या हम उस मक़सद में कामयाब है जिसके लिए दुनिया में भेजे गए यानी क्या हम ईमान पर हैं? क्या हम वहाबियत की तरफ़दारी करके अल्लाह व रसूल से लड़ाई का ऐलान नहीं कर रहे हैं? क्या हम ख़्वामख़्वाह दूसरों के बहकावे में आकर सैकड़ों उन कामों से दूर नहीं हो जाते जो हमारे लिए नेकियों का ज़ख़ीरा बनतीं? क्या हम वहाबियों के बहकावे में आकर अपनी नमाज़ें, रोज़े, ज़कात और हज जैसे फ़राइज़ को ज़ाए नहीं कर रहे? क्या हम उन लोगों से निकाह करके जो अल्लाह रसूल के बदगो हैं अपनी नस्लों को बरबादी के रास्ते पर नहीं डाल रहे? क्या हम अन्जाने में उन लोगों से दोस्ती करके जिनसे अल्लाह और उसके हबीब ने बचने का हुक्म दिया अल्लाह व रसूल को नराज़ नहीं कर रहें? अरे उन्हीं से वास्ता पड़ना है क़ब्र में, हश्र में, मीज़ान पर, पुलसिरात पर और फिर जन्नत में भी तो वही ले जायेंगे दोज़ख़ से भी तो वही बचायेंगे। अपने दिल पर हाथ रख कर कहना क्या हम जैसों के आमाल इस क़ाबिल हैं कि जन्नत में जायें मगर उनके सदक़े में जन्नत ही में जायेंगे? इन्शाअल्लाह तआ़ला। क्या सिर्फ़ अपने आमाल के भरोसे जन्नत पा जाओगे हरगिज़ नहीं। क़सम ख़ुदा की बिना अल्लाह के महबूब के चाहे जन्नत नहीं मिलनी, अल्लाह तआ़ला ने उन्हीं के लिए ये सारे जहान बनाए हैं, उन्हें राज़ी करने में ही नजात है। वह राज़ी हुए तो अल्लाह राज़ी वह नाराज़ तो अल्लाह हरगिज़ राज़ी न होगा।

लोग इलज़ाम देते हैं कि अपनी दुकानें चमकाने के

लिए यह सब इख़्तेलाफ़ात खड़े किए गए हैं, ख़ूब सोच समझ कर देखो कि फ़ितना कहाँ से शुरू हुआ और किसने शुरू किया और आज भी अल्लाह और रसूल की शान में ये लोग गुस्ताख़ी कर रहे हैं बल्कि आज भी वही गन्दी किताबें छप रही हैं जब चाहो बाज़ार से जाकर ख़रीद कर देख लो और फिर फ़ैसला करो कि मेरा इस किताब के लिखने का मक़सद क्या है। एक बात यह भी कहना है कि हम सुन्नी बराबर इस बात को कहते हैं कि वहाबियों से दूर रहो, ठीक इसी तरह अगर हम वहाबियों की नज़र में शिर्क करने वाले क़ब्रों को पूजने वाले हैं तो यह हमसे दूर रहने का ऐलान साफ़ साफ़ क्यूँ नहीं करते हमसे क्यूँ मिले रहना चाहते हैं क्या इसका यह मतलब नहीं कि यह हमसे मिल कर हमारे ईमान की फ़िक्र में हैं।

<u>इस किताब में वहाबियों देवबन्दियों की किताबों से उन कुफ़्री इबारतों की फ़ोटो कापी पेश की गई जिन बातों का अस्ल झगड़ा है और जिनकी वजह से ये मुरतद हुए।</u>

ग़ौर कीजिए अगर सुन्नी झूटे हैं और ये फ़ोटो कापी झूटी हैं तो क्या बाज़ार में आज भी बिक रही इनकी यही किताबें इस बात का सुबूत नहीं कि सुन्नी सच्चे और यह वही मक्कार फ़िरक़ा है जिससे हमारे आक़ा ने बचने का हुक्म फ़रमाया वह इसी लिए कि ये कहीं हमें गुमराह न कर दें ईमान से न फेर दें। ये तो इस किताब में चन्द फ़ोटो कापी हैं वर्ना इनके अक़ाइद तो इससे भी ज़्यादा बुरे हैं, ज़्यादा तफ़सील के लिए सुन्नियों की दूसरी किताबों को पढ़ें और हक़ीक़त को जानें।

बहरहाल इतने सुबूत पेश करने के बाद भी फ़ैसला आप पर ही छोड़ा है। अल्लाह पाक अपने हबीब के सदक़े में हमे और आपको सुन्नी सही -उल- अक़ीदा रखे और सीधा सच्चा मुसलमान बनाए और फ़ितनए वहाबियत से बचाए।

मुहम्मद अहमद

2मुहर्रम 1420

بسم الله الرحمٰن الرحيم

نحمده و نصلي علىٰ رسوله الكريم

तुम्हारा रब अज़्ज़ावजल्ला फ़रमाता है

إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيرًا ۝ لِّتُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ

وَتُوَقِّرُوْهُ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّأَصِيْلًا ۝ (سوره الفتح)

<u>तर्जमा</u> : ऐ नबी! बेशक हमने तुम्हें भेजा गवाह और ख़ुशख़बरी देता और डर सुनाता ताकि ऐ लोगों तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ताज़ीम व तौक़ीर करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बोलो।

मुसलमानों देखो दीने इसलाम भेजने .क़ुरआन मजीद उतारने का मक़सूद ही तुम्हारा मौला तबारक व तआला तीन बातें बताता है।

1. यह कि लोग अल्लाह व रसूल पर ईमान लायें।
2. यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताज़ीम करें।
3. यह कि अल्लाह तबारक व तआला की इबादत में रहें।

मुसलमानों इन तीनों जलील (बड़ी) बातों की जमील (ख़ूबसूरत) तरतीब तो देखो सबसे पहले ईमान को फ़रमाया और सबसे पीछे अपनी इबादत को और बीच में अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ताज़ीम को इसलिये कि बग़ैर ईमान ताज़ीम कारामद नहीं ---- बहुतेरे नसारा (ईसाई) हैं कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम की ताज़ीम व तकरीम में तसनीफ़ें कर चुके (यानी किताबें लिख चुके, नातें लिख चुके), लेक्चर दे चुके मगर जबकि ईमान न लाये कुछ मुफ़ीद (फ़ायदेमन्द) नहीं कि यह ज़ाहिरी ताज़ीम हुई दिल में हुज़ूर-ए-अक़दस स़ल्ललल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की सच्ची अज़मत होती तो ज़रूर ईमान लाते फिर जब तक नबीए करीम स़ल्ललल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की सच्ची ताज़ीम न हो उम्र भर इबादते इलाही में गुज़ारे सब बेकार व मरदूद है। बहुतेरे जोगी और राहिब दुनिया को तर्क करके अपने तौर पर ज़िक्र व इबादते इलाही में उम्र काट देते हैं बल्कि उनमें बहुत से वह हैं कि "लाइलाहा इल्लल्लाह" का ज़िक्र सीखते हैं और ज़रबे लगाते हैं मगर यह कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स़ल्ललल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम नहीं तो क्या फ़ायदा असलन क़ाबिले .कबूल बारगाहे इलाही नहीं यानी अल्लाह तआ़ला की बारगाह में ऐसी इबादत क़बूल नहीं होती। अल्लाह अज़्ज़ावज़ल्ला ऐसों ही को फ़रमाता है।

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ۝

<u>तर्जमा</u> : जो कुछ आमाल उन्होंने किए हमने सब बरबाद कर दिये। ऐसों ही को फ़रमाता है कि

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝

<u>तर्जमा</u> : अमल करें मशक्क़तें भरें और बदला क्या होगा यह कि भड़कती आग मे पैठेंगे। (वल अयाज़ु बिल्लाहि तआ़ला)

मुसलमानों कहो कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स़ल्ललल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम मदारे ईमान व मदारे नजात व मदार .कुबूले आमाल हुई या नहीं --- कहो हुई और .जुरूर हुई। मुसलमानों अपने रब का एक और इरशाद ध्यान रखो।

तुम्हारा रब अज़्ज़ावजल्ला फ़रमाता है

اِنَّ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِیْلِ اللّٰہِ ثُمَّ مَاتُوْا وَھُمْ

کُفَّارٌ فَلَنْ یَّغْفِرَ اللّٰہُ لَھُمْ ۝ (سورہ محمد)

__तर्जमा__ : बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका फिर काफ़िर ही मर गए तो अल्लाह हर्गिज़ उन्हें न बख़्शेगा। (सूरए मुहम्मद)

अल्लाह और उसके हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रहम–ओ–करम से जिसे ईमान की दौलत नसीब हुई वह दुनिया के उन ख़ुश-नसीबों में से है जिसे अशरफ़ुल मख़लूक़ात यानी अल्लाह तआला की मख़लूक़ में सबसे अफ़ज़ल कहा गया है और यह सदक़ा है मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का। ईमान शर्त है नेक आमाल के .कबूल होने की, ईमान शर्त है नमाज़ों के .कबूल होने की, रोज़े के मक़बूल होने की हज व ज़कात .कुबूल होने की। जिनके पास ईमान नहीं उनके नेक अमल बेकार हैं वह सारी ज़िन्दगी भी सजदे में रहें तो उनके कुछ काम न आएगा। ईमान वाला गुनाहगार भी सय्यदे आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की शफ़ाअत और करम से और उनके सदक़े में एक न एक दिन जन्नत में ज़ुरूर जाएगा। ईमान वालों के लिए ही हमेशगी है जन्नत में। ईमान वालों के लिए .कुरआन है, ईमान वालों को अल्लाह पाक ने .कुरआन में जगह–2 " ऐ ईमान वालों " कहकर नेक अमल करने के लिये इर्शाद फ़रमाया है। ईमान वालों ही के लिये जन्नत की ख़ुशख़बरी है दोज़ख़ से नजात है बिना ईमान के नेक अमल मक़बूल नहीं हैं।

ईमान वाला अशरफुल्मख़लूक़ात है तो बेईमान सबसे बदतरीन मख़लूक़ है, बेईमान जानवरों से भी बदतर है। बेईमान हमेशा जहन्नम में रहेगें ख़्वाह कैसे भी नेक आमाल किये हों। ईमान जन्नत में जाने की पहली और ज़रूरी सीढ़ी है। बेईमान जन्नत की ख़ुशबू भी न पा सकेगा। ईमान वालों के लिये सबसे बड़ी नेमत अपने प्यारे रब का दीदार है। यहाँ एक बात बहुत ज़्यादा ध्यान देने की है कि अगर इन्सान से एक बात भी कुफ़्र की हो हो जाती है तो उसके हाथ से ईमान निकल जाता है ऐसी हालत में फ़ौरन उस बात से तौबा करके कलिमा-ए-तय्यबा "लाइलाहा इल्ललल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" कहकर फिर ईमान में दाख़िल हो जाना चाहिये।

आम मुसलमान यह जानता है, नहीं जानता तो जान ले कि अल्लाह तआला ने इन्सान को अपनी इबादत के लिये पैदा फ़रमाया है और वह उसका इम्तहान भी लेगा और इम्तहान में बड़े से बड़े गुनाह को अगर चाहेगा तो माफ़ फ़रमा देगा मगर कुफ़्र व शिर्क को न बख़्शेगा और काफ़िर हमेशा जहन्नम में रहेंगे। लिहाज़ा ईमान पर रहना उसे बचाये रखना सारी ज़रूरतों में सबसे अहम है। इबादतें ईमान वालों ही की .क़ुबूल है नाकि बेईमान की।

याद रखिये दुनिया में दो क़िस्म के लोग हैं मुसलमान (यानी ईमान वाले) और काफ़िर, बीच वाले कोई नहीं --- सिर्फ एक कुफ़्र इन्सान को काफ़िर बना देता है --- अगर कोई शख़्स हज़ारों काम नेकी के करता है और किसी एक कुफ़्र पर क़ायम रहता है और यूंही बिना तौबा के मर जाता है तो वह क़यामत में काफ़िर उठेगा और हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख़ में रहेगा।

यहाँ कहना यह है कि सब कुछ चला जाय मगर किसी भी क़ीमत पर ईमान हर्गिज़-हर्गिज़ न जाय, कोई भी

बात ऐसी न हो कि आदमी इसलाम के दायरे से बाहर हो जाए, अगर कोई भी बात ऐसी मुँह से निकल जाए या हो जाय तो फ़ौरन जल्द से जल्द तौबा करके कलिमा पढ़कर फिर से दायरए इसलाम में दाख़िल हो जाना चाहिए।

तुम्हारा रब अज़्ज़ावजल्ला फ़रमाता है

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّيْنَ ۝ (سورہ البقر)

तर्जमा : असल नेकी यह नहीं कि अपना मुँह नमाज़ में पूरब या पश्चिम को करो बल्कि असल नेकी यह है कि आदमी ईमान लाए अल्लाह और क़यामत और फ़रिशतों और .कुरआन और तमाम अम्बिया पर।

देखो साफ़ फ़रमा दिया कि .ज़ुरूरयात-ए-दीन पर ईमान लाना ही अस्ल काम है बग़ैर उस के नमाज़ में क़िब्ले को मुँह करना कोई चीज़ नहीं।

ज़रा ग़ौर करो मुसलमानों सुबह से शाम तक तुम कितनी नेकियाँ करते हो और कितने गुनाह। क्या तुम्हारी नेकियाँ गुनाहों से ज़्यादा हैं अगर हाँ तो तुम उन ख़ुशनसीबों में से हो जो जन्नती हैं मगर सोचो कि क्या तुम्हारी नेकियाँ अल्लाह तआला की बारगाह में क़बूल भी हैं या नहीं। तुम्हारा जवाब यही होगा कि अल्लाह बेहतर जाने। लेकिन सोचो कि तुम नेकियाँ तो कर रहे हो मगर कोई बात तुम से ऐसी हो रही है या हो गई जिससे तुम्हारा ईमान चला गया या चला जाएगा तो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म यही है कि तुम्हारा कोई अमल क़बूल नहीं यानी अगर तुम्हारे पास ईमान नहीं तो तुम्हारी सारी इबादत बेकार। ----- यूँही ग़ौर करो कि तुम्हारे गुनाह नेकियों से ज़्यादा हैं मगर तुम्हारा ईमान

महफ़ूज़ है तो क़सम ख़ुदा की उस शफ़ाअत करने वाले के सदक़े में उसकी शफ़ाअत उसकी सिफ़ारिश से तुम एक न एक दिन जन्नत में .ज़ुरूर जाओगे बल्कि अल्लाह तआला का फ़रमान है कि तमाम नबियों की उम्मत पर जन्नत हराम है जब तक मेरे महबूब की उम्मत जन्नत में दाख़िल न हो जाए यानी जन्नत में सबसे पहले जा रहे हो, ज़रा सोचो बल्कि ग़ौर से सोचो कि यह किसके सदक़े में है तो जवाब वही है मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्ल्म) के सदक़े में। वह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्ल्म) जो रातों को अपनी उम्मत के लिए रोते थे --- वह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्ल्म) जो तुम्हें इतना चाहते हैं जितना तुम अपने आपको भी नहीं चाहते --- वह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्ल्म) जो जो तुम्हारे गुनाह की माफ़ी मांगते हैं जबकि तुम माफ़ी मांगना भूल जाते हो मगर याद रखो यह महब्बत ईमान वालों के लिए है बेईमानों के लिए नहीं।

तमाम ही इन्सान सोचें कि एक वक़्त वह था कि इन्सान का वजूद न था। अल्लाह तआला ने अपने करम से इन्सान को पैदा फ़रमाया और अब जब इन्सान पैदा हो चुका तो इसके वजूद को फ़ना नहीं यानी दुनिया से जाने के बाद भी वजूद इन्सान का बाक़ी रहेगा --- वह कहाँ होगा यह उसके ईमान और आमाल पर मुन्हसिर है यानी अगर ईमान वाला है तो एक न एक दिन जन्नत .ज़ुरूर मिलेगी, आमाल अच्छे हैं तो जन्नत मिलेगी मगर अगर ईमान नहीं तो दोज़ख़ और सिर्फ़ दोज़ख़ ही ठिकाना है। गुनाहगार तो अल्लाह के फ़ज़्ल और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सदक़े में कभी न कभी जन्नत में .ज़ुरूर जायेंगे मगर बेईमान हमेशा दोज़ख़ का ईधन बने रहेंगे।

फ़िरक़ों और फ़ितनों के बारे में हुज़ूर की पेशगोईयाँ

ईमान की अहमियत मुसलमान जानता और समझता है और ऊपर लिखे जुमलों से और ज़्यादा रौशन हो जाता है कि ईमान हर चीज़ से ज़्यादा क़ीमती और अज़ीज़ है। अब यहाँ कुछ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इर्शादात पेश हैं ताकि आप दौरे हाज़िरा में फैले वहाबियत के फ़ितने को समझें और फिर चाहें तो तहक़ीक़ करें और इससे बचें क्योंकि ईमान की सलामती के लिये इनसे बचना बेहद .ज़ुरूरी है क्यूँकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि यह काफ़िर और मुनाफ़िक़ तुम्हारा ईमान लेने की फ़िक्र में रहते हैं। अब पढ़िए कि हमारे आक़ा ने हमें पहले ही बता दिया कि फ़ितने और फ़िरक़े कब और कैसे ज़ाहिर होंगे ताकि हम उनको पहचान लें और हुज़ूर के फ़रमान के मुताबिक़ इन फ़ितनों से बचें :-

1. हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि यह मेरी उम्मत तिहत्तर फ़िरक़े हो जाएगी। एक फ़िरक़ा जन्नती होगा बाक़ी सब जहन्नमी होंगे। तो हुज़ूर से सहाबा ने पूछा कि या रसूलल्लाह वह कौन लोग हैं जो जन्नती हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब देते हुये इरशाद फ़रमाया कि वह जिस पर मैं और मेरे सहाबा हैं यानी सुन्नत के पैरौ हैं।

एक दूसरी रिवायत में यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह जमाअत है यानी मुसलमानों का बड़ा गिरोह जिसे सवाद-ए-आज़म कहा गया है और हुज़ूर ने यह भी फ़रमाया कि जो इस जमाअत से अलग हुआ वह जहन्नम में। इसीलिये इस जन्नती और नजात पाने वाले फ़िरक़े का नाम अहले सुन्नत व जमाअत हुआ।

2. बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़ और मिशकात शरीफ़ की कुछ हदीसों का ख़ुलासा इस तरह है कि .कुर्बे क़यामत तीस दज्जाल पैदा होगें जो नुबुव्वत का दावा करेंगे --- दीन में फ़ितने बरपा होगें मेरी उम्मत तेहत्तर (73) फ़िरक़ों में बट जाएगी --- .कुरआन व हदीस की मनमानी तफ़सीरें होंगी --- लोग अच्छों को बुरा कहेंगे पिछलों पर लानत करेंगे --- सुन्नत को बिदअत समझा जाएगा। --- हलाल को हराम कहा जाएगा --- अच्छे बुरों को हलाल व हराम की तमीज़ ख़त्म हो जाएगी --- लोग सुबह इसलाम पर करेंगे और कुफ़्र पर शाम --- चटाई के तिनके और तस्बीह के दानों की तरह पै दर पै फ़ितनों की बारिश होगी, कोई इसमें नहाएगा कोई भीगेगा किसी को सीलन पहुँचेगी ग़र्ज़ कोई भी इन फ़ितनों से न बचेगा।

3. हज़रत अबदुल्लाह इब्ने उमर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से हज़रत इमाम बुख़ारी ने यह हदीस नक़ल की है कि एक दिन हुज़ूरे अनवर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने शाम और यमन के लिए दुआ फ़रमाई जिसके अलफ़ाज़ यह हैं :-

"ख़ुदावन्दा हमारे शाम और यमन में बरकत नाज़िल फ़रमा"

(दुआ करते वक्त नज्द के कुछ लोग बैठे हुये थे) उन्होने अर्ज़ किया और हमारे नज्द में या रसूलल्लाह!

इस पर हुज़ूर ने इर्शाद फ़रमाया "ख़ुदावन्दा हमारे शाम और यमन में बरकत नाज़िल फ़रमा" --- फिर दुबारा नज्द के लोगों ने अर्ज़ किया और हमारे नज्द में या रसूलल्लाह! रावी (रिवायत बयान करने वाला) का बयान है कि तीसरी मरतबा में हुज़ूर ने फ़रमाया वह ज़लज़लों और फ़ितनों की जगह है और वहाँ से शैतान की सींघ निकलेगी।"

(बुख़ारी शरीफ़)

4. अल्लामा दहलान रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह अपनी किताब अद्दुररुस्सुन्नीय्या में फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अनवर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :-

"कुछ लोग मशरिक़ की सम्त से ज़ाहिर होंगे जो .कुरआन पढ़ेंगे, लेकिन .कुरआन उनके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा। जब उनका एक गिरोह ख़त्म हो जाएगा तो वहीं से दूसरा जन्म लेगा यहाँ तक कि उनका आख़री दस्ता दज्जाल के साथ उठेगा।"

5. मिशकात शरीफ़ में हज़रते अबू सईद ख़ुदरी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मनक़ूल है :-

वह कहते हैं कि हम लोग हुज़ूरे अनवर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे और हुज़ूर माले ग़नीमत तक़सीम फ़रमा रहे थे कि "ज़ुल्ख़वेसिरा" नाम का एक शख़्स जो क़बीला बनी तमीम का रहने वाला था आया और कहा ऐ अल्लाह के रसूल इन्साफ़ से काम लो। हुज़ूर ने फ़रमाया "अफ़सोस तेरी जसारत (जुर्रत, हिम्मत) पर मैं ही इन्साफ़ नहीं करूँगा तो और कौन इन्साफ़ करने वाला है। अगर मैं इंन्साफ़ नहीं करता तो तू ख़ाएब व ख़ासिर (तहस-नहस) हो चुका होता।" हज़रते उमर से जब नहीं रहा गया तो उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मुझे इजाज़त दीजिए मैं इसकी गर्दन मार दूँ। हुज़ूर ने फ़रमाया इसे छोड़ दो यह अकेला नहीं है इसके बहुत से साथी हैं जिनकी नमाज़ों और रोज़ों को देखकर तुम अपनी नमाज़ों और रोज़ों को हक़ीर समझोगे, वह .कुरआन पढ़ेंगें लेकिन .कुरआन उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। यानी इन सारी ज़ाहिरी ख़ूबियों के बाव्वजूद वह दीन से ऐसे निकल जाएगें जैसे तीर से शिकार निकल जाता है। (मिशकात शरीफ़ व बुख़ारी शरीफ़)

6. यही वाक़या दूसरे सिलसिलए रवायत में मरवी है जिनके

अलफ़ाज़ यह हैं एक शख़्स आया जिसकी आखें धंसी हुई थीं, पेशानी उभरी हुई थी, दाढ़ी घनी थी, दोनों गाल फूले हुये थे और सर मुंडा हुआ था। उसने ज़बाने तान दराज़ की ऐ मुहम्मद अल्लाह से डरो। हुज़ूर ने फ़रमाया मैं ही नाफ़रमान हो जाऊँगा तो अल्लाह की फ़रमाबरदारी कौन करेगा, अल्लाह ने तो मुझे ज़मीन वालों पर अमीन बनाया है लेकिन तुम मुझे अमीन नहीं समझते। इसी दरम्यान में एक साहबी ने उसे क़त्ल की इजाज़त चाही, हुज़ूर ने उन्हें रोक दिया। जब वह शख़्स चला गया तो फ़रमाया कि इसकी नस्ल से एक जमाअत पैदा होगी जो .कुरआन पढ़ेगी लेकिन .कुरआन उसके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा। वह दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है। वह मुसलमानों को क़त्ल करेंगे और बुतपरस्तों को छोड़ देंगे।

7. यही वाक़्या हज़रत शुरैक इब्ने शिहाब रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से भी मनक़ूल है। इसमें उन्होंने इस गुस्ताख़ शख़्स से मुताल्लिक़ सरकारे मआब का यह इरशाद नक़ल किया है :-

"फिर हुज़ूर ने फ़रमाया आख़री ज़माने में एक गिरोह निकलेगा गोया यह शख़्स इसी गिरोह का एक फ़र्द है। .कुरआन पढ़ेंगे लेकिन .कुरआन उनके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा। वह इसलाम से ऐसे निकल जाऐंगे जैसे तीर शिकार से। उनकी ख़ास पहचान सिर मुंडाना है। वह हमेशा गिरोह दर गिरोह निकलते रहेंगें यहाँ तक कि उनका आख़री दस्ता मसीह दज्जाल के साथ निकलेगा। जब तुम उनसे मिलोगे तो उन्हें अपनी तबीअत व सरिश्त के लिहाज़ से बदतरीन पाओगे। (मसीह के दो माअना हैं एक माअना बहुत ज़्यादा सय्याह यानी सफ़र करने वाला और यह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की सिफ़्त है। दूसरा माअना है वह जिसकी आँख न हो दोनों या एक यह दज्जाल की सिफ़्त है वह एक आँख का काना होगा।)

8. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रते अनस इब्ने मालिक रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हुम से मिशकात शरीफ़ में यह हदीस नक़ल है हुज़ूरे अनवर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत में इख़्तेलाफ़ व तफ़रीक़ का वाक़ेए होना मुक़द्दर हो चुका है पस इस सिलसिले में एक गिरोह निकलेगा जिसकी बातें बज़ाहिर दिलफ़रेब ख़ुशनुमा होगीं लेकिन किरदार गुमराहकुन और ख़राब होगा, वह .कुरआन पढ़ेंगे लेकिन .कुरआन उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा वह दीन से ऐसे निकल जाएंगें जैसे तीर शिकार से निकल जाता है फिर दीन की तरफ़ लौटना उन्हें नसीब न होगा यहाँ तक कि तीर अपने कमान की तरफ़ लौट आए। हदीस की मुराद यह है कि उनका दीन की तरफ़ लौटना मुहाल है जैसे तीर का लौटना मुहाल है वह अपनी तबीयत व सरिश्त के लिहाज़ से बदतरीन मख़लूक़ होंगें। वह लोगों को .कुरआन और दीन की तरफ़ बुलाएंगे हांलाकि दीन से उनका कोई तअल्लुक़ न होगा जो उनसे जंग करेगा वह ख़ुदा का मुक़र्रबतरीन बन्दा होगा। सहाबा ने फ़रमाया उनकी ख़ास पहचान क्या होगी या रसूलल्लाह! फ़रमाया सर मुंडाना।

9. इस हदीस की ख़ुसूसियत यह है कि अस्ल हदीस बयान करने से पहले हदीस के रावी हज़रते अली रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फ़रमाया कि क़सम ख़ुदा की आसमान से ज़मीन पर गिर पड़ना मेरे लिए आसान है लेकिन हुज़ूर की तरफ़ कोई झूठी बात मनसूब करना बहुत मुश्किल है। इसके बाद अस्ल हदीस का सिलसिला यूँ शुरु होता है फ़रमाते हैं :-

"मैंने हुज़ूरे अनवर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना कि आख़िर ज़माने में नौ उम्र और कम समझ लोगों की एक जमाअत निकलेगी, बातें वह बज़ाहिर अच्छी करेंगे लेकिन ईमान उनके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा

वह दीन से ऐसे निकल जाऐंगे जैसे तीर से शिकार निकल जाता है।"

इस हदीस में उम्मत से उम्मते दावत मुराद है यानी वो लोग मुराद हैं जिनको ईमान और अहकामे इस्लाम की दावत देने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा गया। इस मअना में काफ़िर भी दाख़िल हैं। दूसरा मअना उम्मते इजाबत यानी जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए और उनकी बात दिल से क़बूल की इसमें ग़ैर मुस्लिम दाख़िल नहीं।

10. हज़रत अबू नईम ने हिलया में अबू उमामा बाहली रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से नक़ल किया है कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :-

"आख़िर ज़माने में क़ीड़े-मकोड़े की तरह हर तरफ़ 'मुल्लाने' फूट पड़ेंगें। बस तुममें से जो शख़्स वह ज़माना पाए तो उसे चाहिए कि वह उनसे ख़ुदा की पनाह मांगे।

इसी के साथ यह हदीस भी पढ़ लीजिए जो मिशकात शरीफ़ में हज़रत हसन बसरी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है :

हुज़ूरे अनवर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया "लोग अपनी मस्जिदों में दुनिया की बातें करेंगें। जब ऐसा ज़माना आ जाय तो तुम उनके साथ मत बैठना! अल्लाह ऐसे लोगों से बे-परवाह है" (मिशकात शरीफ़)

11. मोहद्दिसे कबीर इमाम अबू याला ने हज़रत इब्ने मालिक रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से इस हदीस की तख़रीज फ़रमाई साहिबे इबरीज़ ने अपनी इस किताब में नक़ल किया है।

"हज़रते अनस बयान करते हैं कि मदीने में एक बड़ा ही आबिद व ज़ाहिद नौजवान था। हमने एक दिन हुज़ूर से उसका तज़करा किया, हुज़ूर उसे नहीं पहचान सके फिर उसके औसाफ़ बयान किये जब भी हुज़ूर उसे नहीं पहचान सके यहाँ

तक कि एक दिन वह अचानक सामने आ गया जैसे ही उस पर नज़र पड़ी, हमने ख़बर दी हुज़ूर यह वही नौजवान है। हुज़ूर ने उसकी तरफ़ देखकर यह इरशाद फ़रमाया इसके चेहरे पर मैं शैतान की ख़ारिश के धब्बे देखता हूँ। इतने में वह हुज़ूर के क़रीब आया और सलाम किया। हुज़ूर ने उससे मुख़ातिब होकर फ़रमाया क्या यह बात नहीं है कि तू अभी अपने दिल में सोच रहा था कि तुझसे बेहतर यहाँ कोई नहीं है। उसने जवाब दिया, हाँ। इसके बाद वह मस्जिद के अन्दर दाख़िल हुआ। हुज़ूर ने आवाज़ दी कि कौन इसे क़त्ल करता है। हज़रते अबूबक्र ने जवाब दिया मैं। जब इस इरादे से मस्जिद के अन्दर गये तो उसे नमाज़ पढ़ता देखकर वापस लौट आए और अपने दिल में ख़्याल किया कि एक नमाज़ी को कैसे क़त्ल करूँ जबकि हुज़ूर ने नमाज़ी के क़त्ल से मना किया है। फिर हुज़ूर ने अवाज़ दी कौन इसे क़त्ल करता है। हज़रते उमर ने जवाब दिया मैं। जब वह मस्जिद के अन्दर गये तो उस वक़्त नौजवान सजदे की हालत में था। वह भी उसे नमाज़ पढ़ता देखकर हज़रते अबूबक्र की तरह लौट आए। फिर हुज़ूर ने आवाज़ दी कौन इसे क़त्ल करता है। हज़रते अली ने जवाब दिया मैं। हुज़ूर ने फ़रमाया तुम इसे ज़रूर क़त्ल कर दोगे बशर्ते कि वह तुम्हें मिले। लेकिन जब हज़रते अली मस्जिद में दाख़िल हुये तो वह जा चुका था। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया अगर तुम इसे क़त्ल कर देते तो मेरी उम्मत के जुमला फ़ितना-परदाज़ो में से यह पहला और आख़री शख़्स होता, मेरी उम्मत के दो अफ़राद भी आपस में नहीं लड़ते। (अबरेज़ शरीफ़)

गैब की ख़बरें देने वाले हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की इन मुबारक हदीसों से साफ़ तौर पर यह ख़बरें पहले ही दे दी गईं कि इस उम्मत का 73 फ़िरक़ों में

बंटना मुक़द्दर हो चुका है। (जिसमें सिर्फ़ एक फ़िरक़ा हक़ पर होगा) ---- सुन्नत को बिदअत कहा जाएगा ---- हलाल को हराम कहा जाएगा ---- लोग सुबह इसलाम पर कुफ़्र पर शाम करेंगे ---- बे-पनाह फ़ितने बरसेंगे कोई फ़ितनों से बच न पाएगा ----- नज्द से फ़ितना उठेगा ------ ऐसे लोग ज़ाहिर होगें जो बज़ाहिर नमाज़ी, रोज़ा रखने वाले, .कुरआन पढ़ने वाले, दीन की तरफ़ बुलाने वाले होंगे मगर उनके पास ईमान न होगा और यह भी कि ऐसे लोगों की इबादत के आगे तुम अपनी इबादत को हक़ीर जानोगे ------- आख़िर ज़माने में मुल्लाने कीड़े-मकोड़े की तरह निकलेंगे और इनका आख़री दस्ता दज्जाल के साथ निकलेगा।

अब ऐ मुसलमानों ख़ूब ग़ौर करके देखो इन हदीसों की रोशनी में कि वह जन्नती फ़िरक़ा कौन सा है जिस पर हमें और आपको क़ायम रहना है और वह 72 फ़िरक़े कौन हैं जिनसे दूर रहना है चूंकि ईमान की सलामती के लिये यह ज़ुरूरी और बहुत ज़्यादा ज़ुरूरी क्योंकि अगर तुम किसी ऐसे के बहकावे में आ गए जो बातिलों में से है तो तुम्हारा नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और तमाम नेक आमाल बेकार हो जाएंगे चूंकि आमाल की मक़बूलियत ईमान पर मुनहसिर है। होशयार इन दिखावे की इबादत वालों के बहकावे में न आना यह ईमान के दुश्मन तुम्हारा ईमान लेने की फ़िक्र में हैं एक यही वह दौलत है जिस पर तुम जितना नाज़ करो कम है, तुम्हारा यह ख़ज़ाना ये फ़िरक़े बहरूपये बन कर छीनने आये हैं। ये तुम्हें अपना दोस्त ज़ाहिर करके नेकी की तरफ़ बुलायेंगे, इसलिए इनको पहचानना बहुत .ज़ुरूरी है क्यूँकि तुम इनके बहकावे में आ सकते हो क्यूँकि भोले मुसलमान को हमेशा धोके और मक्कारी से हराया गया है।

जैसा कि सय्यदे आलम ग़ैब की ख़बर देने वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था उसके मुताबिक़ होता गया और होता रहा है और सब आगे होगा क्यूँकि हमारा नबी सच्चा उसका फ़रमान सच्चा। इन बातिल फ़िरक़ों में कुछ हिन्दुस्तान से बाहर पैदा हुए और वहीं खत्म हो गए, कुछ हिन्दुस्तान और उसके बाहर पाए जाते हैं जैसे : राफ़ज़ी, वहाबी, ग़ैर मुक़ल्लदीन (जो अपने आपको अहले हदीस कहते हैं) नैचरी, चिकड़ालवी, जमाअते इसलामी (मौदूदी जमात वाले), क़ादयानी वग़ैरह वग़ैरह।

और इन सब में सबसे ज़्यादा ख़तरनाक, ख़बीस, मक्कार और फ़रेबी फ़िरक़ा फ़ितना-ए-वहाबीयत है और ज़्यादातर फ़िरक़ों की शाख़ें इसी से जाकर मिलती है और इनकी सबसे बड़ी पहचान यह है कि ये अपनी किताबों में अल्लाह और उसके हबीब की शान में गालियाँ बकते हैं तौहीन करते हैं और पेश की गई हदीसों के मुताबिक़ एकदम फ़िट बैठते हैं। इस छोटी सी किताब के ज़रिए मैं आपको इसी फ़िरक़े से होशियार करना चाहता हूँ।

अल्लाह व रसूल हमें और आपको अपनी पनाह में रखे और इन ख़बीसों से बचाए। इस फ़िरक़ा-ए-वहाबीया की मुख़्तसर तारीख़ कुछ इस तरह हुई है :-

तारीख़-ए-वहाबियत

इस बेदीन वहाबी फ़िरक़े की इब्तिदा इबलीस लईन से है कि अल्लाह अज़्ज़ावजल्ला ने सय्येदिना आदम अ़लैहिस्सलाम की ताज़ीम का हुक्म दिया और मलऊन ने न माना और ज़मानए इसलाम में इसका हादी ज़ुलख़्वेसरा तमीमी हुआ जिसने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की शान में तौहीनी कलमा कहा और उसके बाद पूरा गिरोह ख़्वारिज का

उस तरीक़े पर चला जिनको अमीरुल मोमनीन मौला अली ने क़त्ल फ़रमाया लोगों ने कहा हम्द अल्लाह को जिसने उन की नजासतों से ज़मीन को पाक किया। अमीरुल मोमनीन ने फ़रमाया यह मुनक़ता नहीं हुए अभी उनमें के माओं के पेटों में हैं, बापों की पीठों में हैं जब इनमें की एक सगंत काट दी जाएगी दूसरी सर उठाएगी, यहाँ तक कि इनका पिछला गिरोह दज्जाल के साथ निकलेगा।

इस हदीस के मुताबिक़ यह लोग नए-2 नाम से ज़ाहिर होते रहे यहाँ तक कि बारहवीं सदी के आख़िर में इब्ने अब्दुल वहाब नजदी इस गिरोह का सरग़ना हुआ।

यह फ़ितना बारह सौ नौ हिजरी (1209) में शुरु हुआ इस मज़हब का गुरु घटांल अब्दुल वहाब नजदी का बेटा मोहम्मद था। उसने तमाम अरब और ख़ास कर हरमैन शरीफ़ैन में बहुत ज़्यादा फ़ितने फैलाए। आलिमों को क़त्ल किया। सहाबा, इमामों, आलिमों और शहीदों की क़ब्रें खोद डालीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रौज़े का नाम सनमे अकबर (बड़ा बुत) रखा था। अल्लामा शामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने उसे ख़ारजी बताया।

उस अबदुल वहाब के बेटे ने एक किताब लिखी जिसका नाम "किताबुत्तौहीद" रखा उसका तर्जमा हिन्दुस्तान, में मौ. इसमाईल देहलवी ने किया जिसका नाम "तक़वीयतुल ईमान" रखा और हिन्दुस्तान में वहाबियत इसी ने फैलाई। इन वहाबीयों का एक बहुत बड़ा अक़ीदा यह है कि जो उनके मज़हब पर न हो वह काफ़िर है, मुशरिक है। यही वजह है कि बात-2 पर बिला वजह मुसलमानों पर कुफ़्र और शिर्क का हुक्म लगाते और तमाम दुनिया को मुशरिक बताते हैं।

आजकल तरह तरह के नाम से वहाबियों की शाख़ें पैदा हो चुकी हैं जिनका ज़िक्र आगे आता है।

तारीख़ रद्दे वहाबीयत

जब मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब नजदी ने मज़हब-ए-वहाबियत (हि. 1209) की शुरूआत की तो उस दौर के आलिमों ने उसका रद्द किया और उसने उन रद्द करने वालों पर तरह-2 के मज़ालिम ढाए --- और ज्यों-2 वक़्त गुज़रता रहा उलमए किराम और अवाम अपने-2 तरीक़ों से रद्द करते रहे। मगर इस काम को अन्जाम देने के लिये अल्लाह जल्ला शान्हु ने तो किसी और को ही मुक़र्रर करना था और उस हस्ती ने वह काम अन्जाम दिया जो कोई न दे सका, और आने वाली नस्लें और पूरी मिल्लते इस्लामिया उसकी एहसानमन्द है और रहेगी।

जब हिन्दुस्तान में सिराते मुस्तक़ीम, तक़्वीयतुल ईमान, हिफ़ज़ुल ईमान, बराहीन-ए-क़ातेआ, फ़तावा रशीदया, और तहज़ुरुन्नास जैसी किताबें लिखकर अल्लाह और उसके रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सरीह गालियाँ दी जा रही थीं और भोले मुसलमानों के ईमान पर डाके डाले जा रहे थे और इन तौहीनों को ऐन ईमान बताया जा रहा था और इस तरह इस्लाम की जड़ों को खोदा जा रहा था ऐसे वक्त में अल्लाह पाक ने एक अज़ीम हस्ती आलाहज़रत मुजद्दिद दीन -ओ- मिल्लत शाह मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ाँ रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु को पैदा फ़रमाया जिसने अपने क़लम की तलवार से इन किताबों और इनके लिखने वालों की धज्जीयाँ बिखेर दीं और करोड़ों मुसलमानों के ईमान को बचा लिया और जिसको दुनिया ने उसे मुजद्दिद-ए-आज़म और आला हज़रत कहा जिसे अरब के उलमाओं ने सर आखों पर बिठाया, जिसने अपनी ज़िन्दगी को सिर्फ़ इसी काम के लिये वक़्फ़ कर दिया, जिसका एहसान क़यामत तक आने वाले हर मुसलमान पर होगा।

यहाँ मेरा मक़सद सरकारे आलाहज़रत की तारीफ़ करना नहीं बल्कि यह बताना है कि हिन्दुस्तान में वहाबियत के रद्द के लिये आला हज़रत ने क्या तरीक़एकार अपनाया। आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ाँ रदियल्लाहु तआला अन्हु ने वह इबारतें जो क़ाबिले एतराज़ थीं (साफ़ कुफ़्र थीं) और उनके लिखने वालों के नाम लिखकर अरब के उलमाओं की बारगाह में यह इल्तिजा की कि यहाँ पर हिन्दुस्तान में फ़लाँ फ़लाँ लोग इस क़िस्म की बातें करते हैं, लिखते हैं और ऐसा अक़ीदा रखते हैं तो ऐसे लोगों के लिये शरीअत का क्या हुक्म है। अरब के 35 जलील –ओ– क़द्र आलिमों ने आला हज़रत की तारीफ़ ताईद में तक़रीज़ें लिखीं और इन पाँच लोगों पर कुफ़्र का हुक्म दिया।

1. .गुलाम अहमद क़ादयानी
2. मौ. मु. क़ासिम नानूतवी
3. मौ. रशीद अहमद गंगोही
4. मौ. ख़लील अहमद अम्बेठी
5. मौ. अशरफ़ अली थानवी

यह फ़तवा और इसका जवाब "हुसामुल हरमैन" के नाम से छपा और जो आम तौर से सुन्नी कुतुबख़ानों पर मिलता है। यह अरबी ज़ुबान में है साथ में तर्जमा उर्दू में भी है। इस छोटी सी किताब में हिन्दी तर्जमा देना मुमकिन नहीं जो हज़रात शौक़ रखते हों उसे देख सकते हैं।

तो यही वह इख़्तेलाफ़ है कि आला हज़रत पर इलज़ाम दिया जाता है कि वह मुसलमानों को काफ़िर कहते हैं जबकि अरब के उलमा ने साफ़ फ़रमा दिया कि अब इनके अक़वाल जानने के बाद इनके कुफ़्र में जो शक करे वह भी काफ़िर है।

इस वहाबी फ़िरक़े की कुछ ख़ास मुख़्तलिफ़ नाम इस तरह हैं जैसे देवबन्दी, तबलीग़ी जमाती, नदवी, जमाते इसलामी (मौदूदी जमात) ग़ैर मुक़ल्लिद वग़ैरह; यह सब ही इस्माईल देहलवी के पैरू और मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नजदी के नक़्शे क़दम पर हैं। अल्लाह और रसूल की तौहीन करना, बात-2 पर कुफ़्र और शिर्क का हुक्म लगाना, बाज़ हलाल बातों को हराम कहना, बाज़ सुन्नतों को बिदअत कहना और रियाकारी वगैरह इनका शेवा है।

मुख़्तलिफ़ कुफ़्री इबारतें मय अक्स

अभी तक आपको ईमान की अहमियत, फ़िरक़ों के बारे में रसूलुल्लाह (स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की पेशिनगोईयों और फ़िरक़ए वहाबीया का मुख़्तसर ख़ाका बताया गया। अब वह बातें लिखी जा रही हैं जिनको देखकर एक जाहिल गंवार भी यह कहेगा कि यह हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को गाली देना और उनकी शान में बहुत बड़ी गुस्ताख़ी है और साथ ही उन कुफ़्री इबारतों की फ़ोटो स्टेट कापी भी पेश की जा रही है ताकि किसी क़िस्म के शक की कोई गुन्जाइश न रहे और अगर फिर भी आपको शक बाक़ी रहे तो वह किताब बाज़ार से लेकर इन ख़बीस इबरतों को देख सकते हैं। ये किताबें आज भी छप रहीं हैं अलबत्ता इतना .जुरूर हुआ है कि कुछ प्रकाशकों ने जब किताब नए सिरे से छापी तो पेज नम्बर आगे पीछे हो गए हैं मगर इबारतें ज्यों की त्यों मौजूद हैं।

1. मौ. इस्माईल देहलवी की किताब 'यक रोज़ा' के सफ़ा 17 और मौ. क़ासिम नानूतवी की किताब 'बराहीने क़ातेअ' के सफ़ा 6 की अन्डर लाइन इबारतों में अल्लाह तआ़ला के लिए झूट बोलने को साबित किया है यानी इनका यह अक़ीदा

है कि अल्लाह तआ़ला झूट बोल सकता है। 'यक रोज़ा' की इबारत यह है :-

"हम नहीं मानते कि अल्लाह का झूट बोलना मुहाल (असम्भव) है।"

'बराहीने क़ातेअ' की इबारत यह है :-

"इम्काने किज़्ब (झूट) का मसअला तो अब जदीद किसी ने नहीं निकाला बल्कि क़ुदमा (पुराने उल्मा) में इख़्तेलाफ़ (मतभेद) हुआ है कि ख़ल्फ़े वईद (वायदे के ख़िलाफ़ करना) आया जाइज़ है कि नहीं।"

मौ. इस्माईल देहलवी ने तो साफ़ लिख दिया कि हम नहीं मानते कि अल्लाह तआ़ला का झूट बोलना असम्भव है यानी अल्लाह तआ़ला झूट बोल सकता है। मौ. क़ासिम नानूतवी ने यह कह दिया कि अल्लाह का झूट बोलना और वायदे के ख़िलाफ़ करना इन बातों में तो पुराने आलिमों के मतभेद है यानी कुछ आलिम इस बात को मानते रहे हैं कि अल्लाह झूट बोल सकता है और वायदे के ख़िलाफ़ भी कर सकता है जबकि ऐसा नहीं है सारे पुराने आलिम बुज़ुर्ग हमेशा से अल्लाह तआ़ला को बेऐब और हर ऐब से पाक मानते आए हैं। अब यह लोग (यानी उल्माए देवबन्द) अल्लाह के लिए झूट बोलना को सम्भव बता कर उसे ऐबदार नहीं बता रहे। क्या अल्लाह को झूटा कहना या उसके झूट बोलने को सम्भव मानना उसे ऐब लगाना और उसकी तौहीन नहीं है, बेशक यह तौहीन है।

यह लोग अल्लाह तआ़ला में झूट का ऐब साबित करने के लिए दलील यह देते हैं कि अल्लाह पाक हर चीज़ पर क़ादिर है यानी वह हर काम कर सकता है और वह हर वह काम कर सकता है जो बन्दा कर सकता है लिहाज़ा वह झूट भी बोल सकता है। अपने सुबूत में ये लोग क़ुरआन

की यह आयत पेश करते है कि اِنَّ اللّٰہَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ (तर्जमा : बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है)। बेशक यह .कुरआन की आयत है बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है लेकिन वह अपनी शान के लाएक़ क़ादिर है यानी जो उसकी शान है वह वही काम करता है और ऐबदार काम करना उसके लिए मुहाल (असम्भव) हैं चूंकि उसमें ऐब होना मुहाल लिहाज़ा ऐब का काम करना भी मुहाल। मिसाल के तौर पर कोई कहे कि अल्लाह दूसरा अल्लाह बना सकता या बहुत से अल्लाह बना सकता लिहाज़ा अगर यह बात साबित करने के लिए .कुरआन की यही आयत पेश की जाए तो क्या यह भी मुमकिन मान लिया जाएगा नहीं हरगिज़ नहीं। लिहाज़ा साबित हुआ कि अल्लाह तआला के लिए ऐब की कोई बात साबित करना या झूट और वायदा ख़िलाफ़ी जैसे ऐब को साबित करना अल्लाह तआला की खुली तौहीन है और ऐसा अक़ीदा रखने वाला अल्लाह पाक बेऐब की तौहीन करता है लिहाज़ा काफ़िर -ओ- मुरतद है। इन इबारात की फ़ोटो कापी किताब के आख़िर में देखें।

<u>नोट</u> : इस मसअले को समझने के लिए आलाहज़रत मुजद्दिद दीन -ओ- मिल्लत शाह मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ाँ रदि़यल्लाहु तआला अन्हु का रिसाला " सुब्हानस्सुब्बूह " फ़तावा रज़विया की छटी जिल्द में पढ़ें।

2. मौ. इस्माईल देहलवी की फ़ारसी में छपी किताब "सिराते मुस्तक़ीम" के पेज न. 86 पर और इसी किताब के उर्दू एडीशन के सफ़ा 126 पर लिखी अन्डर लाइन इबारत का मफ़हूम यह है कि नमाज़ में ज़िना के वसवसे से बीबी के साथ मुजाअमत (सम्भोग) के ख़्याल को बेहतर और हुज़ूर अलैहिस्सलाम की तरफ़ तवज्जो लगाने को गधे और बैल के ख़्याल में मुस्तग़रक़ (ख़्याल में डूब जाना) हो जाने के

मुक़ाबिले में बदतर क़रार दिया है। (नऊज़ो बिल्लाह मिन ज़ालिक) अब आप ख़ुद ही फ़ैसला करें कि इस इबारत को सही कहने या मानने वाला क्या है? काफ़िर है या नहीं? और उससे होशयार रहें कहीं ईमान न चला जाए। यानी इनका अक़ीदा यह है कि अगर नमाज़ के दौरान हुज़ूर का ख़्याल आ जाए तो नमाज़ जाती रहेगी जबकि गधे घोड़े या बीवी से हमबिस्तरी का ख़्याल आ जाने से नमाज़ में ख़लल न आएगा। बाज़ लोग यह कहते हैं कि नमाज़ में सिर्फ़ अल्लाह का ख़्याल आना चाहिए नहीं तो नमाज़ शिर्क हो जाएगी तो मैं उन जाहिलों से पूछता हूँ कि दुरूद के वक़्त किसका ख़्याल आना चाहिए क्या अल्लाह पर दुरूद पढ़ा जाएगा। इसके अलावा .कुरआन की वह आयात जिनमें हुज़ूर ही का ज़िक्र है क्या छोड़ छोड़ कर नमाज़ या तरावीह पढ़ोगे। अल्लाह बचाए रखे ऐसे घिनौने अक़ीदे से।

इस घिनौनी इबारत की फ़ोटो स्टेट कापी इस किताब के आख़िर में मुलाहिज़ा फ़रमायें।

3. मौ. अशरफ़ अली थानवी ने अपनी किताब "हिफ़ज़ुल ईमान" सफ़ा 8 पर हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्मे ग़ैब के मुताल्लिक़ बहस करते हुए लिखा है --- हुज़ूर के लिए इल्मे ग़ैब कुल होगा या बाज़ (यानी थोड़ा या कुछ या कुल से कम) कुल तो अक़लन मुहाल (असम्भव, नामुमकिन) है और अगर बाज़ है (यानी थोड़ा है) तो ऐसा इल्म कि हर सबी (बच्चे) मजनून (पागल) हैवानात (सभी पशु) और बहाएम (जंगली जानवर) को भी हासिल है इस में हुज़ूर की ही क्या तख़सीस (ख़ुसूसियत) है।

ज़ाहिर है कि जब कुल इल्म मुहाल है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए बाज़ इल्म का साबित होना तसलीम है मगर सवाल यह है कि हुज़ूर

अलैहिस्सलाम के लिए बाज़ उलूम मानकर उलूम में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को पागलों, बच्चों, हैवानों और चौपाओं के साथ मिसाल देना किस मुसलमान को बर्दाश्त हो सकता है।

मैं अगर आपसे यह कहूँ कि आपको, आपके माँ-बाप और आपके उस्ताद को कुल इल्म मुहाल है और बाज़ इल्म साबित और इसमें आपके माँ-बाप या उस्ताद ही क्या बाज़ इल्म तो एक सुअर, कुत्ते, बन्दर, बच्चे और पागल को है तो यक़ीनन आपको सख़्त नागवार गुज़रेगा और आपका बस चले तो मुझे सख़्त से सख़्त सज़ा देंगे शायद जान से ही मार डालेंगे यहाँ कोई शक की गुन्जाइश नहीं कि यह तौहीन है तो फिर मेरे भाई उनके लिये जो हमारे सरकार हैं, अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह के बाद जिनका दर्जा है, जहाँ से इल्म बटता है जिनके लिये सारे आलम पैदा किये गए, जो हमारे आक़ा व मौला हैं और जो हमें अपने माँ-बाप, बीवी, औलाद और माल से भी ज़्यादा अज़ीज़ हैं यह बात कैसे क़ाबिल-ए-बर्दाश्त है हर्गिज़ हर्गिज़ नहीं। जब यह इबारत हम आप जैसों की तौहीन हुई तो उनकी तौहीन क्यूँ न हुई, क्या हुज़ूर के लिए ऐसी बात बकना हुज़ूर को गाली देना और कुफ़्र नहीं, बेशक यह कुफ़्र है और जो शख़्स ऐसा बकने वाले को मुसलमान जाने वह भी काफ़िर है मुरतद है। इस इबारत की फ़ोटो स्टेट किताब के आख़िर में देखें।

4. मौ. ख़लील अहमद अम्बेठी ने अपनी किताब "बराहीन-ए-क़ातेआ" के सफ़ा 55 पर लिखी अन्डर लाइन इबारत का मफ़हूम यह है कि "शैतान और मलकुलमौत (रूह क़ब्ज़ करने वाला फ़रिश्ता) का इल्म नस से साबित है (यानि .क़ुरआन व हदीस से साबित है) और हुज़ूर का इल्म नस से साबित नहीं बल्कि ऐसा मानना शिर्क है ईमान नहीं"

भाईयों ईमान से बताना कि इसमें शैतान के इल्म को हुज़ूर के इल्म से ज़्यादा अहमियत दी गई या नहीं? शैतान के इल्म का सुबूत दिया और हुज़ूर के इल्म को मानने को शिर्क बताया। क्या यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम की तौहीन नहीं है? क्या ऐसे को अपना पेशवा या मौलाना मानकर हम ख़ुदा को मुँह दिखा सकेंगे? क्या ऐसे शख़्स को काफ़िर कहना ज़ुरूरी न होगा? क्या ऐसे शख़्स को मुसलमान जानने वाला ख़ुद मुसलमान है? यही वह अक़ीदों के इख़्तेलाफ़ हैं जिनकी बिना पर देवबन्दी गुमराह कहे जाते हैं। ख़बरदार, होशियार।

"बराहीन क़ातेआ" के सफ़ा 55 के अलफ़ाज़ यह हैं सुबूत के लिये फ़ोटो स्टेट कापी मौजूद है।

"ग़ौर करना चाहिए कि शैतान व मलाकुल मौत का हाल देखकर इल्म मुहीत-ए-ज़मीन का फ़ख़रे आलम को ख़िलाफ़ नुसूस-ए क़तइया के बिला दलील महज़ क़यास फ़ासदा से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है। शैतान व मलाकुल मौत को यह वुसअत नस से साबित हुई, फ़ख़रे आलम का वुसअत-ए-इल्म को कौन सी नस क़तई है कि जिससे तमाम नुसूस को रद्द करके एक शिर्क साबित करता है"

यह अलफ़ाज़ मैने ज्यूँ के त्यूँ नक़ल कर दिये हिन्दी वालों की आसानी के लिये बताता चलूँ कि इल्म मुहीत-ए-ज़मीन के मायने हैं कि सारी ज़मीन के इल्म को घेरे हुए, फ़ख़रे आलम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिये आया है, नस क़तईया का मतलब है कि वह क़ुरआन व हदीस की इबारतें जिससे दूसरे माअनी का शुबा न हो, क़यासे फ़ासदा यानी बेकार ख़्याल, वुसअत यानी चौड़ाई लम्बाई यानी नाप अब फिर ग़ौर से पढ़िए और समझिए फिर देखिये कि हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म को साबित करने को शिर्क बताया जा रहा है और शैतान और मलाकुल मौत के इल्म के सुबूत में नस पेश की जा रही है तो यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान घटाना या उनकी खुली तौहीन और गुस्ताख़ी नहीं तो और क्या है और सरकारे दो आलम की तौहीन के ये अलफ़ाज़ कुफ़्र साबित नहीं करते तो और क्या है। अब भी कहीं गुन्जाइश है ऐसे शख़्स को काफ़िर समझने में जो अल्लाह के महबूब के इल्म को यूँ शैतान से कमतर बताए। यहाँ एक बात और ग़ौर करने की है कि शैतान के लिये इल्म का साबित करना शिर्क नहीं है और हुज़ूर के लिये वह साबित करना शिर्क हो गया और अगर हुज़ूर के लिये शिर्क है तो शैतान के लिये मानना क्यूँ शिर्क नहीं? यानी ऐसी घिनौनी इबारत लिखने वाला ख़ुद ही अपने जाल में फंस गया और ख़ुद अपने ही अल्फ़ाज़ से मुशरिक साबित हुआ। ऐ भोले मुसलमानों! ईमान से कहना भोले मुसलमानों को मुशरिक कहने वाला ऐसा शख़्स मुशरिक हुआ या नहीं, बेशक हुआ।

<u>नोट</u> :- अहले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा यह है कि अल्लाह तआला का इल्मे ग़ैब ज़ाती है यानी उसको किसी ने दिया नहीं और हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इल्मे ग़ैब अताई यानी अल्लाह तआला का दिया हुआ है ---- अल्लाह का इल्म क़दीम (हमेशा से) है और मख़लूक़ का इल्म हादिस (जो बाद में पैदा हुआ) --- अल्लाह का इल्म नामख़लूक़ है बन्दे का मख़लूक़ --- अल्लाह का इल्म नामक़दूर है बन्दे का मक़दूर (क़ुदरत दिया गया) --- अल्लाह का इल्म ज़रूरी बक़ा (हमेशा रहने वाला) और बन्दे का जाएजुलफ़ना (फ़ना होने वाला) --- अल्लाह का इल्म मुम्तनाउलतग़य्युर (जिसमें तबदीली न हो

सके) और बन्दे का मुम्किनुत्तबदील (जो तबदील हो सके)। दूसरी ख़ास बात यह है कि अहले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा यह है कि अगर अव्वलीन व आख़रीन का इल्म जमा किया जाए तो उस इल्म का इल्मे इलाही से वह निसबत हरगिज़ नहीं हो सकती जो एक क़तरे के करोड़वें हिस्से को समन्दर से है कि यह निसबत मुतानाही (इन्तेहा यानी आख़िर तक पहुँचाने वाला) की मुतानाही के साथ है और वह ग़ैर मुतानाही, मुतानाही को ग़ैर मुतानाही से क्या निसबत।

इल्मे ग़ैब के मसअले को समझने के लिए और यह जानने के लिए कि अहले सुन्नत वल जमाअत का इंल्मे ग़ैब के बारे में क्या अक़ीदा है आलाहज़रत की लिखी हुई निम्न किताबों को देखें :-

1. अद्दौलतुल मक्किया 2. इम्बा उल मुस्तफ़ा 3. इल्मे ग़ैबे रसूल

5. मु. .कासिम नानूतवी बानी दारुलउलूम देवबंद ने एक किताब लिखी जिसका नाम "तहज़ीरुन्नास" है। इस किताब के सफ़ा 2, 3, 13 और 24 की फ़ोटो स्टेट कापी यहाँ पेश की जा रही है जिनका मफ़हूम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ातमुन्नबीय्यीन (यानि जिन पर नबुव्वत ख़त्म हुई और अब उनके बाद कोई नबी नहीं आऐगा) होने का इन्कार है। अन्डर लाइन इबारत के अलफ़ाज़ (सफ़ा 13) यह हैं।

"अगर बिल फ़र्ज़ आपके ज़माने में भी कहीं और कोई नबी हो जब भी आपका ख़ातिम होना बदसतूर बाक़ी रहता है"

इसी किताब के सफ़ा 24 के अलफ़ाज़ हैं।

"अगर बिल फ़र्ज़ ज़मानए नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी ख़ातमियत मुहम्मदी में कुछ फ़र्क़ न आएगा"

बिल्कुल साफ़-2 इन अलफ़ाज़ से ज़ाहिर है कि हुज़ूर

सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम के ज़माने या बाद ज़माने के नबी पैदा हो सकता है क्यूंकि मौ. क़ासिम नानूतवी की नज़र से इससे हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ख़ातमुन्नबीय्यीन होने पर फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।

अपने ईमान से यह बात कहियेगा कि इन अलफ़ाज़ में साफ़-2 हुज़ूर के ज़माने या ज़माने के बाद में नबी के पैदा होने का इक़रार है या नहीं यानी यह अलफ़ाज़ यह बता रहे हैं कि नबी पैदा हो सकता है, दूसरे लफ़्ज़ों में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम के ख़ातमुन्नबीय्यीन होने का साफ़ इन्कार है या नहीं यानी नुबुव्वत ख़त्म नहीं हुई है और अभी नबी पैदा हो सकता है और इस बात से हुज़ूर के आख़री नबी होने पर कोई फ़र्क़ न आएगा।

याद रखिये हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम के ख़ातमुन्नबीय्यीन होने का इन्कार कुफ़्र है। यह बात .कुरआन और हदीस से साबित और तमाम मुसलमानों का शुरू से अक़ीदा है कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम तमाम नबीयों में आख़िर में तशरीफ़ लाए और आप पर नुबुव्वत ख़त्म हो गई और अब कोई नया नबी नहीं आएगा और अगर कोई नबी होने का दावा करे वह काफ़िर है जो उसे नबी माने वह भी काफ़िर है हत्ताकि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम के ख़ातमुन्नबीय्यीन होने में शक करे। वह भी काफ़िर है। फ़ोटो स्टेट किताब के आख़िर में देखें।

<u>नोट</u> : इस मसअले को तफ़सील से समझने के लिए आलाहज़रत की किताब "ख़त्मे नुबुव्वत" देखें

6. मौ. इसमाईल देहलवी ने अपनी किताब तक़वीयतुल ईमान के निम्न सफ़ों पर निम्न बातें लिखी हैं :

1. हर मख़लूक़ छोटा हो या बड़ा वह अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़्यादा ज़लील है।(तक़वीयतुल ईमान सफ़ा 13)

2. जिस का नाम मुहम्मद या अली है वह किसी चीज़ का मुख़्तार नहीं। (तक़्वीयतुल ईमान सफ़ा 28)

3. हुज़ूर अलैहिस्सलाम गंवार की बात सुनकर मारे दहशत के बे-हवास हो गए। (तक़्वीयतुल ईमान सफ़ा 39)

4. इन्सान आपस में भाई-2 हैं जो बड़ा बुज़ुर्ग हो वह बड़ा भाई है, सो उसकी बड़े भाई की सी ताज़ीम की जाए।

(तक़्वीयतुल ईमान सफ़ा 42)

5. यानी मैं (हुज़ूर के लिए) भी एक दिन मर कर मिट्टी में मिलने वाला हूँ। (तक़्वीयतुल ईमान सफ़ा 42)

यह बातें और इनकी फ़ोटो स्टेट आपके सामने हैं देखिए हर मख़्लूक़ में नबी औलिया और बुज़ुर्गाने दीन सभी होते हैं लिहाज़ा यह लफ़्ज़ सभी पर पड़ते हैं कि हर मख़्लूक़ अल्लाह की शान के आगे चमार से ज़्यादा ज़लील है। अल्लाह को इन्सान कितना प्यारा है। अल्लाह पाक ने वली और नबी को कितनी शान से .कुरआन में याद किया है और फिर हुज़ूरे अक़्दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम तो अल्लाह के महबूब और हबीब हैं तो ऐसी बात लिखना हर नेक इन्सान की तौहीन हुई कि नहीं।

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हज़रत अ़ली रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु का नाम लिखकर लिख दिया कि यह किसी चीज़ के मालिक -ओ- मुख़्तार नहीं ज़बकि मुसलमान का ईमान है कि अल्लाह तआ़ला ने वलियों और नबियों को क्या क्या इख़्तेयारात दिए हैं और फिर हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इख़्तेयारात का क्या कहना।

एक गंवार की बात पर हुज़ूर को बेहवास लिखना हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की खुली तौहीन है।

हर बुज़ुर्ग की ताज़ीम सिर्फ़ इतनी बताई जा रही है कि

उसे बड़े भाई का दर्जा दो बस इससे आगे नहीं और आप ख़ूब जानते हैं कि अल्लाह पाक ने हुज़ूर की कितनी ताज़ीम करने का सख़्ती से हुक्म दिया है यहाँ तक कि अल्लाह व रसूल की ताज़ीम को ऐन ईमान बताया है। आगे आने वाले सफ़हात में आप हुज़ूर की ताज़ीम का सुबूत .क़ुरआन की आयात से पढ़ेंगे।

हुज़ूर की तरफ़ निसबत करके लिख दिया कि मैं एक दिन मर कर मिट्टी में मिल जाऊँगा, क्या हुज़ूर के लिये 'मिट्टी में मिल जाना' कहना उनकी खुली तौहीन नहीं है जबकि अल्लाह पाक ने नबी के जिस्म को ज़मीन के लिये हराम फ़रमा दिया यानी वह कभी मिट्टी न होंगें।

इसी तरह से हदीसों से .साबित कि शहीद, हाफ़िज़े बाअमल और कसरत से दुरूद पढ़ने वाले को ज़मीन नहीं खाती तो जो तमाम इन्सानों और नबियों के सरदार है क्या वह मर कर मिट्टी हो जायेंगे हरगिज़ हरगिज़ नहीं। अब आप ख़ुद ही इन्साफ़ से फ़ैसला करें कि यह सब बातें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तौहीन हैं या नहीं।

<u>**नोट**</u> : इन मसाइल को समझने के लिए .क़ुरआन की वो आयात देखें जिनमें हुज़ूरे अक़दस की ताज़ीम आई है; उन अहादीस को देखें जो सरकार की ताज़ीम के अहकाम से भरी हुई हैं बल्कि हज़ारों लाखों उन किताबों को पढ़ें जिनमें सरकार की ताज़ीम का हुक्म है। उन करोड़ों नातों को सुनें जो हर दम कहीं न कहीं आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तारीफ़ें कर रहीं हैं बल्कि उन गुनाहगारों के दिलों से 'ताज़ीम का सलीक़ा सीखें जो अपने गुनाहों की मग़फ़िरत की आस लगाए बैठें सिर्फ़ उन्हीं की ज़ात से और उन नेकोकारों से पूछें जो अपने आमाल पर फ़ख़्र न कर के सिर्फ़ उन्हीं की शफ़ाअत का मुँह तकते हैं।

7. <u>फ़तावा रशीदिया के चन्द सवाल व उनके जवाब</u> :-

1.सवाल : हिन्दू त्योहार होली या दीवाली में अपने उस्ताद या हाकिम या नौकर की खीलें या पूरी या कुछ और खाना बतौर तोहफ़ा भेजते हैं। इन चीज़ों का लेना और खाना उस्ताद व हाकिम व नौकर को दुरुस्त है या नहीं।

जवाब : दुरुस्त है। [फ़तावा रशीदया (सफ़ा 488)]

2. सवाल : हिन्दू जो प्याऊ पानी के लगाते हैं सूदी रुपया सर्फ़ करके, मुसलमानों को उसका पानी पीना दुरुस्त है या नहीं।

जवाब : उस प्याऊ से पानी पीना मुज़ाएका नहीं है।

[फ़तावा रशीदया (सफ़ा 498)]

3. सवाल : मुहर्रम में अशरा वग़ैरा के रोज़ शहादत बयान करना मय अशआर बरिवायते सहीया या ज़ईफ़ा भी, सबील लगाना और चंदा देना और शरबत व दूध बच्चों को पिलाना दुरुस्त है या नहीं।

जवाब : मुहर्रम में ज़िक्र-ए-शहादत हसनैन अलैहिस्सलाम करना अगरचे बरिवायते सहीया हो या सबील लगाना शरबत पिलाना या चंदा सबील और शरबत में देना या दूध पिलाना सब नादुरुस्त और तशबीह रवाफ़िज की वजह से हराम है।

(फ़तावा रशीदया सफ़ा 148)

4. सवाल : जिस उर्स में सिर्फ़ .कुरआन शरीफ़ पढ़ा जावे और तक़सीम शीरीनी हो शरीक होना जाएज़ है या नहीं।

जवाब : किसी उर्स और मौलूद में शरीक होना दुरुस्त नहीं और कोई सा उर्स और मौलूद दुरुस्त नहीं है।

(फ़तावा रशीदया सफ़ा 147)

यह सवाल-जवाब और उनकी फ़ोटो स्टेट आपके सामने है बिल्कुल साफ़ ज़ाहिर है कि मौ. रशीद अहमद गंगोही की नज़र में होली-दीवाली की खीलें और पूरी खाना दुरुस्त मगर मुहर्रम की सबील, शरबत और दूध पीना हराम है।

मौलूद में कितनी भी सही रिवायत बयान हों वह मौ. रशीद अहमद गंगोही की नज़र में हराम है यानी यूँ कहिए कि परसाद तो जाइज़ और नियाज़ हराम है। पाक कमाई का पाक ओ साफ़ खाना .कुरआन की आयात पढ़ते ही नापाक और हराम हो गया और बुतों के आगे रखने पर भी जाएज़। लाहौला वला .कुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अ़लिइयिल अ़ज़ीम। ज़िक्रे शहादत हज़रत इमाम आली मक़ाम का हराम है। उर्स में सिर्फ़ .कुरआन पढ़कर शीरीनी तक़सीम करना या किसी भी क़िस्म का उर्स मौ. रशीद की नज़र में दुरुस्त नहीं है।

अपने ईमान से कहिएगा कि यह सब बातें इस्लाम की जड़ों को खोद रही हैं या नहीं। यह कौन से ईमान का जुज़ है कि मौलूद हराम, उर्स हराम ज़िक्र शहादत इमाम हुसैन हराम और होली, दीवाली की पूरी जाएज़, हिन्दू का सूदी पैसे का प्याऊ का पानी पीना दुरुस्त। ज़्यादा कहने की ज़ुरूरत नहीं क्यूँ कि बात एक दम साफ़ है।

फ़तावा रशीदया की फ़ोटो स्टेट किताब के आख़िर में देखें।

<u>**नोट**</u> : इन मसाइल को समझने के लिए निम्न किताबें देखें :-

1. इस्बातुल मौलिदे वल क़याम (मौलाना नक़ी अली ख़ाँ अ़लैहिर्रहमा) 2. फ़ातहा का सुबूत 3. ग्यारहवीं शरीफ़ (मौलाना शाह सलामतुल्लाह रामपुरी)

8. मौ. अशरफ़ अली थानवी के मलफ़ूज़ात पर मुबनी 'अलइमदाद' नामी एक पर्चा थाना भवन से शाय हुआ करता था उसके माह सफ़र हि. 1336 के शुमारे में मौ. अशरफ़ अली थानवी के एक मुरीद का हाल और उसका जवाब इस तरह नक़ल किया गया है :

मुरीद सादिक़ ख़्वाब में कलमा पढ़ना चाहता है लेकिन "मुहम्मदुर्रसुलुल्लाह" की बजाए "अशरफ़ अली रसूलुल्लाह"

पढ़ता है। ग़लती का एहसास करके सही पढ़ना चाहता है मगर ज़बान से वही कलमात निकलते हैं। इतने में नींद से बेदार हो जाता है और बेदारी की हालत में दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहता है मगर ज़ुबान से "अल्लाहुम्मा सय्येदिना व नबीय्येना व मौलाना अशरफ़ अली" निकलता है।

मुरीद सादिक़ अपनी यह कैफ़ियत और हाल मुरशिद की ख़िदमत में लिखता है। साफ़ और सीधी बात थी कि उसे इन कुफ़्री कलामात से तौबा की तलक़ीन की जाती मगर इस ज़ुल्म की फ़रयाद किसके सामने की जाये कि मौ. थानवी उसे जवाब देते हैं कि "इस वाक़ये में तसल्ली है कि जिसकी तरफ़ तुम रुजु करते हो वह बेऔन्हेही तआला मुत्तबे सुन्नत के पैरौं है।"

अब आप ख़ुद फ़ैसला करें कि मौ. थानवी का यह जवाब किस ज़ेहनियत को दर्शाता है कि मुरीद सादिक़ से तौबा कराने के बजाए उसे सही बताया जा रहा है। मुरीद सादिक़ का सवाल और मौ. थानवी का जवाब फ़ोटो स्टेट कापी की शक्ल में किताब के आख़िर में देखें।

क्या यह सिर्फ़ मौलवीयों की लड़ाई है

कुछ लोग आपको ऐसे मिलेंगे जो कहेगें कि मियाँ क्यूँ इन झगड़ों में पड़ते हो यह सब तो मौलवीयों की लड़ाई है। बाज़ कहेंगे चार इमामों के इख़्तेलाफ़ात हैं। याद रखिए ऐसा हरगिज़ हरगिज़ नहीं है चारों इमाम (हज़रत इमामे आज़म इमाम अबू हनीफ़ा, हज़रत इमाम शाफ़ई, हज़रत इमाम हम्बल और हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि तआला अलैहुम) हक़ पर हैं और इनके आपसी इख़्तिलाफ़ अक़ाइद पर हरगिज़ नहीं इन चारों की नज़र में अल्लाह रसूल की तौहीन करने वाला काफ़िर व मुरतद है यह लोग बेवजह किसी पर कुफ़्र और

शिर्क नहीं लगाते। इन्होंने हमेशा हक़ फ़रमाया। यह चारों अहले सुन्नत व जमात के इमाम हैं।

कुछ लोग यह कहते हैं कि मियाँ अपनी दुकाने चमकाने को मौलवीयों ने यह झगड़े पैदा कर दिए हैं इनमें मत पड़ा करो। कुछ लोग आपको इस तरह बहकायेंगे कि देखो मज़ारात पर चन्दा शीरीनी वग़ैरा या नियाज़ के हलवे मांडे का झगड़ा है या यह कहेंगे कि मौलवियों ने आपस में लड़वाने को ये तरह तरह की बातें पैदा कर दी हैं। आप उनसे पूछिए कि :-

झगड़ा किस बात का है

ख़ूब याद रखिए अस्ल इख़्तेलाफ है मुसलमान और मुरतद में फ़र्क़ का। अहले सुन्नत वल जमाअत ही सही रास्ते पर यानी अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के रास्ते पर है। हम कहते हैं कि वहाबी देवबन्दीयों ने अल्लाह और उसके रसूल की शान में गुस्ताख़ियाँ कीं और कर रहे हैं जिसका सुबूत उनकी किताबें हैं। वह शख़्स मुसलमान है जो अल्लाह और रसूल की शान में गुस्ताख़ी को कुफ़्र और गुस्ताख़ी करने वाले को काफ़िर जानता है। बहुत से लोग ऐसे मिलेंगे जो कहेगें कि हम ऐसा नहीं करते और हमारे ऊपर इलज़ाम है तो उनको आप इनकी किताबें या इस किताब में चन्द हवालों की फ़ोटोस्टेट कापी दिखा सकते हैं और फिर उनसे पूछीए कि अब क्या कहते हो। अब अगर वह हीले बहाने बनाए तो समझ लीजिए कि उसके दिल में ख़लिश है और फिर भी वह इन इबारतों को कुफ़्र न बताए या ऐसा लिखने वाले को काफ़िर न जाने तो वह मुरतद है और वही है जिसके बारे में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पहले ही फ़रमा चुके हैं।

यहाँ एक बात मैं और कहना चाहूँगा उन लोगों से जो यह कहते हैं कि यह सब झूठ है और ऐसा कुछ भी नहीं लिखा गया, वह बात यह है कि दो बातें हो सकतीं है या तो यह सच है या झूट है यानी या तो ऐसा लिखा गया या नहीं। अगर सच है तो इन बातों से तौबा करो कि यह हुज़ूर की शान में खुली तौहीन हैं और अगर यह बातें झूट हैं यानी सुन्नियों ने अपनी तरफ़ से यह बातें गढ़ दीं है और देवबन्दियों का नाम लेकर छाप दीं हैं तो फिर तो यह बहुत हीं ज़लील काम किया जिसने भी किया लेकिन अफ़सोस तो यह है कि आज भी ये किताबें छप रहीं हैं और बिक रहीं हैं और बिल फ़र्ज़ ऐसा है भी तो सुन्नी मुसलमान कहाँ रहे ऐसा करने से तो फिर देवबन्दी वहाबी लोग हम सुन्नियों के पीछे नमाज़ क्यूँ पढ़ते हैं उनसे निकाह वग़ैरा क्यूँ करते हैं।

सुन्नीयों की अफ़सोसनाक बदआमालियाँ

होता यह है कि जब भी इख़्तेलाफ़ का ज़िक्र होता है तो यह लोग अस्ल मुद्दे पर बात न करके आपसे ज़्यादातर निम्न मुद्दों पर बात करते हैं :-

1. सिर्फ़ अल्लाह से मांगों, वसीला कोई चीज़ नहीं, मज़ारात पर न जाओ।
2. नियाज़-नज़र, फ़ातहा, तीजा, चालीसवाँ, बरसी वग़ैरह।
3. मुहर्रमदारी
4. अज़ाने क़ब्र, मीलाद शरीफ़।
5. सलातो सलाम और नामे अक़दस पर अंगूठे चूमना।
6. बारह रबीउलअव्वल पर रोशनी वग़ैरह।
7. खुतबे की अज़ान मस्जिद से बाहर होना, तकबीर के वक़्त खड़े होना।
8. अज़ान के बाद सलात पढ़ना।
9. उर्स वग़ैरह

यह सब बातें अस्ल में जाइज़ हैं मगर इनके करने का तरीक़ा कुछ ऐसा हो चुका है कि वह वाक़ई ग़लत हैं और यह हमारी बदअमली हैं नाकि शिर्क। यह सब बातें जाइज़ हैं इसका सुबूत इस छोटी सी किताब में देना मुश्किल है इसके लिए आप दीगर किताबों का मुताला करें या किसी आलिम से राबता क़ायम करें। यहाँ मैं सिर्फ़ यह कहना चाहता हूँ कि अवाम की बदआमालियाँ देखकर आप कोई अक़ीदा क़ायम न करें और हक़ क्या है यह जानने की कोशिश करें और पहले यह बात तय करें कि वहाबी, देवबन्दी वग़ैरा वाक़ई गुस्ताख़े रसूल हैं या नहीं और जब यह बात तय हो जाएगी तो आगे बढ़ना शायद .ज़ुरूरी न होगा और अगर होगा भी तो अब आइये इस मुद्दे पर बहस कीजिए और .क़ुरआन और हदीस की रोशनी में हक़ और बातिल को पहचानने की कोशिश कीजिए। अल्लाह रसूल आपकी मदद फ़रमाएंगे।

सुन्नीयों की बदआमालियों के तज़किरे से पहले हम आपको बिदअत की .तारीफ़ बताना चाहेंगे क्यूँकि वहाबियों के यहाँ बिदअत का बहुत ख़र्चा है, बात बात पर वह यह कहते हैं कि यह बिदअत है वह बिदअत है।

बिदअत का बयान

लुग़त में नई चीज़ को बिदअत कहते हैं और शरा की बोली में बिदअत वह चीज़ है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के ज़माने के बाद हुई। हज़रते मुल्ला अली क़ारी रह़मतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं कि इमाम नौवी रह़मतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया ऐसी चीज़ जिसकी मिसाल पहले ज़माने में न हो (लुग़त में) उसको बिदअत कहते है और शरा में बिदअत यह है कि किसी ऐसी चीज़ का ईजाद करना जो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़ाहिरी ज़माने में न थी। (मिरक़ात जिल्द अव्वल)

बिदअत हस्ना भी होती है और सइय्या भी होती है। हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी किताब 'अशिअतुल्लमआत' जिल्द अव्वल में फ़रमाते हैं जो बिदअत कि हुज़ूर की सुन्नत के उसूल व क़वाइद के मुताबिक़ है और उसी पर क़ियास की गई है उसको बिदअते हसना कहते हैं और जो बिदअत कि सुन्नत के मुख़ालिफ़ हो उसे बिदअते गुमराही कहते हैं।

और सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स इस्लाम में किसी अच्छे तरीक़े को राइज करेगा तो उसको अपने राइज करने का सवाब मिलेगा और उन लोगों के अमल करने का भी जो उसके बाद उस तरीक़े पर अमल करते रहेंगे और अमल करने वालों के सवाब में कोई कमी भी न होगी और जो इस्लाम में किसी बुरे तरीक़े को राइज करेगा तो उस शख़्स पर उसके राइज करने का भी गुनाह होगा और उन लोगों के अमल करने का भी गुनाह होगा जो उसके बाद उसके तरीक़े पर अमल करते रहेंगे और अमल करने वाले के गुनाह में कोई कमी न होगी। (मुस्लिम शरीफ़ व मिशकात शरीफ़)

इस हदीस शरीफ़ से भी मालूम हुआ कि बिदअत हस्ना भी होती है और सइय्या भी। बिदअत हस्ना का इन्कार करना इस हदीस का इन्कार करना है। बिदअतों की कुल पाँच क़िस्में हैं। 1. बिदअते वाजिबा 2. बिदअते मुस्तहब्बा 3. बिदअते मुहर्रमा 4. बिदअते मकरूहा 5. बिदअते मुबाह। हम यहाँ सिर्फ़ बिदअत की क़िस्में बता रहे हैं उन पर दलाइल नहीं पेश कर रहे दलाइल के लिए बड़ी किताबों को देखें या किसी सुन्नी आलिम से दरयाफ़्त करें।

1. <u>बिदअते वाजिबा</u> : वह नई चीज़ जो शरअन मना न हो और उसके छोड़ने से दीन का नुक़सान हो जैसे क़ुरआन व

हदीस समझने के लिए इल्मे नहव का सीखना और गुमराह फ़िरक़ों पर रद्द के लिए दलाइल क़ाइम करना।

2. बिदअते मुस्तहब्बा : वह नई चीज़ जो शरीअत में मना न हो और उसको आम मुसलमान कारे सवाब जानते हों। उसका करने वाला सवाब पाएगा और न करने वाला गुनहगार नहीं होगा जैसे मदरसों की तामीर करना और अज़ान के बाद सलात पुकारना। जैसा कि दुर्रे मुख़्तार बाबुल अज़ान में है कि अज़ान के बाद "अस्सलातु वस्सलामु अलैका या रसूलल्लाह" पढ़ना माहे रबीउल आख़िर सन् 781 हिजरी में जारी हुआ और वह बिदअते हसना है।

3. बिदअते मुहर्रमा : वह नई चीज़ जिससे दीन को नुक़सान पहुँचे जैसे अहले सुन्नत व जमाअत के ख़िलाफ़ नए अक़ीदे वालों के मज़हब।

4. बिदअते मकरूहा : वह नई चीज़ जिससे कोई सुन्नत छूट जाए जैसे जुमा व ईदैन व ख़ुतबा अरबी के इलावा किसी दूसरी ज़बान में पढ़ना और ख़ुतबे की अज़ान मस्जिद के अन्दर देना।

5. बिदअते मुबाह : वह नई चीज़ जिसके करने न करने पर सवाब व अज़ाब न हो जैसे अच्छे अच्छे खाने खाना और रेलगाड़ी वग़ैरा में सफ़र करना।

बिदअतों का रिवाज

अब बिदअते हस्ना और बिदअते मुबाह जो मुसलमानों में राइज है उनकी थोड़ी तफ़सील मुलाहिज़ा फ़रमायें

1. मुसलमान बच्चों को ईमाने मुजमल और ईमाने मुफ़स्सल याद कराया जाता है। ईमान की यह दो क़िस्में और उनके यह दोनों नाम बिदअत हैं।

2. कलिमों की तादाद उनकी तरतीब और उनके नाम सब बिदअत हैं।

3. .कुरआन शरीफ़ का 30 पारे बनाना, उनमें रुकू काइम करना, उस पर ज़बर, ज़ेर वग़ैरा लगाना और आयतों का नम्बर लगाना सब बिदअत हैं।

4. हदीस को किताबी शक्ल में जमा करना, हदीस की किस्में बनाना कि यह सहीह है, यह हसन है, यह ज़ईफ़ है वग़ैरा-2 और फिर उनके अहकाम मुक़र्रर करना सब बिदअत हैं।

5. उसूले हदीस उसूले फ़िक़्ह के सारे क़ाइदे क़ानून बिदअत है।

6. फ़िक़्ह और इल्मे कलाम जिन पर आजकल दीन का दारोमदार है यह भी शुरू से आख़िर तक बिदअत हैं।

7. नमाज़ में ज़बान से नियात करना बिदअत और रमज़ान में बीस रकअत तरावीह पर हमेशगी करना बिदअत है जैसा कि ख़ुद हज़रते उमर रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि यह बेहतरीन बिदअत है।

8. रोज़ा की व इफ़्तार की नियत ज़बान से करना बिदअत है।

9. ज़कात में मौजूदा सिक्का अदा करना और रुपया पैसा से फ़ितरा निकालना सब बिदअत है। .

10. जहाज़ों, मोटरों वग़ैरह के ज़रिए हज करना और मोटरों में अराफ़ात जाना सब बिदअत है।

11. शरीअत के चार तरीक़े हनफ़ी, शाफ़ई, मालिकी और हंबली। इसी तरह चार सिलसिले क़ादिरी, चिश्ती, नक़्शबन्दी और सोहरवर्दी सब बिदअत है और इनके वज़ीफ़े, मुराक़बे, चिल्ले वग़ैरा भी बिदअत हैं।

12. हवाई जहाज़, रेल, मोटर, टेलीफ़ोन, रेडियो, लाउडस्पीकर, कम्प्यूटर, फ़ोटो स्टेट, फ़ैक्स और इन्टरनेट सब बिदअत हैं।

इसी तरह हज़ारों बिदअत हम हर रोज़ सुबह शाम करते हैं और सब ही करते हैं न इन्हें कोई बुरा कहता है न अच्छा तो फिर मीलाद, फ़ातिहा, सलात, खड़े होकर सलाम, नियाज़ व नज़्र, रबीउल अव्वल शरीफ़ पर चराग़ाँ और उर्स

जैसी बिदअते हस्ना को ही यह देवबन्दी और वहाबी क्यूँ रोकते हैं क्या इससे यह साफ़ ज़ाहिर नहीं होता कि इन बेदीन फ़िरक़ों को उन्हीं बिदअते हस्ना से चिढ़ है जिनमें सय्यदे आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम या बुज़ुर्गाने दीन की ताज़ीम व तारीफ़ हो।

जाइज़ बिदअतों के बाद आइये हम आपकी आसानी के लिए उन बदआमालियों का तज़किरा करें जो आम हो चुकी हैं और जो मुख़ालफ़ीन को मौक़ा देती हैं हमें उलझाने और बहकाने का। अहले सुन्नत वल जमात के उलमाए किराम हमेशा से उन्हें नजाइज़ बताते आए हैं जो वाक़ई ग़लत हैं, उनमें से चन्द यह हैं।

(1) मज़ार पर हाज़री देते वक़्त अक्सर लोग हाज़री के आदाब का ख़्याल नहीं रखते और अपने अक़ीदत के इज़हार में हद से तजावुज़ कर जाते हैं। कोई मज़ार के बिल्कुल क़रीब जाकर अपना सिर, आखें, माथा वग़ैरह रगड़ कर हद से ज़्यादा अक़ीदत का इज़हार करता है जबकि मज़ार शरीफ़ पर हाज़री देते वक़्त कम से कम चार हाथ दूर रहने का हुक्म है। हाँ हाथ लगाकर मज़ार शरीफ़ को बोसा देना बिला कराहत जाइज़ है --- और उनके वसीले से मांगना बेशक जाइज़ और .कुरआन और हदीस से साबित है बल्कि जिसको जो मिला वसीले से ही मिला, किसी ज़रिए से मिला, बग़ैर वसीले से किसी को कुछ नहीं मिलता। हाँ हर चीज़ का देने वाला अल्लाह और सिर्फ़ अल्लाह ही है अगर कोई यह अक़ीदा रखे कि उसे अल्लाह के सिवा किसी और ने दिया तो यह शिर्क है। हाँ वसीला और ज़रिया भी अल्लाह ही का पैदा किया हुआ है और अल्लाह हर शख़्स को वसीले से ही देता है।

(2) कुछ लोग मज़ार शरीफ़ पर हाज़री के वक़्त इतनी ज़्यादा

अक़ीदत दिखाते हैं कि मज़ार शरीफ़ के पास सजदे की सी हालत में हो जाते हैं हालांकि यह सजदा नहीं है, यहाँ सजदे की शरायत नहीं पाई जातीं मगर अवाम पर उसका असर ग़लत होगा और ऐसा करने का हुक्म भी नहीं, और अगर वाक़ई कोई ताज़ीमी सजदा करता है तो यह हराम है और अगर यह सजदा इबादतन यानी इबादत की नियत से करता है तो यह अहले सुन्नत वल जमाअत की नज़र में मुशरिक और काफ़िर है। मगर लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ने वाले से ऐसी उम्मीद नहीं कि वह ग़ैरुल्लाह को इबादत की नियत से सजदा करे अगर करता है तो यह कलिमाए अव्वल का इन्कार है और ऐसा शख़्स इस्लाम से ख़ारिज है।

(3) सिवाए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रौज़ए मुबारक के औरतों की मज़ार पर बढ़ती तादाद बहुत बुरा अमल है। इसमें फ़ितने का बहुत ज़्यादा अन्देशा है जब मस्जिद में औरतों के जाने का हुक्म नहीं तो मज़ार पर क्यूं कर होगा --- और आज हम देख रहे हैं कि बाज़ जगह औरतें मर्दों से आगे आगे हैं इस काम में जबकि औरतों का मज़ारात पर जाना सख़्त मना है।

(4) मज़ारात के मुजाविरों में देखा गया है कि आजकल ज़्यादातर इस ताक में रहते हैं कि कब कोई नज़राना देने वाला फंसे। मुजाविरों का ध्यान मज़ार की ख़िदमत करके साहिब-ए-मज़ार से फ़ैज़ हासिल करने की तरफ़ कम लगकर लोगों की जेब और फ़ातिहा की शीरीनी पर ज़्यादा रहता है। बाज़ जगह देखा गया है कि अगर मुजाविरों को नज़राना न मिले तो वह तरह-2 से डरा कर उससे रक़म ऐंठने की कोशिश करते हैं। बाज़ जगह नज़राना न देने पर कोसने और काम न होने की धमकियाँ भी सुनना पड़ती हैं। यह सब बातें इस क़द्र आम हो गई हैं कि लिखना शायद ज़रूरी भी नहीं

है। बहुत सख़्त गुनाहगार हैं वो लोग जो चन्दे का पैसा उस मद में नहीं लगाते जिस मद के लिए चन्दा किया गया उससे वह अपना बैंक बैलेंस बढ़ाते हैं यहाँ तक कि देखा जा रहा है कि ज़कात के नाम पर लेकर लोग उसे अपने ज़ाती ख़र्च में लाते हैं यानी उस ग़रीब का हक़ मारते हैं जिसका हक़ अल्लाह तआला ने .कुरआन में इरशाद फ़रमाया और इसे फ़र्ज़ फ़रमाया। अल्लाह तआला मुसलमानों को इस बला से बचाए।

(5) तीजा, चालीसवाँ, बरसी, फ़ातहा बेशक जाइज़ हैं मगर नज़र नियाज़ का तरीक़ा कुछ ऐसा हो गया है कि उसका एक अहम मक़सद फ़रामोश होता जा रहा है और वह मक़सद है ग़रीब का पेट भरना, उसे एक वक़्त की रोटी की फ़िक्र से आज़ाद करना। आज हम नियाज़ में अपने दोस्त अहबाब और रिश्तेदारों को बड़ी इज़्ज़त से खिलाते हैं और ग़रीब को या तो बुलाते नहीं या उसे वह इज़्ज़त नहीं देते। --- बाज़ जगह देखा गया है कि नियाज़ वाले दिन क़व्वाली और गाने होते हैं। बाज़ वक़्त तीजा, चालीसवाँ, फ़ातिहा वग़ैरह हम रसमन करते हैं कि कहीं लोग यह न कहें कि लो मियाँ तीजा, चालीसवाँ या बरसी नहीं की। अस्ल मक़सद ईसाले सवाब पर हम ध्यान नहीं देते बस किसी तरह निबट जाना चाहिए। बाज़ वक़्त फ़ातहा देने वाले सही .कुरआन नहीं पढ़ते और इससे अस्ल मक़सद फ़रामोश होता है। याद रखिए यह सब बुज़ुर्गों ने मरने वाले को ईसाले सवाब के वास्ते शुरू किया था और वह ही न हुआ तो क्या फ़ायदा। यह सब इसाले सवाब के जाइज़ तरीक़े हैं जो जाएज़ हैं बिदअत नहीं। और जो इसमें ख़ुराफ़ात हों उनसे बचना चाहिए। ---- बाज़ जगह तीजा चालीसवाँ तीजा चालीसवाँ न होकर एक दावत बन जाता है जो क़तई ग़लत है यह दावत नहीं इससे बचना बहुत .ज़ुरूरी है।

(6) मुहर्रम के दिनों में जो नाजाइज़ बातें निकाल रखी हैं अल्लाह की पनाह शायद ही किसी महीने में होती हों। तख़्त ताज़ियों का निकलना, उनके साथ ढोल बाजा होना, मातम करना, मसनूई करबला बनाना ताज़िया दफ़न करना, नौ तारीख़ को रात भर औरतों व मर्दों का घूम-2 कर तख़्त देखना, रोटी वग़ैरह लुटा कर रिज़्क़ की बेअदबी, मसनूई करबला में वी. सी.आर., छोटा सिनेमा, मेला, औरतों और मर्दों की ख़लत मिलत यह सब बातें सख़्त हराम हैं: भाइयों सोचने का मुक़ाम है कि इमाम आली मक़ाम हज़रत इमामे हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की याद मनाने का क्या यही तरीक़ा है कि मालूम ही नहीं होता कि ग़म मना रहे हो या ख़ुशी। इस बारे में बारहा उल्माए किराम ने लिखा है आप दीगर किताबों से मालूम कर सकते हैं। अलबत्ता मुहर्रम में ज़िक्रे शहादत का करना व सुनना, नियाज़ नज़र करना, सबील लगना, ग़रीबों को उनके नाम का खिलाना और नियाज़ को ग़नी को भी चखना जाइज़ हलाल और बाइस-ए-सवाब है।

(7) बारह रबीउलअव्वल शरीफ़ में रोशनी करना जुलूस निकालना बेशक जाइज़ है मगर याद रखिए यह अल्लाह के रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का जुलूस-ए-मुहम्मदी है इसका एहतराम बहुत ज़ुरूरी है और एहतराम का सही तरीक़ा यही है कि इसमें कोई ग़ैर शरई बात न की जाए। देखा यह गया है कि लोग जुलूस के साथ-2 घंटो चलते हैं और बहुत जोश दिखाते हैं मगर नमाज़ क़ज़ा कर देते हैं क्या यही तरीक़ा है रसूल का दामन, ग़ौस का दामन थामें रहने का। लिबास पर लोग ध्यान नहीं देते क्या सिर्फ़ एक दिन के लिए हम अंग्रेज़ी लिबास नहीं छोड़ सकते, सर पर टोपी नहीं रख सकते। बहुत लोगों को देखा गया है कि वह इस पाक जुलूस को आज की नापाक राजनीती से जोड़ देते हैं गर्ज़ यह

है कि जुलूस का एहतराम करें ग़ैर शरई बात न करें। रबीउल अव्वल शरीफ़ में रोशनी करना, मीलाद पढ़ना, नियाज़ नज़र करना, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर लाखों, अरबों बेगिनती सलाम व दुरूद पढ़ना, नात-ए-पाक पढ़ना यह सब बाइस-ए-बरकत व सवाब है।

(8) यूँही किसी बुज़ुर्ग के उर्स में शरीक होते वक़्त ख़ास ध्यान यह रहे कि ग़ैर शरई बात से दूर रहें यही अक़ीदत है उन बुज़ुर्ग से और यही हुक्म है और तभी फ़ैज़ हासिल होगा। उर्स में ग़ैरशरई क़व्वाली, नाच रंग, फ़ोटो खिचाना, वी. सी.आर. देखना सख़्त हराम है बल्कि उर्स के अलावा भी हराम हैं।

(9) ताक़ पर फूल चढ़ाना, मन्नते मानना यह सब बेअस्ल, वाहियात है और हराम है।

(10) नमाज़, रोज़ा वग़ैरह फ़र्ज़ को तर्क करके मज़ारात पर घूमते रहना, नियाज़ वग़ैरह करते रहना मुख़ालफ़ीन को यह कहने का मौक़ा देती हैं कि यह अल्लाह से न मांगकर ग़ैरुल्लाह से मांगते हैं। बेशक अल्लाह के वली अल्लाह के हुक्म और उसकी दी हुई ताक़त से मदद फ़रमाते हैं और बिगड़े काम बनते हैं, मगर जब हम अपनी बदआमालियों से अल्लाह और उसके रसूल को नाराज़ किए बैठे हैं तो क्यूँ हम हक़दार होंगें अल्लाह के वली से फ़ैज़ हासिल करने के। याद रखिए जब तक फ़र्ज़ ज़िम्मे होता है नफ़्ल मक़्बूल नहीं होता।

(11) आख़िर में एक बात यह है कि हमारी इल्मे दीन से बेरुख़ी हमें इतना कमज़ोर कर देती है कि हम मुख़ालफ़ीन की बातों का माक़ूल जवाब नहीं दे पाते और सिर्फ़ सुनते रहते हैं और बहक जाते हैं, परेशान हो जाते हैं, और ख़ुदा बचाए रखे कभी-2 ईमान गवाँ बैठते हैं --- तो बहुत ज़ुरूरी है कम से कम इतना इल्म सीखना कि अपना अक़ीदा बचा सकें

और अपनी इबादत को सही और क़ाबिल-ए-.क़बूल बनाएं। ख़ूब अच्छी तरह याद रखिए बक़द्रे ज़ुरूरत (यानि जितना ज़ुरूरत है) इल्मी दीन सीखना फ़र्ज़ है। हमें मालूम न था यह उज़्र काम न आएगा यानी हश्र के दिन यह कहने से काम नहीं चलेगा कि हमे तो मालूम ही न था।

बहुत मुख़्तसर तौर पर हमने यहाँ पर सुन्नियों की बदआमालियों और इख़्तलाफ़ी मसाइल पर रौशनी डाली मगर इस मुख़्तसर किताब में मुख़्तसर तक़रीर से शायद बात समझ न आए इस लिए हम इन मसाइल पर अहले सुन्नत वल जमाअत के अक़ीदे को और अच्छी तरह समझाने के लिए कुछ किताबों का हवाला दे रहे हैं जिनमें इन मसाइल को .क़ुरआन और हदीस की रोशनी में समझाया गया है और साथ ही यह भी कहना है कि अवाम जाहिलों के अमल को न देखें न कोई राय क़ायम करें बल्कि सुन्नियों की किताबें क्या कह रही हैं यह समझें। अल्लाह तआला हमे और आपको हक़ पहचानने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। पेश हैं उन किताबों के नाम :-

1. इल्मे ग़ैब के सुबूत में आलाहज़रत की यह किताबें देखें :- अद्दौलतुल मक्किया (अरबी व उर्दू), इल्मे ग़ैबे रसूल, इम्बाउल मुस्तफ़ा।

2. वसीले के सुबूत और बुज़ुर्गों से मदद के सुबूत के बारे में जानने के लिए यह किताबें देखें :-

1. इस्लाहे फ़िक्र ओ ऐतक़ाद (अरबी में अल्लामा सय्यद अलवी मालकी) और यही किताब उर्दू में अल्लामा यासीन अख़्तर मिस्बाही साहब की।

2. वसीला दलाइल की रोशनी में (अरबी में मौलाना हकीम शरफ़ क़ादरी)

3. अल इन्तेबा (शाह वली उल्लाह अलैहिर्रहमा)

4. इस्लामी अक़ाइद (अल्लामा सय्यद यूसुफ़ हाशिम रिफ़ाई)

5. अल इस्तिमदाद (आला हज़रत)
6. निदाए या रसूलल्लाह (आला हज़रत)

3. मज़ारात पर हाज़री के सुबूत में आलाहज़रत की फ़तावा रज़विया (चौथी जिल्द) और .कुबूरे मुसलमान की ताज़ीम -ओ- तौक़ीर देखें। मुफ़्ती अह़मद यार ख़ाँ अ़लैहिर्रह़मा की किताब "जाअल हक़" देखें। जाअल हक़ हिन्दी में भी छपी है।

4. न्याज़ नज़्र व फ़ातहा के सुबूत के लिए 'फ़ातहा का सुबूत' देखें। मौलाना शाह सलामतुल्लाह रामपुरी की किताब 'ग्यारहवीं शरीफ़' देखें।

5. तीजे और चालीसवें वग़ैरह में राइज हो गई ग़लत रस्मों के सुबूत में आला हज़रत की किताब 'दावते मय्यत' देखें जो कि हिन्दी में भी छप चुकी है।

6. मज़ारात पर सजदा व तवाफ़ के रद्द में आलाहज़रत की किताब "हुरमते सजदए ताज़ीमी अहादीस की रोशनी में" देखें. और फ़तावा रज़विया की चौथी जिल्द देखें।

7. मीलाद शरीफ़ और खड़े होकर सलाम पढ़ने के सुबूत में आलाहज़रत के वालिदे माजिद मौलाना नक़ी अ़ली ख़ाँ अ़लैहिर्रह़मा की किताब " इस्बातुल मौलिदे वल क़याम " और आलाहज़रत की किताब " इक़ामतुल क़यामा " देखें।

8. बुज़ुर्गो के मज़ार पर उर्स के सुबूत में फ़तावा रज़विया और जाअल हक़ का मुताला करें।

9. आलाहज़रत ने अपनी किताब "रूहों की दुनिया" और फ़तावा रज़विया की चौथी जिल्द में .कुरआन और हदीस से यह साबित किया कि मुर्दे देखते हैं, सुनते हैं और बोलते भी हैं मगर हम उनका सुनना देखना और बोलना देख नहीं पाते। इस किताब में इस बात का सुबूत भी है कि रूहें घरों पर आती हैं।

10. हुज़ूरे अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर

नुबुव्वत ख़त्म हो चुकी यानी अब कोई नबी नहीं आएगा। इस मसअले के सुबूत में आला हज़रत की किताब "ख़त्मे नुबुव्वत" फ़तावा रज़विया की छटी जिल्द में देखें।

11. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हाज़िर -ओ- नाज़िर होने के सुबूत में मौलाना मुहम्मद फ़ैज़ अहमद उवैसी की किताब "हाज़िर -ओ- नाज़िर" देखें।

12. क़ब्र पर अज़ान के सुबूत में आलाहज़रत की किताब "अज़ाने क़ब्र" देखें। हिन्दी में भी छपी चुकी है।

13. अज़ान के वक्त अंगूठे चूमने के सुबूत में आलाहज़रत की किताब "अंगूठे चूमिए" देखें। हिन्दी में भी छपी चुकी है।

14. रबी उल अव्वल शरीफ़ के मौक़े पर चराग़ाँ करने के सुबूत में आलाहज़रत का रिसाला "बरीक़ुल मनार" फ़तावा रज़विया में देखें।

15. मुहर्रम के दिनों में तख़्त ताज़िया मातम वग़ैरह के रद्द में आलाहज़रत की किताब रिसाला "ताज़ियादारी" देखें। जो हिन्दी में भी शाए हो चुका है।

16. बदमज़हब से निकाह हराम है और इसके अलावा बदमज़हबों के साथ दूसरे अहकामात जानने के लिए फ़तावा रज़विया की छठी जिल्द देखें और मुफ़्ती जलाल उद्दीन साहब की किताब 'बदमज़हबों से रिश्ते' उर्दू व हिन्दी में देखें।

17. मुफ़्ती जलाल उद्दीन साहब की एक किताब "बुज़ुर्गों के अक़ीदे" का मुताला करने के बाद आपको यह पता चलेगा कि हमारे बुज़ुर्गों के निम्न मसाइल के बारे में क्या अक़ीदे हैं :-

1. तसर्रुफ़ व इख़्तेयार 2. इल्मे ग़ैब 3. हाज़िर ओ नाज़िर 4. क़ब्रों की ज़िन्दगी 5. ताज़ीम 6. वसीला 7. ज़्यारते .कुबूर और उनसे मदद मांगना 8. हुज़ूर के जिस्म मुबारक का साया न था ----- यानी इस किताब के ज़रिए आपको यह बात अच्छी तरह मालूम हो जाएगी कि हमारे बुज़ुर्ग सालहा साल

से बल्कि शुरू से (क्यूँकि इस किताब में नबियों के अक़ीदे भी दिए गए हैं) इन इख़्तलाफ़ी मसाइल के बारे में क्या अक़ीदा रखते आये हैं और यह साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा कि बुज़ुर्गों के वही अक़ीदे रहे हैं जो आज अहले सुन्नत वल जमाअत के हैं।

18. अल्लामा अर्शदुल क़ादरी साहब की एक किताब "ज़लज़ला" है जिसमें देवबन्दियों की किताबों के हवाले से यह सुबूत पेश किया गया है कि जिन अक़ीदों को यह लोग हराम शिर्क व नाजाएज़ मानते हैं उनमें से बहुत से अक़ीदे अपने बुज़ुर्गों के लिए सही जानते हैं --- साथ ही इस किताब में चैलेंज दिया गया है कि जो शख़्स इस किताब में दिए गए हवालों को झूट साबित कर दे उसे इनाम दिया जाएगा। ज़लज़ला हिन्दी में भी छप चुकी है और इन्हीं की लिखी एक किताब "ज़ेर -ओ- ज़बर" भी पढ़ने से तअल्लुक़ रखती है

19. हज़रत मौलाना मुश्ताक़ अहमद निज़ामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की किताब "ख़ून के आंसू" में वहाबियों के मक्र -ओ- फ़रेब की ऐसी दास्तान है जो वाक़ई ख़ून के आंसू रुला दे यानी इससे साफ़ ज़ाहिर है कि इन बदमज़हबों ने दीन के ढाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

20. अल्लामा अर्शदुल क़ादरी की किताब "जमाअते इस्लामी" मौदूदी जमाअत के रद्द में है जिसमें मौदूदी जमाअत के बेहूदा अक़ीदों को हवाले के साथ बताया गया है और इसमें साफ़ तौर पर यह साबित किया गया है कि जमाअते इस्लामी एक गुमराह और बद्दीन फ़िरक़ा है।

21. अल्लामा अर्शदुल क़ादरी ही किताबें "तबलीग़ी जमाअत" --- "तबलीग़ी जमाअत का फ़रेब" --- " तबलीग़ी जमाअत अहादीस की रौशनी में" पढ़ने से तअल्लुक़ रखतीं हैं। इन किताबों से साफ़ ज़ाहिर है कि तबलीग़ी जमाअत तबलीग़ की आड़ में क्या खेल खेल रही है यानी नमाज़ के बहाने बुलाती

है और जब आदमी इन पर भरोसा करने लगता है तब धीरे धीरे अपने बातिल अक़ीदों का जाल फैला कर गुमराह करके ईमान पर डाका डालती है। इनमें की दो किताबें हिन्दी में भी छप चुकी हैं।

22. हुज़ूर के इख़्तेयारात के सुबूत में आलाहज़रत की किताब अलअम्नो वल उला देखें।

23. जनाब मौलाना मुहम्मद अहमद मिस्बाही साहब की लिखी किताब "इमाम अहमद रज़ा रद्दे बिदआत व मुनकिरात" में आप आजकल फैल रही बदआमालियाँ और बिदआत को देख सकते है। इस किताब में निम्न बातों का रद्द किया गया है :-

मज़ार का तवाफ़, मज़ार को बोसा देना (उल्मा को इसमें इख़्तिलाफ़ है), मज़ारात पर ऊँचा .कुब्बा बनाना, औरतों का मज़ारात पर जाना, उर्स में रक़्स व ग़ैर शरई क़व्वाली, मसनूई (झूटी बनाई हुई) क़ब्र, ताक़ बनाना, ताज़ियादारी, दावते मय्यत, तीजा फ़ातिहा व नियाज़ औलिया के ग़नी के खाने का हुक्म वग़ैरह बहुत सी बुरी रस्में और बिदआत के बारे में आलाहज़रत के हवाले से इस किताब में यह बताया गया है कि आलाहज़रत ने इन बातों से मुसलमानों को रोका है जबकि आज यह इल्ज़ाम दिया जाता है कि सुन्नी आलिम इन बातों को रोकते नहीं बल्कि करवाते है।

हमने यहाँ बहुत किताबों के नाम आपको गिनाए मगर समझदार के लिए सिर्फ़ एक यही किताब "दावते फ़िक्र" काफ़ी है जिससे साफ़ तौर यह ज़ाहिर हुआ कि अहले सुन्नत के अलावा तमाम फ़िरक़े बदमज़हब हैं और इनसे बचना बहुत .ज़ुरूरी है। अब जो समझना ही न चाहे या सब कुछ समझ कर नादान बने उसका कोई इलाज नहीं। सुन्नियों की तक़रीबन हर किताब में उनके अक़ीदे साफ़ तौर पर लिखे होते हैं, हाँ अवाम की बदआमालियों से लोग ग़लत अक़ीदा क़ाएम कर लेते हैं, अल्लाह तआला हमें आपको और सभी को इन बदआमालियों से बचाए रखे ताकि दुश्मन को मौक़ा न मिले गुमराही फैलाने का।

ईमान अफ़रोज़ राय

अब तक आपने वहाबियों के अक़ीदे और सुन्नियों की बद्आमालियों के बारे में जाना और अब इतना सब कुछ जान लेने के बाद अब आपका फ़र्ज़ बनता है कि आप तहक़ीक़ करने के बाद सिर्फ़ उन अक़ाइद पर क़ायम हो जाइए जो हक़ हैं, उस फ़िरक़े अहले सुन्नत वल जमाअत के साथ हो लीजिए जो अल्लाह और उसके रसूल और सहाबाए रसूल के बताए रास्ते पर हैं। कहने का मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि आपसे अगर कोई यह कहे कि फ़लाँ काम किया करो या फ़लाँ न किया करो नहीं तो तुम वहाबी हो जाओगे और आप आँख मूंद कर वहाबी हो जाने के डर से सब कुछ करने को तैयार हो जाएं। आपको जहाँ शक हो कोई शुबा हो अपनें किसी मोतबर सुन्नी आलिम से दरयाफ़्त कीजिए, मसाइल को साफ़-2 समझ लीजिए।

कहना यह भी है कि अगर कोई ऐसा शख़्स जो आपसे फ़ुरूई मसाइल में बहस करता है और वह वाक़ई किसी के बहकावे में है तो आप उसको ख़्वामख़्वाह वहाबी या काफ़िर मत कह बैठिए क्यूंकि :------

मुसलमान को मुसलमान काफ़िर को काफ़िर जानना ज़ुरूरी है

याद रखिए मुसलमान को मुसलमान जानना काफ़िर को काफ़िर जानना ज़ुरूरी है। अगर किसी मुसलमान को कोई काफ़िर कह दे और वह वाक़ई में काफ़िर नहीं तो ऐसा कहने से कुफ़्र उल्टा उसकी ही तरफ़ पलटता है यानी कहने वाला ख़ुद काफ़िर हो जाता है। इसी तरह काफ़िर को मुसलमान जानना या समझना भी कुफ़्र है और ऐसा मानने से आदमी इस्लाम से ख़ारिज है। हाँ अगर किसी के बारे में शक है तो

ख़ामोशी चाहिए। हाँ अगर कोई शख़्स ज़ुरूरयाते दीन का इन्कार करता है या अल्लाह या रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तौहीन करता है तो वह बेशक काफ़िर है। अगर वह सच्चे दिल से तोबा कर लेता है तो फिर उसे मुसलमान ही कहना लाज़िम होगा।

कुछ लोग यह कहते हैं कि किसी को काफ़िर मत कहो या किसी को काफ़िर नहीं कहना चाहिए क्या पता कब वह मुसलमान हो जाए। इस तरह तो मुसलमान को भी मुसलमान शायद न कहा जाए कि क्या पता कब वह काफ़िर हो जाए। याद रखिए यह क़तई ग़लत है काफ़िर को काफ़िर कहना .जुरूरियाते दीन से है और मुसलमान को मुसलमान जानना भी .जुरूरियाते दीन से है। हाँ किसी मख़सूस शख़्स के लिए जब तक कि साबित न हो ले कोई हुक्म नहीं लगा सकते। गर्ज़ इस मसअले में बहुत ऐहतियात की .जुरूरत है मगर आजकल के वो सारे फ़िरक़े जो अल्लाह रसूल की शान में तौहीन करते है क़तअन काफ़िर और मुरतद बल्कि सब कुछ जानने के बाद भी ऐसे लोगों को मुरतद न समझने वाला भी उसी .जुमरे में है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि किसी को बुरा नहीं कहना चाहिए यह अच्छी बात नहीं। ऐसा नहीं हैं अरे भई चोर तो चोर ही कहलाएगा, शैतान तो शैतान ही कहलाएगा। .कुरआन ने बुरों को बुरा कहा है। ग़ीबत बहुत बड़ा गुनाह है मगर कहीं पर ग़ीबत भी जाएज़ बल्कि सवाब है। वह जिससे किसी मुसलमान को नुक़सान का अन्देशा है उसकी ग़ीबत करना ग़लत नहीं। इसी तरह उस शख़्स की ग़ीबत करना भी ग़लत नहीं जो ईमान का दुश्मन या ईमान छीनने वाला है बल्कि ऐसे शख़्स की ग़ीबत या ऐसे शख़्स से भोले भाले मुसलमानों को होशयार करना बहुत बड़े सवाब का काम है। अल्लाह पाक हमें और आपको इस सवाब से महरूम न करे। आमीन।

मुरतद और मुरतद के अहकाम

इन्सान दो तरह के होते हैं मुसलमान और काफ़िर --- फिर काफ़िर भी दो तरह के होते हैं काफ़िर असली काफ़िर मुरतद। काफ़िर असली वह काफ़िर है जो शुरू से ही कलमए इस्लाम को न मानता हो जैसे दहरिया, मजूसी, मुशरिक और यहूद व नसारा वग़ैरह। काफ़िर मुरतद भी दो तरह के होते हैं। मुरतद मुजाहिर और मुरतद मुनाफ़िक़। मुरतद मुजाहिर वह काफ़िर है कि जो पहले मुसलमान था अब खुल्लम खुल्ला इस्लाम से फिर गया और कलमए लाइलाहाइल्लल्लाह का इन्कार कर के दहरिया, मुशरिक, मजूसी या किताबी वग़ैरह कुछ भी हो गया। मुरतद मुनाफ़िक़ वह काफ़िर है जो कलमए लाइलाहाइल्लल्लाह अब भी पढ़ता है अपने आप को मुसलमान ही कहता है मगर ख़ुदा वन्दे .कुद्दूस, हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम या किसी नबी की तौहीन करता है या दीगर ज़ुरूरियाते दीन में से किसी बात का इन्कार करता है।

काफ़िरों में सबसे बुरा यही मुरतद मुनाफ़िक़ है जो मुसलमान बन कर कुफ़्र सिखाता है और अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को गालियाँ देता है --- अल अयाज़ु बिल्लहि तआ़ला --- सही मुसलमान वह है जो ज़ुरूरियाते दीन को मानने के साथ साथ तमाम ज़ुरूरियाते अहले सुन्नत को मानता हो और गुमराह मुसलमान वह बदमज़हब है जो ज़ुरूरियाते अहले सुन्नत में से किसी बात का इन्कार करता हो मगर उसकी बदमज़हबी कुफ़्र की हद तक न पहुँची हो। मुनाफ़िक़ों से मुताल्लिक़ चन्द आयात आगे इन्शाअल्लाह आयेंगी यहाँ चन्द हदीसें पेश की जा रहीं हैं। ये हदीसें उन लोगों का मुँह बन्द कर देती हैं जो सुलहकुल की क़िस्म से हैं और ज़बरदस्ती

इत्तेहाद क़ाएम करना चाहते हैं। ये हदीसें साफ़ बता रहीं हैं कि मुरतद के साथ शरीअत ने कोई समझौता नहीं रखा है।

हदीस न. 1 :- हज़रते अनस रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि सरवरे काएनात स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्ल्म ने फ़रमाया कि जब तुम किसी बदमज़हब को देखो तो उसके सामने ग़ुस्सा ज़ाहिर करो इसलिए कि ख़ुदाए तआ़ला हर बदमज़हब को दुश्मन रखता है। (इब्ने असाकिर)

हदीस न. 2 :- हज़रते हुज़ैफ़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्ल्म ने इरशाद फ़रमाया कि ख़ुदाए तआ़ला किसी बदमज़हब का न रोज़ा क़बूल करता है न नमाज़, न ज़कात, न हज, न उमराह, न जिहाद और न कोई नफ़्ल न फ़र्ज़। बदमज़हब दीने इस्लाम से ऐसा निकल जाता है जैसे गुंधे आटे से बाल निकल जाता है। (इब्ने माजा)

हदीस न. 3 :- हुज़ूर नूरे मुजस्सम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अगर कोई बद्मज़हब मसलए तक़्दीर को झुटलाने वाला हज्रे असवद और मक़ामे इब्राहीम के दरम्यान मज़लूम क़त्ल किया जाए और अपने इस मारे जाने पर वह साबिर व तालिबे सवाबे ख़ुदा रहे जब भी अल्लाह अज़्ज़ावजल्ला उसकी किसी बात पर नज़रे करम न फ़रमाए यहाँ तक कि उसे जहन्नम में डाले।

हदीस न. 4 :- हज़रते अबू उमामह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि सरकारे अक़्दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्ल्म ने फ़रमाया कि बदमज़हब दोज़ख़ के कुत्ते हैं। (दार .कुतनी)

हदीस न. 5 :- हज़रते इब्राहीम इब्ने मयसरह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले करीम अ़लैहिस्सलातु वत्तसलीम ने फ़रमाया कि जिसने बदमज़हब की इज़्ज़त की उसने इस्लाम के ढाने पर मदद की। (मिश्कात शरीफ़)

हदीस न. 6 :- हज़रते अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रह़मते आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हुक्म फ़रमाया कि बदमज़हब अगर बीमार पड़े तो उसे देखने न जाओ अगर मर जाए तो उसके जनाज़े में शरीक न हो, उससे भेंट हो तो उससे सलाम न करो, उनके पास न बैठो, उनके साथ पानी न पियो, उनके साथ खाना न खाओ, उनके साथ शादी ब्याह न करो, उनके जनाज़े की नमाज़ न पढ़ो। (यह न. 6 की हदीस मुस्लिम, अबू दाऊद, इब्ने माजा, उकैली और इब्ने हब्बान की रिवायतों का मजमूआ है)

हदीस न. 7 :- अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि तमाम नेक कामों में सबसे अफ़ज़ल अमल अल्लाह अज़्ज़ावजल्ला के वास्ते दोस्ती रखना और अल्लाह अज़्ज़ावजल्ला के वास्ते दुश्मनी रखना है।

हदीस न. 8 :- हज़रते अबू ज़र रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हम पर जलवा फ़रमा हुए --- फ़रमाया क्या तुम्हें ख़बर है कि कौन सा अमल अल्लाह तआ़ला को सबसे ज़्यादा महबूब है। किसी कहने वाले ने अर्ज़ की नमाज़ व रोज़ा व ज़कात और किसी ने अर्ज़ की जिहाद। हुज़ूर रह़मते आलम नूरे मुजस्सम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेशक तमाम आमाल में अल्लाह तआ़ला को सबसे ज़्यादा महबूब व पसन्दीदा अमल अल्लाह के हक़ के लिए महब्बत व दोस्ती रखना और अल्लाह के लिए अदावत व दुश्मनी रखना।

हदीस न. 9 :- तिर्मिज़ी शरीफ़ में हज़रते मआज़ इब्ने अनस रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रावी जनाब रिसालत मआब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जिसने दिया अल्लाह के वास्ते और देने से इन्कार किया अल्लाह के वास्ते और ईमान वालों से अल्लाह के लिए दोस्ती की

और बदमज़हबों और बद्दीनों से अल्लाह के वास्ते दुश्मनी रखी तो बेशक उसने अपने ईमान को कामिल कर लिया।

हदीस न. 10 :- बैहक़ी में हज़रते अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के साथ था तो हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया बेशक जन्नत में चन्द सुतून हैं याक़ूत के उन पर ज़बरजद के बाला ख़ाने बने हुए हैं उनमें दरवाज़े हैं खुले हुए और रौशन हैं जैसे रौशन सितारे --- सहाबा किराम रदियल्लाहु तआ़ला अन्हुम ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह (स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) उन बालाख़ानों में कौन रहेंगे। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया जो लोग अल्लाह के लिए महब्बत रखते हैं और अल्लाह के लिए लोगों के पास बैठते उठते हैं और अल्लाह के लिए मेल जोल मुलाक़ात करते हैं।

हदीस न. 11 :- इब्ने असाकिर में हज़रते अनस रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब किसी बदमज़हब बद्दीन को देखो तो उसके रु-ब-रु उससे तुर्शरूई करो, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला हर बद्मज़हब को दुश्मन रखता है, उनमें से कोई पुलसिरात पर गुज़र न पाएगा बल्कि टुकड़े टुकड़े हो कर आग में गिर जाएगा जैसी टिड्डियाँ और मक्खियाँ ग़िरती हैं।

हदीस न. 12 :- हुज़ूर महबूबे ख़ुदा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जो किसी बदमज़हब को उसकी बदमज़हबी की वजह से दुश्मन जानकर उससे मुँह फेरे, अल्लाह तआ़ला उसका दिल अमन और ईमान से भर दे और जो किसी बद्मज़हब को झिड़के अल्लाह तआ़ला उसे उस बड़ी घबराहट के दिन अमान दे और जो किसी बद्मज़हब को ज़लील करे अल्लाह तआ़ला जन्नत में उसके सौ दर्जे बलन्द फ़रमाए। ---- और जो किसी बद्मज़हब को

सलाम करे या ख़ुशी के साथ मिले या उसके सामने ऐसी बात करे जिससे उसका दिल ख़ुश हो तो उसने हल्की जानी वह चीज़ जो उतारी गई मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर।

हदीस न. 13 :- अबू दाऊद में हज़रते वास्ला इब्ने अशक़अ रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं मैने अर्ज़ की या रसूलल्लाह असाबिइयत क्या है। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि असाबिइयत (तअस्सुब) की तारीफ़ यह है कि तू अपनी क़ौम को .ज़ुल्म करते हुए देखकर भी उसकी उनकी मदद करे। (यानी जो बद्मज़हबों के .ज़ुल्म को समझने के बाद भी उनकी मदद करे तो तअस्सुब तो यह हुआ नाकि यह कि सबसे से मिलो सब की मदद करो। हदीस के मुताबिक़ तअस्सुब करने वाला कौन हुआ!)

हदीस न. 14 :- दार .क़ुतनी में हज़रते इब्ने मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु से रावी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि बेशक मेरे लिए अल्लाह तआला ने असहाब चुने तो उन्हें मेरी रफ़ीक़ और मेरी सुसराली और मेरा मददगार किया और अनक़रीब उनके बाद कुछ लोग आयेंगे कि उनकी शान को घटायेंगे और उन्हें बुरा कहेंगे तुम उन्हें पाओ तो उनसे शादी ब्याह रिश्तेदारी न करना, न उनके साथ खाना खाना न पानी पीना, न उनके साथ नमाज़ पढ़ना न उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ना।

हदीस न. 15 :- इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हुज़ूर महबूबे किबरिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि आख़िर ज़माने में एक क़ौम जमाअत होगी जिनको राफ़ज़ी कहा जाएगा वह दीने इस्लाम को छोड़ देंगे वह लोग मुरतद हैं, उन पर मुरतद के अहकाम जारी हैं।

हदीस न. 16 :- दार .क़ुतनी में हुज़ूर महबूबे मुहतरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अनक़रीब

मेरी बाद एक जमाअत रूनुमा होगी उनके लिए एक बुरा लक़ब होगा उनको राफ़ज़ी कहा जाएगा --- तो ऐ अली तुम अगर उनको पाना उनसे जंग करना इसलिए कि वो मुरतद हैं। हज़रते अली रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया मैंने अर्ज़ की या रसूलल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम उस क़ौम का नाम तो आपने बता दिया है उसकी पहचान भी बता दें। हुजरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया उनकी पहचान ये है कि तुम्हारी तारीफ़ ऐसी करेंगे जो तुममे नहीं हैं (जैसे नबी से अफ़ज़ल होना या आपको ख़िलाफ़त का पहला हक़दार जानना) और अगलों यानी पहले तीन ख़लीफ़ाओं पर तअन करेंगे।

इन हदीसों का ख़ुलासा यह है कि जब यह साबित हो ले कि कोई शख़्स वाक़ई मुरतद है तो उसके साथ निम्न बर्ताव करने का शरीअत ने हुक्म फ़रमाया फिर याद रखिए जब सब तहक़ीक़ हो ले कि वह मुरतद है तब निम्न हुक्म हैं जो .कुरआन और हदीसों से साबित हैं :-

उससे सलाम कलाम हराम, मेलजोल हराम, बीमार पड़े तो उसकी इयादत को जाना हराम, मर जाए तो उसके जनाज़े में शिरकत हराम, उसे मुसलमानों के क़ब्रस्तान में दफ़नाना हराम, मुसलमानों की तरह उसकी क़ब्र बनाना हराम, उसे मिट्टी देना हराम, उस पर फ़ातहा हराम, उसे कोई सवाब पहुँचाना हराम बल्कि खुद कुफ़्र व क़ातेए इसलाम, उससे निकाह हराम, उसके हाथ का ज़बीहा हराम, ग़रज़ वह शख़्स सख़्त क़ाबिले नफ़रत है।

जो शख़्स मुरतद हो जाए उसकी औरत हराम हो जाती है, फिर इसलाम लाए तो उससे दुबारा निकाह किया जाए इससे पहले उस कलमए कुफ़्र के बाद की सोहबत से जो बच्चा होगा हरामी होगा, और यह शख़्स अगर आदत के तौर पर कलमा पढ़ता रहे कुछ फ़ायदा न देगा जब तक अपने

इस कुफ़्र से तोबा न करे कि आदत के तौर पर मुरतद के कलमा पढ़ने से उस का कुफ़्र नहीं जाता। ---- और जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी करे दुनिया में बाद तौबा भी उसे सज़ा दी जाएगी यहाँ तक कि अगर नशे की बेहोशी में कलमा गुस्ताख़ी बका जब भी माफ़ी न देंगें। और तमाम उलमाए उम्मत का इजमा है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान-ए-अक़दस में गुस्ताख़ी करने वाला काफ़िर है और काफ़िर भी ऐसा कि जो उसकी कुफ़्र में शक करे करे वह भी काफ़िर है। मुरतद की औरत को इख़्तियार है कि इद्दत के बाद जिससे चाहे निकाह करे।

बदमज़हब के पीछे नमाज़

बदमज़हब को इमाम बनाना गुनाह, उसके पीछे नमाज़ पढ़ना गुनाह। अगर बदमज़हब कुफ़्र की हदों तक पहुँचा है तो उसको इमामत के क़ाबिल जानना कुफ़्र।

शरीअत का यह हुक्म .कुरआन और हदीस से साबित है जैसा कि ऊपर गुज़रा। कुछ लोग कहते हैं बल्कि कुछ मुरतद मुसलमानों को इस तरह बहकाते हैं कि यह भी .कुरआन पढ़ रहा है वह भी .कुरआन पढ़ रहा है लिहाज़ा नमाज़ हो जाएगी नमाज़ सब के पीछे पढ़ लेना चाहिए। याद रखो ऐसा हरगिज़ नहीं। नमाज़ कोई हंसी खेल नहीं अल्लाह की सबसे बेहतर इबादत है। अब ज़रा अक़्ल से सोचो मुसलमानों कि तुम ज़रा सा किसी में ऐब देखते हो तो उसके पीछे नमाज़ पढ़ना गवारा नहीं करते, क्या किसी दाढ़ी मुंडे के पीछे नमाज़ पढ़ते हो (जबकि दाढ़ी मुंडाना छोटा ऐब नहीं) या उस शख़्स के पीछे तुम्हें नमाज़ पढ़ना गवारा होता है जो तरह तरह के गुनाहों में मुलव्विस हो जबकि वह मुसलमान हो तो कैसे तुम्हें उसके पीछे नमाज गवारा है जो अल्लाह

और उसके रसूल की तौहीन करता है। क्या कोई ईसाई! यहूदी या हिन्दू नमाज़ याद करके नमाज़ पढ़ाने खड़ा हो जाए तो तुम नमाज़ उसके पीछे पढ़ोगे, हरगिज़ नहीं यूंही अगर तुम्हें मालूम है कि फ़लाँ शख़्स मुरतद है यानी सिर्फ़ ज़ाहिर का मुसलमान है तो क्या उसके पीछे नमाज़ पढ़ोगे हरगिज़ नहीं। याद रखो मुरतद के पीछे नमाज़ नहीं बल्कि उसे इमामत के क़ाबिल जानना कुफ़्र है जबकि उसकी बदमज़हबियत हदे कुफ़्र तक पहुँच गई हो।

यहाँ एक और बात बड़ी हैरत की है कि सुन्नी तो अलल ऐलान वहाबी मुरतद के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ता मगर वहाबी हमारे पीछे नमाज़ पढ़ने से परहेज़ नहीं करता जबकि वह हमें क़ब्र का पूजने वाला मुशरिक और बिदअती न जाने क्या क्या समझता है। अरे अगर हम मुशरिक और बिदअती हैं तो हमारे पीछे नमाज़ क्यूँ पढ़ते हो, हमसे अपने मुर्दे की नमाज़ क्यूँ पढ़ाना चाहते हो, तुम्हें यह कैसे गवारा है कि तुम्हारे मुर्दे के लिए दुआ एक मुशरिक और बिदअती करें यह सब सुन्नियों को धोके देने के नए-नए तरीक़े हैं। यह हमारे सामने यह जताना चाहते हैं कि हम तुम एक हैं और इस तरह ईमान को लूटना इनके लिए आसान होगा।

मुरतद का निकाह

मुरतद का निकाह किसी से नहीं हो सकता यहाँ तक कि मुरतद्दा से भी नहीं। आजकल शादी के वक़्त लोग अकसर, अक़ाएद नहीं देखते और हज़ारों निकाह बातिल हो जाते हैं और इसका गुनाह उन पर होता है जो जानते हुए भी ऐसे निकाह को करते हैं और शरीक होते हैं। आज इस मसअले की बेख़बरी की वजह से बहुतेरे लोग हज़ारों रुपए ख़र्च करके अपनी बहन, बेटी को ज़िना के लिए पेश कर देते हैं और जब निकाह क़ायम न हुआ तो सोहबत कब जाइज़ वह तो ज़िना हो गई। अल्लाह महफ़ूज़ रखे।

आजकल देखा यह गया है कि मुरतद लोग सुन्नीयों में शादी करना चाहते हैं ताकि सुन्नियों के ईमान पर डाका डाल सकें और इस तरह रिशता हो जाने के बाद अपने रिशतेदारों को बेदीन बनाना आसान हो जाए और सिर्फ़ नाम का सुन्नी अल्लाह व रसूल और बुज़ुर्गाने दीन की झूटी महब्बत का दावेदार उनके दुश्मनों के यहाँ रिशता कर लेता है हालांकि उनके यहाँ शादी करना ज़िना का दरवाज़ा खोलना है इसलिए कि मुरतद के साथ निकाह जाइज़ ही नहीं होता जैसा कि फ़तावा आलमगीरी जिल्द अव्वल मिसरी सफ़्हा 263 में है " मुरतद का निकाह मुरतद्दा (मुरतद औरत), मुस्लिमा (मुसलमान औरत) और काफ़िरा असलिया (वह औररत जो असली काफ़िर हो) किसी से जाइज़ नहीं ऐसे ही मुरतद्दा का निकाह किसी से नहीं हो सकता। " इसी तरह इमाम मुहम्मद अलैहिर्रहमत व रिज़वान की किताब मबसूत में है।

हैरत है कि सुन्नी अपने बाप दादा के दुश्मनों से रिश्ता नहीं करता मगर अल्लाह व रसूल और बुज़ुर्गाने दीन के दुश्मनों के यहाँ शादी बियाह करने में कोई रुकावट नहीं महसूस करता और जब उनके यहाँ रिश्ता करने से मना किया जाता है तो कहता है कि अब वह ज़माना नहीं रहा कि उनके यहाँ शादी करने से रोका जाए। ऐसे लोग जब और थोड़ी तरक़्क़ी कर लेंगे तो उन्हें शायद ग़ैर क़ौमों में भी रिश्ता करने से ऐतराज़ न होगा जैसा कि आज कुछ नाम निहाद मुसलमान ग़ैर मुस्लिमों के यहाँ शादी करने लगे हैं।

कुछ लोग कहते है कि लड़की लाने में कोई हर्ज नहीं अलबत्ता उनको लड़की देना ग़लत है हालाँ कि लड़की हो या लड़का किसी का रिश्ता करना उनसे जाइज़ नहीं जैसा कि फ़तावा अलमगीरी के हवाले से अभी गुज़रा। लड़की देने में तो एक लड़की को मुरतद के हवाले करना है और मुरतद की लड़की

लाने में अपने लड़के और उसकी औलाद को मुरतद होने के रास्ते पर खड़ा करना है इसलिए कि अकसर यही होता है कि जिस सुन्नी लड़के की बीवी मुरतद के यहाँ से लाई गई कुछ दिनों के बाद वह बहकी बहकी बातें करने लगता है और औलाद नाना नानी का असर कबूल करती है। मुरतद का ज़बह किया हुआ मुर्दारी खाते है, उन्हीं का तौर तरीका इख़्तियार करते है यहाँ तक कि कुछ दिनों बाद यह होता है कि पूरा घर बेदीन हो जाता है।

खुलासा यह है कि मुरतद के घर लड़की देना या लेना दोनों ही से बेदीनी का दरवाज़ा खुलता है बल्कि लड़की लाने में नुक़सान ज़्यादा है। अल्लाह महफ़ूज़ रखे।

बड़ी हैरत की बात है कि देवबन्दीयों वहाबियों के नज़दीक हम क़ब्र के पूजने वाले हैं तो फिर वह हमसे निकाह करने में परहेज़ क्यूँ नहीं करते। यह सब इनकी मक्कारी है सुन्नीयों के क़रीब आने और उनके ईमान को छीनने के लिए। उससे ज़्यादा हैरत की बात यह है कि सुन्नी या किसी भी शख़्स की बहन बेटी पर कोई ग़लत निगाह डाले तो वह उसकी आखें निकालने को तैयार हो जाता है मगर यहाँ यह नहीं देखता कि जब निकाह ही नहीं हुआ तो कैसे अपनी बहन और बेटी को उस मुरतद के सामने ज़िना के लिए पेश करता है और उसके साथ साथ पूरी महफ़िल यह तमाशा देखने को तैयार है। अल्लाह मुसलमानों को महफ़ूज़ रखे।

यह भी देखा गया है कि कुछ मुरतद दिखावे की तौबा कर लेते हैं और कुछ दुनियादार मौलवी बादे तौबा फ़ौरन निकाह पढ़ा देते हैं और अपना नज़राना सीधा करके चलते बनते हैं। यहाँ पर शरीअत का हुक्म यह है कि तौबा के बाद फ़ौरन उसके साथ निकाह नहीं किया जाएगा बल्कि कुछ दिनों उसे देखा जाएगा कि अपनी तौबा पर वह क़ाइम है या नहीं जैसा कि फ़ासिक़े मोलिन तौबा कर ले तो फ़ौरन उसे इमाम नहीं बना दिया

जाएगा। फ़तावा रज़विया जिल्द 3, फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ और फ़तावा आलमगीरी में है कि "फ़ासिक़ तौबा कर ले तब भी उसकी गवाही नहीं क़बूल की जाएगी जब तक कि इतना वक़्त न गुज़र जाए कि उस पर तौबा का असर ज़ाहिर हो।"

शरीअत के हुक्म से साफ़ ज़ाहिर है कि शरीअत ने मुरतद से किस हद तक नफ़रत दिलाई और इस हुक्म के ज़रिए मुरतद का सोशल बायकाट (यानी बिरादरी से अलग या हुक़्क़ा पानी बन्द करना) करने का हुक्म दिया है क्यूँ। इसलिए कि यह आस्तीन का सांप है और क़ौम और मज़हब की जड़ें खोखली करता है। नेकी की आड़ में वह गुनाह कराता है जिसकी कोई माफ़ी नहीं, ईमान का ऐसा दुश्मन कि कब ईमान छीन ले जाए पता नहीं। शायद कुछ लोगों को इस बात पर ऐतराज़ हो कि इतनी सख़्ती क्यूँ तो अव्वल तो मैं उनसे यह कहना चाहूँगा कि यह हुक्म उनके लिए है जो वाक़ई अल्लाह व रसूल का दुश्मन है और दूसरे मैं उनसे पूछना चाहूंगा कि अगर उनके माँ बाप, उस्ताद, पीर या दीगर अहबाब की कोई तौहीन करे तो क्या वह बर्दाश्त कर सकेंगें तो कैसे उनकी तौहीन बर्दाश्त होगी जो हमारे सब कुछ हैं जिनके लिए हम दुनिया में आए हैं जिनके लिए अल्लाह पाक ने सारे जहाँ बनाए। वह जो माँ बाप से ज़्यादा हमें प्यार करते हैं, वह जिनसे वास्ता पड़ना है क़ब्र में, हश्र में, वह जो मीज़ान पर और पुलसिरात पर मदद फ़रमायेंगे, हौज़े कौसर पर सैराब करायेंगे वह जो जन्नत में ले जायेंगे वह जो दोज़ख़ से बचायेंगे, वह जिनके बग़ैर न जन्नत मिले न दोज़ख़ से नजात। रोज़े महशर सब उन्हीं के आगे हाथ फैलाऐ होंगे। उस रोज़ किस मुँह से उनका सामना करोगे। क्या वह इस बात से नाराज़ न होंगे, क्या अल्लाह तआ़ला इस बात से नाराज़ न होगा कि दुनिया में तुम अल्लाह रसूल के दुश्मन के साथ

थे। अल्लाह के वास्ते सोचो वह वक़्त जब कोई काम न आयेगा तो कौन काम आयेगा और जो काम आएगा उसी की नाराज़गी ले ली तो क्या पार पा सकोगे। अब भी वक़्त है दूर हो जाओ अल्लाह के दुश्मन से दूर और बहुत दूर रहो। ग़र्ज़ उनके बदगो से हमें दूर रहना है और अगर उनका बदगो हमारे बीच पल रहा है तो उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल बाहर फेंकना है, उसका पर्दा फ़ाश करना हमारे और हमारी क़ौम के लिए बेहद ज़ुरूरी है। उम्मीद है आप बात की नज़ाकत को समझ गए होगें। नीचे पेश की जा रही .क़ुरआन की आयतों से बात साफ़ हो जाएगी।

तुम्हारा रब अज़्ज़ावजल्ला फ़रमाता है

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ وَ اِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِيْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَ تِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَ جِهَادٍ فِىْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِىَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ○(سوره توبة)

तर्जमा : ऐ नबी! तुम फ़रमा दो कि ऐ लोगों! अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, तुम्हारी बीबीयाँ तुम्हारा कुनबा, तुम्हारी कमाई के माल और वह सौदागरी जिस के नुक़सान का तुम्हें अन्देशा है और तुम्हारी पसन्द के मकान उनमें कोई चीज़ भी अगर तुम को अल्लाह और उसके रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उस की राह में कोशिश करने से ज़्यादा महबूब है तो इन्तज़ार रखो यहाँ तक अल्लाह अपना अज़ाब उतारे और अल्लाह तआ़ला बे-हुक्मों को राह नहीं देता।"

इस आयत से मालूम हुआ कि जिसे दुनिया जहान में कोई मुअज़्ज़म कोई अज़ीज़ कोई माल कोई चीज़ अल्लाह व रसूल से ज़्यादा महबूब हो वह बारगाहे इलाही से मरदूद है अल्लाह उसे अपनी तरफ़ राह नहीं देगा उसे अज़ाब-ए-इलाही

के इन्तज़ार में रहना चाहिए यानी अगर कोई अल्लाह व रसूल से ज़्यादा किसी और चीज़ से महब्बत करता है तो उसे अज़ाब का मज़ा .जुरूर चखना है। वल अंयाज़ु बिल्लाह तआला।

तुम्हारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :–

لا یو من احد کم حتی اکون احب الیه من والده وولده والناس اجمعین٥

<u>तर्जमा</u> : तुम में कोई मुसलमान न होगा जब तक मैं उसे उसके माँ बाप औलाद और सब आदमीयों से ज़्यादा प्यारा न होऊँ। (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)

यह हदीस सहीह बुख़ारी व सहीह मुसलिम में अनस इब्ने मालिक अनसारी रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है इसमें तो यह बात साफ़ फ़रमा दी कि जो हुज़ूर–ए–अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से ज़्यादा किसी को अज़ीज़ रखे हरगिज़ मुसलमान नहीं। मुसलमानों कहो मुहम्मदुर्रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को तमाम जहान से ज़्यादा महबूब रखना मदारे ईमान व मदारे नजात हुआ या नहीं? कहो हुआ और ज़ुरूर हुआ। यानी उन्हीं की महब्बत ईमान है और उसी से नजात हासिल होगी। यहाँ तक तो सारे कलमागो खुशी–2 .कुबूल कर लेंगे कि हाँ हमारे दिल में मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अज़ीम अज़मत है। हाँ–हाँ माँ–बाप, औलाद सारे जहान से ज़्यादा हमें हुज़ूर की मुहब्बत है। भाइयों ख़ुदा ऐसा ही करे मगर ज़रा कान लगा कर अपने रब का इर्शाद सुनों।

तुम्हारा रब अज़्ज़ावजल्ला फ़रमाता है

الٓمّٓ٥ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَكُوْٓا اَنْ یَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا یُفْتَنُوْنَ٥ (سورہ العنکبوت)

<u>तर्जमा</u> : क्या लोग इस घमंड में हैं कि इतना कह लेने पर छोड़ दिए जाएंगे कि हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश न होगी।

यह आयत मुसलमानों को होशयार कर रही है कि देखो कलमागोई ज़बानी अदाए मुसलमानी पर तुम्हारा छुटकारा न होगा। हाँ हाँ सुनते हो। अज़माए जाओगे आज़माइश में पूरे निकले तो मुसलमान ठहरोगे। हर शय की आज़माइश में यही देखा जाता है कि जो बातें उसके हक़ीक़ी व वाक़ई होने को दरकार हैं वह उसमें हैं या नहीं? अभी .क़ुरआन व हदीस इर्शाद फ़रमा चुके कि ईमान के हक़ीक़ी व वाक़ई होने को दो बातें ज़ुरूर हैं। मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ताज़ीम और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की महब्बत को तमाम जहान पर तक़दीम (वरीयता), तो इस की आज़माइश का सही तरीक़ा यह है कि तुमको जिन लोगों से कैसी ही ताज़ीम, कितनी ही दोस्ती, कैसी ही महब्बत का इलाक़ा हो, जैसे तुम्हारे बाप, तुम्हारे उस्ताद, तुम्हारे पीर, तुम्हारे औलाद, तुम्हारे भाई, तुम्हारे अहबाब, तुम्हारे बड़े, तुम्हारे असहाब, तुम्हारे मौलवी, तुम्हारे हाफ़िज़, तुम्हारे मुफ़्ती, तुम्हारे वाइज़ वग़ैरह वग़ैरह कोई भी जब वह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी करें असलन तुम्हारे क़ल्ब में उनकी अज़मत उनकी महब्बत का नाम-ओ-निशान न रहे फ़ौरन उनसे अलग हो जाओ उनको दूध की मक्खी की तरह निकालकर फेंक दो, उनकी सूरत उनके नाम से नफ़रत खाओ। फिर न तुम अपने रिशते इलाक़े दोस्ती उलफ़त का पास करो न उसकी मौलवियत, मशीख़ियत, बुज़ुर्गी, फ़ज़ीलत को ख़तरे में लाओ आख़िर यह जो कुछ था मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की .ग़ुलामी के बिना पर था. जब यह शख़्स उन्हीं की शान में गुस्ताख़ हुआ फिर हमें उससे क्या इलाक़ा रहा? उसके जुब्बे इमामे पर क्या जाएं क्या बहुतेरे यहूदी जुब्बे नहीं पहनते? इमामे नहीं बांधते?

उसके नाम, इल्म व ज़ाहिरी फ़ज़ल को लेकर क्या करें? क्या बहुतेरे पादरी बकसरत फ़लसफ़ी बड़े-2 उलूम-ओ-.फुनून नहीं जानते और अगर यह नहीं बल्कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मुक़ाबिल तुमने उसकी बात बनानी चाही उसने हुज़ूर से गुस्ताख़ी की और तुमने उससे दोस्ती बनानी चाही, निबाही या उसे हर बुरे से बदतर बुरा न जाना या उसे बुरा कहने पर बुरा माना या इसी क़द्र कि तुमने इस काम में बेपरवाही मनाई या तुम्हारे दिल में उसकी तरफ़ से सख़्त नफ़रत न आई तो लिल्लाह अब तुम्हीं इन्साफ़ कर लो कि तुम ईमान के इम्तहान में कहाँ पास हुए .कुरआन व हदीस ने जिस पर हुसूल-ए-ईमान का मदार रखा था उससे कितनी दूर निकल गए। मुसलमानों! क्या जिसके दिल में मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम होगी वह उनके बदगो की वक़अत कर सकेगा अगरचे उसका पीर या उस्ताद या बाप ही क्यूँ न हो, क्या जिसे मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम तमाम जहान से ज़्यादा प्यारे होंगे वह उनके गुस्ताख़ से फ़ौरन सख़्त शदीद नफ़रत न करेगा अगरचे उसका दोस्त या बिरादर या बेटा ही क्यूँ न हो लिल्लाह अपने हाल पर रहम करो। और अपने रब की बात सुनों देखो वह क्यूँ कर तुम्हें अपमी रहमत की तरफ़ बुलाता है देखो :-

तुम्हारा रब अ़ज़्ज़ावजल्ला फ़रमाता है

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّاللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْكَانُوْٓا اٰبَآئَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَ هُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْعَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَاالْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

तर्जमा : तू न पाएगा उन्हें जो ईमान लाए हैं अल्लाह और क़यामत पर कि उनके दिल में ऐसों की मुहब्बत आने पाए जिन्होंने ख़ुदा और रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से मुख़ालफ़त की चाहे वह उनके बाप या बेटे या भाई या अज़ीज़ ही क्यूँ न हों, यह हैं वह लोग जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श कर दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उनकी मदद फ़रमाई और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा रहेंगे उनमें --- अल्लाह उनसे राज़ी और वह अल्लाह से राज़ी, यही लोग अल्लाह वाले हैं। सुनता है, अल्लाह वाले ही मुराद को पहुँचे।

इस आयते करीमा में साफ़ फ़रमा दिया कि जो अल्लाह या रसूल की जनाब में गुस्ताख़ी करे मुसलमान उससे दोस्ती न करेगा, जिसका सरीह यह मफ़ाद हुआ कि जो उनसे दोस्ती करे वह मुसलमान न होगा --- फिर इस हुक्म का क़तअन आम होना तफ़सील के साथ इर्शाद फ़रमाया कि बाप, बेटे, भाई, अज़ीज़ सबको गिनाया यानी कोई कैसा ही तुम्हारे ख़्याल में मुअज़्ज़म (बड़ा) या कैसा ही तुम्हें दिल से महबूब हो ईमान है तो गुस्ताख़ी के बाद उससे महब्बत नहीं रख सकते उसकी वक़अत नहीं मान सकते वरना मुसलमान न रहोगे। मौला सुब्हानहु तआला का इतना फ़रमाना ही मुसलमान के लिए बस था मगर देखो वह तुम्हें अपनी रहमत की तरफ़ बुलाता है अपनी अज़ीम नेमतों का लालच दिलाता है कि अगर अल्लाह व रसूल की अज़मत के आगे तुमने किसी का पास न किया किसी से इलाक़ा न रखा तो तुम्हें क्या-2 फ़ायदे होंगे।

(1) अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों में ईमान नक़्श फ़रमा देगा जिसमें इन्शा अल्लाह तआला हुस्ने ख़ातमा की बशारते जलीला है कि अल्लाह का लिखा नहीं मिटता यानी इस

आयत पर अमल करने वाले को यह बशारत दी जा रही है कि उसका ईमान सलामत रहेगा और ख़ातमा ईमान पर होगा क्यूँकि अल्लाह का लिखा मिटा नहीं करता और यह ऐसी नेमत है जिस पर सब कुछ .कुरबान।

(2) अल्लाह तआ़ला रूहुल .कुदुस से तुम्हारी मदद फ़रमाएगा।

(3) तुम्हें हमेशगी की जन्नतों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें रवाँ है।

(4) तुम ख़ुदा के गिरोह कहलाओगे ख़ुदा वाले हो जाओगे।

(5) मुँह मांगी मुरादें पाओगे बल्कि उम्मीद व ख़्याल व गुमान से करोड़ों दर्जे अफ़ज़ल।

(6) सबसे ज़्यादा यह कि अल्लाह तुमसे राज़ी होगा।

(7) यह कि फ़रमाता है मैं तुमसे राज़ी तुम मुझसे राज़ी। बन्दे के लिए इससे ज़्यादा और क्या नेमत होगी कि उसका रब उससे राज़ी हो मगर इन्तहाए बन्दानवाज़ी यह कि फ़रमाया कि अल्लाह उनसे राज़ी और वह अल्लाह से राज़ी।

मुसलमानों ख़ुदा लगती कहना अगर आदमी करोड़ जाने रखता हो और वह सब की सब इन अज़ीम दौलतों पर निसार कर दे तो वल्लाह कि मुफ़्त पायें फिर उस तौहीन करने वाले शख़्स से इलाक़ा ताज़ीम व महब्बत यक लख़्त क़ता कर देना यानी उसे छोड़ देना कितनी बड़ी बात है जिस पर अल्लाह तआ़ला इन बहुत ज़्यादा क़ीमती नेमतों का वादा फ़रमा रहा है और उसका वादा यक़ीनन सच्चा है। .कुरआने करीम की आदते करीमा है कि जो हुक्म फ़रमाता है जैसा कि उसके मानने वालों को अपनी नेमतों की बशारत देता है न मानने वालों पर अपने अज़ाबों का ताज़याना भी रखता है कि जो पस्त हिम्मत नेमतों की लालच में न आएं सज़ाओं के डर से राह पांए वह अज़ाब भी सुन लीजिए।

तुम्हारा रब अज़्ज़ावजल्ला फ़रमाता है

يٰاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْالَا تَتَّخِذُوْا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ط
وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ٥ (سوره توبه)

तर्जमा : "ऐ ईमान वालों! अपने बाप अपने भाइयों को दोस्त न बनाओ अगर वह ईमान पर कुफ़्र पसन्द करें और तुममे जो कोई उनसे दोस्ती करेगा तो वही ज़ालिम है"

और फ़रमाता है

يٰاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْالَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّىْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ (الىٰ قوله تعالىٰ) تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ
بِالْمَوَدَّةِ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ط وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ٥
(الىٰ قوله تعالىٰ) لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ج يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ط وَاللّٰهُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ٥ (سوره الممتحنه)

तर्जमा : ऐ ईमान वालों मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ तुम छुपकर उनसे दोस्ती करते हो और तुममे जो ऐसा करेगा वह ज़रूर सीधी राह से बहका, तुम्हारे रिशते और तुम्हारे बच्चे तुम्हें कुछ नफ़ा न देगें। क़यामत के दिन तुममें और तुम्हारे प्यारों में जुदाई डाल देगा कि तुममें एक दूसरे के कुछ काम न आ सकेगा और अल्लाह तुम्हारे आमाल को देख रहा है।

और फ़रमाता है

وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ٥ (سوره توبه)

तर्जमा : जो तुममें उनसे दोस्ती करेगा तो बेशक वह उन्हीं में से है। बेशक अल्लाह हिदायत नहीं करता ज़ालिमों को।

पहली दो आयतों में तो उनसे दोस्ती करने वालों को ज़ालिम व गुमराह ही फ़रमाया था इस आयते करीमा ने बिल्कुल तस्फ़ीया फ़रमा दिया कि जो उनसे दोस्ती रखे वह भी उन्हीं में से है, उन्हीं की तरह काफ़िर है, उनके साथ एक रस्सी में बांधा जाएगा, और वह कोड़ा भी याद रखें कि तुम छुप-छुप कर उनसे मेल रखते हो और वह तुम्हारे छुपे ज़ाहिर सब को ख़ूब जानता हूँ। अब वह रस्सी भी सुन लीजिए जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान-ए-अक़दस में गुस्ताख़ी करने वाले बांधे जाएंगें। वल अयाज़ुबिल्लाहि तआला।

तुम्हारा रब अज़्ज़ावजल्ला फ़रमाता है

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيمٌ ٥ (سوره توبه)

तर्जमा : वह जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ईज़ा देते हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

और फ़रमाता है

اِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ٥

(سوره الاحزاب)

तर्जमा : बेशक जो अल्लाह व रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को ईज़ा देते हैं उन पर अल्लाह की लानत है दुनिया व आख़रत में और अल्लाह ने उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है।

अल्लाह अज़्ज़ावजल्ला ईज़ा (तकलीफ़) से पाक है उसे कौन ईज़ा दे सकता है मगर उसने अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी को अपनी ईज़ा फ़रमाया। इन अयतों से उस शख़्स पर जो

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम के गुस्ताख़ों से महब्बत का बर्ताव करे, सात कोड़े साबित हुए :-

(1) वह ज़ालिम है।

(2) गुमराह है।

(3) काफ़िर है।

(4) उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(5) वह आख़रत में ज़लील ओ ख़्वार होगा।

(6) उसने अल्लाह वाहिद कहहार को ईज़ा (तकलीफ़) दी।

(7) उस पर दोनों जहान में ख़ुदा की लानत है। वल अयाज़ुबिल्लाह तआ़ाला।

ऐ मुसलमानों! ऐ मुसलमानों! ऐ उम्मते सय्यदुल इन्स वल ज़िन्न! (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ख़ुदारा ज़रा इन्साफ़ करो, वह सात बेहतर हैं जो उन लोगों से यक लख़्ते-ए-इलाक़ा कर देने पर मिलते हैं (यानी अल्लाह व रसूल के दुश्मन से सम्बन्ध विच्छेद पर मिलते हैं) कि दिल में ईमान जम जाए, अल्लाह मददगार हो, जन्नत मक़ाम हो, अल्लाह वालों में शुमार हो, मुरादें मिलें, ख़ुदा तुझसे राज़ी हो, तू ख़ुदा से राज़ी हो या यह सात भले हैं जो इन लोगों से ताल्लुक़ लगा रहने पर पड़ेंगें कि ज़ालिम, गुमराह, काफ़िर, जहन्नमी हो, आख़रत में ख़्वार हो, ख़ुदा को ईज़ा दे, ख़ुदा दोनों जहान में लानत करे। कौन कह सकता है कि यह सात अच्छे हैं, कौन कह सकता है कि वह सात छोड़ने के हैं मगर जाने बिरादर ख़ाली यह कह देना तो काम नहीं देता वहाँ तो इम्तहान की ठहरी है अभी आयत सुन चुके क्या इस भुलावे में हो कि बस ज़ुबान से कहकर छूट जाओगे इम्तहान न होगा?

हाँ यही इम्तहान है

देखो यह अल्लाह वाहिद कहहार की तरफ़ से तुम्हारी जाँच है --- देखो वह फ़रमा रहा है कि रिश्ते इलाक़े

क़यामत में काम न आएंगे मुझ से तोड़कर किससे जोड़ते हो --- देखो वह फ़रमा रहा है कि मैं ग़ाफ़िल नहीं, मैं बेख़बर नहीं तुम्हारे आमाल देख रहा हूँ, तुम्हारे अक़वाल सुन रहा हूं, तुम्हारे दिलों की हालत से ख़बरदार हूँ --- देखो बेपरवाही न करो, पराए पीछे अपनी आक़बत न बिगाड़ो अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मुक़ाबिल ज़िद से काम न लो --- देखो वह तुम्हें अपने सख़्त अज़ाब से डराता है, उसके अज़ाब से कहीं पनाह नहीं --- देखो वह तुम्हें अपनी रह़मत की तरफ़ बुलाता है, बे उसकी रहमत से कहीं निबाह नहीं --- देखो गुनाह तो निरे होते हैं जिन पर अज़ाब का इस्तहक़ाक़ हो मगर ईमान नहीं जाता, अज़ाब होकर ख़्वाह रब की रह़मत ह़बीब की शफ़ाअत से बेअज़ाब ही छुटकारा हो जाएगा या हो सकता है मगर मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम का मक़ाम है उनकी अज़्मत उनकी महब्बत मदारे ईमान है .क़ुरआन मजीद की आयतें सुन चुके कि जो इस मुआमले में कमी करे उस पर दोनों जहान में ख़ुदा की लानत है --- देखो जब ईमान गया फिर अबदलअबाद (यानी हमेशा के लिए) तक कभी किसी तरह हरगिज़ अज़ाबे शदीद से रिहाई नहीं होगी; गुस्ताख़ी करने वाले जिनका तुम यहाँ कुछ पास लिहाज़ करो वहाँ अपनी भुगत रहे होंगे, तुम्हें बचाने न आएंगे और आयें तो क्या कर सकते हैं फिर ऐसों का लिहाज़ करके अपनी जान को हमेशा-2 ग़ज़बे जब्बार व अज़ाबे नार में फंसा देना क्या अक़्ल की बात है --- लिल्लाह-2 ज़रा देर को अल्लाह व रसूल के सिवा सबसे नज़र उठाकर आँखें बन्द करो और गर्दन झुकाकर अपने आपको अल्लाह वाह़िद क़ह्हार के सामने हाज़िर समझो और निरे ख़ालिस सच्चे इसलामी दिल के साथ मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि वसल्लम की अज़ीम अज़मत, बलन्द इज़्ज़त, रफ़ी वजाहत जो उनके रब ने उन्हे बख़्शी और उनकी ताज़ीम उनकी तौक़ीर पर ईमान व इसलाम की बुनयाद रखी उसे दिल में जमा कर इन्साफ़ व ईमान से कहो क्या जिसने कहा कि शैतान की वुसअत नस से साबित हुई फख़्रेआलम की वुसअते इल्म की कौन सी नस क़तई है उसने मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी न की? क्या उसने इबलीस लईन के इल्म को रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के इल्मे अक़दस पर न बढ़ाया क्या वह रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की वुसअते इल्म से काफ़िर होकर शैतान की वुसअते इल्म पर ईमान न लाया। मुसलमानों ख़ुद उसी बदगो से इतना कह देखो कि ओ इल्म में शैतान के हमसर (बराबर), देखो तो वह बुरा मानता है या नहीं हालांकि उसे तो इल्म में शैतान से कम भी न कहा बल्कि शैतान के बराबर ही बताया फिर कम कहना क्या तौहीन न होगी और अगर वह अपनी बात पालने को इस पर नागवारी ज़ाहिर न करे अगरचे दिल में क़तअन नागवार मानेगा तो उसे छोड़िए और किसी मुअज़्ज़म से कह देखिए और पूरा ही इम्तहान मक़सूद हो तो क्या कचहरी में जाकर अपने किसी हाकिम को इन्हीं लफ़्ज़ों से ताबीर कर सकते हैं। देखिए अभी-2 खुला जाता है कि तौहीन हुई और बेशक हुई फिर क्या रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तौहीन करना कुफ़्र नहीं, ज़ुरूर है और बिलयक़ीन है। क्या जिसने शैतान की वुसअते इल्म को नस से साबित मानकर हुज़ूरे अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के लिए वुसअते इल्म मानने वाले को कहा तमाम नुसूस को रद्द करके एक शिर्क साबित करता है और कहा शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है उसने इबलीस

लईन को ख़ुदा का शरीक माना या नहीं। ज़ुरूर माना कि जो बात मख़लूक़ में एक के लिए साबित करना शिर्क होगी वह जिस किसी के लिए साबित की जाए क़तअन शिर्क ही रहेगी कि ख़ुदा का शरीक कोई नहीं हो सकता, जब रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के लिए यह वुसअते इल्म माननी शिर्क ठहराई जिसमें कोई हिस्सा ईमान का नहीं तो ज़ुरूर इतनी वुसअत ख़ुदा को वह ख़ास सिफ़त हुई जिसको ख़ुदाई लाज़िम है जब तो नबी के लिए उसका मानने वाला काफ़िर मुशरिक हुआ और उसने वही वुसअत वही सिफ़त ख़ुद अपने मुँह इबलीस के लिए साबित मानी तो साफ़–2 शैतान को ख़ुदा का शरीक ठहरा दिया। मुसलमानों क्या यह अल्लाह अज़्ज़ावजल्ला और उसके रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम दोनों की तौहीन न हुई? ज़ुरूर हुई अल्लाह की तौहीन तो ज़ाहिर है कि उसका शरीक बनाना वह भी किसे? इबलीस लईन को। और रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तौहीन यूँ कि इबलीस का मरतबा इतना बढ़ा दिया कि वह ख़ुदा की ख़ास सिफ़त में हिस्सेदार है और यह उससे ऐसे महरूम कि उन के लिए साबित मानो तो मुश्रिक हो जाओ। मुसलमानों क्या ख़ुदा व रसूल की तौहीन करने वाला काफ़िर नहीं? ज़ुरूर है क्या जिसने कहा कि बाज़ उलूमे ग़ैबिया मुराद हैं तो इस में हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की क्या तख़सीस है ऐसा इल्मे ग़ैब ज़ैद व उमर बल्कि हर सबी व मजनून बल्कि जमी हैवानात व बहाएम के लिए भी हासिल है क्या उसने मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को सरीह गाली न दी। क्या नबीए करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को इतना ही इल्मे ग़ैब दिया गया था जितना हर पागल और हर चौपाए को हासिल है।

मुसलमान! मुसलमान! ऐ मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के उम्मती तुझे अपने दीन व ईमान का वास्ता क्या इस नापाक मलऊन गाली के सरीह गाली होने में तुझे कुछ शुबा गुज़र सकता है? मआज़ अल्लाह कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अज़मत तेरे दिल से ऐसी निकल गई है कि शदीद गाली में भी उनकी तौहीन न जाने और अगर अब भी तुझे ऐतबार न आए तो ख़ुद उन्हीं गुस्ताख़ों से पूछ देख कि तुम्हें और तुम्हारे उस्तादों और पीरों को कह सकते हैं कि ऐ फ़लाँ तुझे इतना ही इल्म है जितना सुअर को है तेरे उस्ताद को ऐसा ही इल्म था जैसा कुत्ते को है तेरे पीर को इसी क़द्र इल्म था जिस क़द्र गधे को है, या मुख़्तसर तौर पर इतना ही हो कि ओ इल्म में उल्लू, गधे, कुत्ते, सुअर के हमसरों (बराबर) लो देखो तो उसमें अपने उस्ताद व पीर की तौहीन समझते हैं या नहीं? क़तअन समझेंगें और क़ाबू पायें तो सर हो जायें फिर क्या सबब है कि जो कलमा उनके हक़ में तौहीन है मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तौहीन न हो। क्या मआज़ अल्लाह उनकी अज़मत उनसे भी गई गुज़री है? क्या इसी का नाम ईमान है? हाशा लिल्लाह। हाशा लिल्लाह।

क़ुरआने पाक की आयात जो कुछ शुरु में और कुछ आख़िर में इस किताब में गुज़रीं और पाक हदीसें जो बताई गईं उनमें साफ़-2 मुसलमानों को बदमज़हबों बिलख़ुसूस वहाबियों से पूरी तरह ख़बरदार कर दिया गया अब आगे अमल आपको करना है मेरी अल्लाह तबारक व तआला से यह दुआ है कि हमें और आपको बदमज़हबों से दूर रहने की तौफ़ीक़ दे और हमारा व आपका ख़ातमा अहले सुन्नत वल जमात के मज़हब-ए-हक़ पर हो। आमीन, सुम्मा आमीन, अल्लाहुम्मा आमीन।

इस किताब के ज़रिए सबसे पहले आपको ईमान की अहमियत बताई गई और यह बताया गया कि ईमान सलामत तो सब बेहतर ईमान गया तो सब बरबाद और अल्लाह के अज़ाब से बेईमान को कहीं छुटकारा नहीं फिर उन हदीसें से साबित उन भविष्यवाणियों को बताया गया जो बदमज़हब फ़िरक़ों के बारे में हैं और फिर संक्षेप में उन फ़िरक़ों का इतिहास बताया गया फिर इस बात का सुबूत पेश किया गया कि देवबन्दी वहाबी फ़िरक़े बदमज़हब और मुरतद हैं और सुबूत में उनकी लिखी किताबों की फ़ोटो कापी भी इस किताब में लगा दी गई और साथ ही साथ यह चैलेंज भी दिया गया कि अगर किसी को शक हो तो वह उन किताबों को बाज़ार से ख़रीद कर उन इबारात को देखे और इत्मिनान कर ले कि वाक़ई बात सच्ची है। यह भी बताया गया कि यह मौलवियों की ज़ाती लड़ाई न होकर इस बात की लड़ाई है कि बदमज़हब फ़िरक़े अल्लाह व रसूल की तौहीन करने की वजह से काफ़िर व मुरतद हैं और यह भी समझा दिया गया कि यह इख़्तेलाफ़ात (मतभेद) नियाज़–नज़्र, फ़ातहा या मज़ारात पर हाज़री के नहीं बल्कि इस बात के हैं कि ये लोग अल्लाह रसूल के बद–गो और रसूल की तौहीन करने वाले हैं लिहाज़ा इस्लाम से ख़रिज और मुरतद है। यह भी बताया गया कि वो ग़लत बातें यानी सुन्नियों की बदआमालियाँ जो बहुतेरे सुन्नी बराबर कर रहे है वह सुन्नियों को नहीं करना चाहिए कि वो बातें सुन्नी आलिमों ने ख़ुद ही मना की हैं।

इन सब बातों के बताने के बाद यह ईमान अफ़रोज़ राय पेश की गई कि वह लोग जो वाक़ई में बद्मज़हब, गुमराह, अल्लाह रसूल की तौहीन करने वाले हैं चाहे वह कितने भी नेक नज़र आयें उनसे बचना कितना .ज़ुरूरी है। उनके पीछे नमाज़ का क्या हुक्म है, उनसे शादी बियाह न

करना क्यूँ .ज़ुरूरी है। उनसे मिलने जुलने के क्या नुक़सानात हैं और न मिलने के क्या-क्या फ़ायदे और फिर इसी बात पर किताब को ख़त्म किया गया और यह बात आज कोई नई नहीं बरसों से हमारे उल्मा बताते आ रहे हैं मगर देखा यह गया है कि सब कुछ जानने के बाद भी कुछ लोग उनसे बचते नहीं और दुनिया के लालच में उनसे मिलते जुलते है और तरह तरह के बहाने बनाकर दूसरों से भी बहस करते हैं और कहते हैं कि किसी से मिलने जुलने से रोकना नहीं चाहिए और कहते हैं कि यह सुन्नियों को हर वक़्त बस यही पड़ी रहती है इसके अलावा कोई बात नहीं करते। अरे सोचो ज़रा वह आलिम जो तुम्हें इन बेदीनों से होशयार कर रहा है तुम्हारा दोस्त है या दुश्मन, उसे तुमसे क्या लालच है जो ऐसा कर रहा है। लोग इल्ज़ाम लगाते है कि सुंन्नी अमल की बात नहीं बताते बस यही कहते रहते हैं कि वहाबी ऐसे वहाबी वैसे। पहली बात तो यह ग़लत है कि सुन्नी आलिम अमल करने के लिए नहीं कहते हाँ यह .ज़ुरूर है कि सुन्नी आलिम सबसे ज़्यादा अहमियत इसी बात को देते है कि इनसे दूर रहो यह अल्लाह रसूल की तौहीन करने वाले हैं मुरतद हैं इनसे दूर रहो नहीं तो तुम्हारा ईमान यह छीन लेंगे और तुम्हें पता भी न चलेगा और जब ईमान ही न रहेगा तो फिर नमाज़ रोज़ा और दूसरी इबादतें कहाँ क़बूल होंगी लिहाज़ा ईमान की अहमिसत बताना बहुत ज़्यादा .ज़ुरूरी है। मैं .ज़ुरूरी समझता हूँ कि इस तरह के बहाने और उनका जवाब दावते फ़िक्र के इस रिवाइज़्ड एडिशन में .ज़ुरूर बढ़ाया जाए। यह बातें कुछ इस तरह हैं :-

कुछ लोग कहते हैं कि हम जब काफ़िरों से मिलते हैं और यह भी काफ़िर हैं तो इनसे मिलने में हर्ज क्या है। इसका जवाब यह है कि इनसे मिलने जुलने को रोकना किसी

ने अपनी तरफ़ से नहीं निकाला बल्कि अल्लाह व उसके रसूल ने इन लोगों से मिलने को मना फ़रमाया। दूसरे यह कि ज़ाहिरी या ख़ालिस काफ़िर से मिलने में दीन का वह नुक़सान नहीं जो इन लोगों से है चूंकि काफ़िर से आप उसे काफ़िर समझ कर मिलते हैं और बदमज़हब को मुसलमान समझने लगते हैं उसकी झूटी नमाज़ और दूसरी झूटी इबादत से बहक जाते हैं। खुला काफ़िर आपको जल्दी दीन का नुक़सान नहीं पहुँचा सकता हाँ दुनयवी नुक़सान पहुँचा सकता है। दुनयवी नुक़सान तो यहीं रह जाना है मगर दीन में अगर नुक़्स आ गया या दीन चला गया तो यह हमेशा का नुक़सान यानी हमेशा के लिए दोज़ख़ में पहुँचाने वाला है। काफ़िर से मिलने जुलने को ऐसा मना न किया गया जैसा कि बदमज़हब से मिलने को किया गया बल्कि काफ़िर से मिलने का बाज़ वक़्त हुक्म है अगर उससे न मिलोगे तो उसे इस्लाम की दावत कैसे दोगे और यूँ ,जुरूरत और अख़लाक़ी तौर पर मिलने का हुक्म भी है और इससे परहेज़ मुहाल। बदमज़हब से मिलना अख़लाक़ नहीं बल्कि बदअख़लाक़ी है। बदमज़हब से न मिलना अख़लाक़ और मिलना बदअख़लाक़ी। इस बात को इस तरह समझइये कि अगर आपके बाप दादा या आपके किसी चहीते को कोई ख़्वामख़्वाह गाली दे और और आप उसके आगे झुके चले जायें, वह आपके माँ बाप को गालियाँ लिखकर लिखकर छापे और आप उससे अख़लाक़ से पेश आते रहें तो दुनिया आप से यही कहेगी कि तेरी ग़ैरत को क्या हो गया है यह कैसा अख़लाक़ है यह तो अच्छा अख़लाक़ नहीं बल्कि अच्छा अख़लाक़ तो यह है कि अपने माँ बाप की इज़्ज़त का ख़्याल करते हुए तू हमेशा के लिए उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दे जो तेरे माँ बाप को बुरा कहे या उसे किसी दुनयवी ग़र्ज़ से अपने

दोस्तों में शुमार करता रहेगा। हाँ अगर किसी मजबूरी की वजह से मिलना भी पड़ जाए तो दिल में नफ़रत रखते हुए बस .जुरूरत के तहत काम से काम रखते हुए मिलो मिसाल के तौर पर अगर तुम्हारे पास कोई बदमज़हब माल ख़रीदने आता है तो बस उससे ख़रीद फ़रोख़्त तक ही तअल्लुक़ रखो। जहाँ तक हो सके उससे माल ख़रीदने से बचो। या मसलन तुम नौकरी में हो और तुम्हारे साथ कोई बदमज़हब काम करता है तो बस काम की हद तक काम रखो उससे ज़ाती तअल्लुक़ की .जुरूरत नहीं। ज़ाती तअल्लुक़ात बढ़ाने में यह नुक़सान साफ़ है कि जब तअल्लुक़ात बढ़ेंगे तो जाना आना बढ़ेगा और उसके घर दावत और मौत में भी जाना पड़ सकता है और मआज़ अल्लाह कहीं किसी बदमज़हब की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ना पड़ जाए जब कि काफ़िर के साथ ऐसा नहीं। इसी तरह से समझो अज़ीज़ों क्या यह अख़लाक़ होगा कि जो तुम्हारे सब कुछ जिनका मरतबा माँ बाप और हर अज़ीज़ से ज़्यादा है, क्या उनको गालियाँ लिख लिखकर छापने वाले से मिलना अख़लाक़ होगा जब तक मालूम न था क़ोई इतनी सख़्त बात न थी आज जब मालूम हो गया कि ये वही लोग हैं जिनके बारे में अल्लाह के हबीब ने पहले ही फ़रमा दिया था कि इनसे दूर रहना तो अब तुम्हारी ग़ैरत क्या कहती है। क्या ऐसे शख़्स से जो उन्हें बुरा कहे जो तमसे इतनी महब्बत करते हैं जितनी तुम अपने आप से भी नहीं करते तुम्हें मिलना अच्छा लगता है। तुम गुनाह पर गुनाह करते रहते हो वह (हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) तुम्हें हर दम याद करें तुम्हारी माफ़ी के लिए रब तबारक व तआ़ला से बराबर अर्ज़ करें ऐ अल्लाह इन्हें माफ़ फ़रमा दे, जो रातों को तुम्हारे लिए रोते थे, जो तुम्हें दोज़ख़ से बचाऐंगे जन्नत में ले जायेंगे क्या उनके बग़ैर कोई जन्नत में जा

सकेगा ज़रा अपने आमाल तो देखो क्या तुम्हारे आमाल इस क़ाबिल हैं। क्या वह इस बात से ख़ुश हो सकते हैं क्या अल्लाह इस बात से ख़ुश होगा कि तुम अल्लाह और अल्लाह के हबीब की शान घटाने वाले से अख़लाक़ से पेश आते रहो हरगिज़ नहीं बल्कि जितना तुम बदमज़हब से महब्बत करोगे तो अल्लाह का ग़ज़ब तुम पर हो सकता है अल्लाह के अज़ाब और ग़ज़ब से कहीं छुटकारा नहीं। अल्लाह हमें और आपको माफ़ फ़रमाए।

कुछ लोग कहते हैं कि आपस में इत्तेहाद (एकता) क़ायम करो क्यूँकि दूसरे काफ़िरों की नज़र में सब मुसलमान हैं और तुम्हारे इस तिफ़रक़े का वह फ़ायदा उठायेंगे। बात समझ में आती है लेकिन याद रखो ईसाई, यहूदी और मुशरिक भी ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं तुम्हारे इस तिफ़रक़ों को और इन फ़िरक़े कराने में ईसाईयों और यहूदियों का भी हाथ है। इन बदमज़हब फ़िरक़ों में बाज़ लोग इसाईयों और यहूदियों के ऐजेन्ट हैं। क्या इन ऐजेन्टों और बाग़ियों से इत्तेहाद हो सकता है? क्या दुश्मन के जासूस को पहचान लेने के बाद उसे फ़ौज में रखा जाता है या उस ग़द्दार को मौत के घाट उतार दिया जाता है? देखो जो शख़्स तुम्हारी दौलत या माल हथियाने की ख़ातिर तुमसे दोस्ती करता या मसलन डाकूओं का कोई साथी तुम्हारे घर में इस लिए आता जाता है कि तुम्हारे भेद पा ले और मौक़ा पाते ही तुम्हें लूट ले तो क्या तुम उसे घर में आने दोगे और अख़लाक़ से पेश आओगे, क्या तुम्हारी बहन बेटी पर बुरी नज़र रखने वाले को घर में आता रहने दोगे क्या ऐसों से भी इत्तेहाद करोगे। शायद ऐसे से इत्तेहाद से तुम्हें वह नुक़सान न पहुँचे जो दीन के डाकू से पहुँचने वाला है कि वह तुम्हें कभी न कभी यह .ज़ुरूर कहेगा कि यह नाजाइज़ वह नाजाइज़ बल्कि .क़ुरआन

व हदीस से झूटी तावीलें भी देगा गर्ज़ यह कि वह कभी भी तुम पर हमला करके तुम्हारे ईमान को ख़तरे में डाल देगा और शायद छीन ही लेगा। सोचो ज़रा क्या इस इत्तेहाद से फ़ायदा पहुँचेगा या नुक़सान। तो ऐसे इत्तेहाद से क्या फ़ायदा जिसमें नुक़सान ही नुक़सान है फ़ायदा नहीं पहुँचने वाला बल्कि अगर सारे बदमज़हबों को अलग कर दिया जाए और तुम्हारी जमाअत छोटी भी रह जाए तो वह छोटी जमाअत भी काफ़ी है और सही इत्तेहाद वही है, हाँ इत्तेहाद .ज़ुरूरी वहाँ है और बहुत .ज़ुरूरी है जहाँ दुनयवी इख़्तेलाफ़ात हों या ऐसे इख़्तेलाफ़ात हों जिनका दीन से तअल्लुक़ नहीं। हाँ एक सूरत है इत्तेहाद की वह यह कि ये बदमज़हब फ़िरक़े इस बात से बाज़ आ जायें जो लड़ाई की अस्ल जड़ है यानी अल्लाह रसूल की तौहीन करना छोड़ दें सच्चे दिल से तौबा करें और उन किताबों को छापना बन्द कर दें जिनमें तौहीन की गई बल्कि सिर्फ़ उन इबारतों और उन नाजाइज़ बातों को अपनी किताबों से निकाल दें और सच्चे दिल से तौबा करें तो इत्तेहाद हो सकता है और इत्तेहाद की सिर्फ़ यही सूरत है।

कुछ लोगों को जानकारी नहीं होती और बाद में जानकारी होती है और मुहल्ले, रिश्तेदारी, पुरानी दोस्ती या किसी और बिना पर .क़ुरबत होने की वजह से मेल जोल के दौरान उन पर उस बदमज़हब दोस्त के ऐहसान होते हैं और वह इस बिना पर उससे तअल्लुक़ात नहीं ख़त्म कर पाते कि फ़लाँ ने हमारे साथ यह यह ऐहसान किया या हमारे गिरे वक़्त में साथ दिया या पैसे या माल से हमारी मदद की या हमारा कोई काम करवाया या अब भी कभी कभी मदद करता है। गर्ज़ बाज़ वक़्त उसके ऐहसानों में दबे हुए होते हैं और उससे तअल्लुक़ात ख़त्म नहीं कर पाते और कहते यह हैं कि किसी के ऐहसान को भूलना नहीं चाहिए अल्लाह ने

भी ऐहसान का बदला देने का हुक्म दिया है। बात सही मालूम होती है मगर ज़रा सोचो अगर तुम्हें उस ऐहसान करने वाले से इतनी ही महब्बत है कि तुम भी उसकी हर मदद करने को तैयार हो और उसे कोई नुक़सान पहुँचाना चाहता है तो तुम उसकी हर मदद करने को तैयार हो तो क्या तुमको यह गवारा है कि वह अल्लाह व रसूल की तौहीन करके दोज़ख़ में जाए यह तो एहसान का बदला या महब्बत का तक़ाज़ा नहीं हुआ। उसे महब्बत से समझाओ कि तुम ग़लत राह पर हो सही माअनी में यही ऐहसान का बदला हुआ। वह अगर तुम्हारे समझाने पर न माने और अपनी ही बातों पर अड़ा रहे तो अब ज़रा याद करो अल्लाह के ऐहसानों को क्या उसके ऐहसान ज़्यादा है या अल्लाह व रसूल के। ग़ौर करो एक वक़्त था तुम्हारा वजूद भी न था अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से तुम्हें पैदा फ़रमाया तुम्हें अशरफ़ुल-मख़लूक़ात यानी इन्सान पैदा किया तुम्हें सर से पा तक हज़ारों बल्कि बेगिनती नेअमतों से नवाज़ा ज़रा थोड़ी देर को सोचों इन नअमतों में से वह एक दो नेअमतें वापस ले तो और ग़ौर करो तुम्हें खाना, पानी, कपड़ा, हवा, धूप, रोशनी अंधेरा, इल्म अक़्ल ये सारी नेअमतें और रहमतें कौन दे रहा और किसके सदक़े में मिल रहीं हैं। बिन मांगे तुम्हें हज़ारो नअमतें मिल रही हैं क्या तुम सुबह उठ कर हर नेअमतें मांगते हो? अब ज़रा सोचो किसका ऐहसान चुकाना ज़्यादा .ज़ुरूरी है और किस तरह चुका सकोगे क्या अल्लाह और उसके हबीब का ऐहसान चुका सकोगे? क्या सच्चे ऐहसान करने वाले के मुक़ाबले तुम उस झूटे और फ़ानी ऐहसान करने वाले को तरजीह दोगे? अल्लाह और रसूल का ऐहसान सच्चा और बिना किसी लालच के है और उसके ऐहसान में उसका वही लालच कि तुम्हारा ईमान छीन ले जाए। अगर न भी ईमान

छीन सका फिर भी वह तुम्हारे ऊपर इस लिए ऐहसान करता है कि कल तुम भी उसके साथ कुछ करोगे और अल्लाह व रसूल तुम पर ऐहसान किसी वजह से नहीं करते। दुनिया जानती है और मुसलमान का तो अक़ीदा है कि अल्लाह बेनियाज़ और बेपरवाह है उसे किसी चीज़ की हाजत नहीं, वह जो करता है तुम्हारे भले के लिए ही करता है। बदमज़ब के ऐहसान अगर हैं भी तो वह फ़ानी और ख़त्म होने वाले और झूटे हैं और अल्लाह का ऐहसान हमेशा से हुआ और बदतर से बदतर गुनाह करने पर भी जारी है और हमेशा होता ही रहेगा कभी ख़त्म न होगा तो क्या उस झूटे और ख़त्म होने वाले ऐहसान का लिहाज़ करोगे या जो होता रहा है और हमेशा होता रहेगा उसका लिहाज़ करोगे बेशक अल्लाह का ऐहसान सबसे बड़ा है। देखो तुम अल्लाह के ऐहसान का बदला चुका नहीं पाते न चुका सकोगे फिर भी उसके ऐहसानात जारी रहेंगे मगर ज़रा बदमज़हब के उन झूटे ऐहसानो से मुँह फेर कर तो देखो वह कैसा नाराज़ होता है या अगर नाराज़ न भी हो तो दिल ही दिल में क्या सोचेगा क्यूँकि यह इन्सान की फ़ितरत है कि जो उसके साथ बेरुख़ी करता है तो वह उससे दिल ही दिल में बुरा जानने लगता है। इस पर भी अगर वह तुमसे मुँह फेरे तो समझ लो कि वह अब किसी नई तरकीब से तुम्हारे साथ और ऐहसान करके तुम्हारे ईमान की फ़िक्र में और ज़्यादा लग जाएगा।

लोग तअल्लुक़ात इस लिए बढ़ाते हैं कि वह तअल्लुक़ात काम आयेंगे और होता भी ऐसा है कि तअल्लुक़ात दुनयवी काम भी आते हैं और यह अच्छी बात है लेकिन क्या तअल्लुक़ात हर ऐरे ग़ैरे से बढ़ाए जाते हैं, क्या तअल्लुक़ात इस लिए बढ़ाए जाते हैं कि हमारा दो पैसे बच जायेंगे चाहे उससे बड़ा नुक़सान हो जाए। अगर कोई

किसी बुरे आदमी से तअल्लुक़ात बढ़ाना चाहता है तो लोग उसे यही समझाते हैं कि देखो इससे दूर रहो, इस वक़्त तो यह तुम्हारे काम आ रहा है मगर आने वाले वक़्त में यह तुम्हें नुक़सान पहुँचा सकता है और होता भी यही है बल्कि फ़ितरत भी यही है कि तअल्लुक़ात के पीछे हर शख़्स का कोई न कोई मतलब होता है और यहाँ तअल्लुक़ात बढ़ाने में उसका मक़सद तुम्हारा ईमान छीनना और तुम्हारा मक़सद दुनिया का कोई फ़ानी काम। तो दुनिया के फ़ानी काम की ख़ातिर अपनी आक़बत और अपने ईमान को ख़तरे में न डालो। तअल्लुक़ात बढ़ाओ बेशक बढ़ाओ मगर उससे जिससे तुम्हारा दुनयवी काम भी निकले और दीन का नुक़सान भी न हो और अल्लाह व रसूल भी राज़ी हों। अल्लाह व रसूल को नाराज़ करके तुमने तअल्लुक़ात बढ़ाए और मान लो तुम्हारे दुनयवी काम भी हो गए क्या तुम्हें इससे फ़ायदा हुआ कि तुमने ज़रा से फ़ायदे की ख़ातिर अल्लाह और उसके रसूल से नाराज़गी मोल ले ली। यही तो इम्तहान है कि अल्लाह तआ़ला देखना चाहता है कि तुम हमारी ख़ातिर हमारे दुश्मन को जो आज तुम्हें ज़्यादा अज़ीज़ हो गया है छोड़ते हो या नहीं।

आज कुछ पीर लोग भी ऐसे हैं जो अपनी पीरी मुरीदी चमकाने के लिए यह कहते हैं कि मियाँ इन चक्करों से दूर रहो यह आलिमों मौलवियों की बातें हैं फ़क़ीर के पास तो सब तरह के लोग आते हैं फ़क़ीर से इन बातों का क्या लेना देना। याद रखो अल्लाह व रसूल के दुश्मन को दोस्त समझने वाला पीर झूटा पीर है हाँ अगर वह पीर उसे समझा सकता है या अपनी बातनी ताक़त से उसे राह पर ला सकता है तो ऐसा करना बेहतर है मगर अवाम से यह कहना कि सब से मिलो यह सही नहीं। कुछ पीर या कुछ लोग यह कहते

हैं कि इनसे दूर मत रहो बल्कि इन्हें समझाओ इनसे मिल जुल कर इन्हें पास बुला कर समझाओ, उनको महब्बत से अपनाओ। बात सही मालूम होती है मगर यह समझाना उनके लिए है जो वाक़ई समझना चाहते हैं या थोड़े बहुत बहके हुए हैं यानी सुन्नियों की बदआमालियों को देखकर उनसे बदज़न हो गए है, आम सुन्नियों की हरकतें मसलन मुहरमदारी या लूट खसोट को देखकर ग़लत अक़ीदा क़ायम कर बैठे हैं कि सुन्नी बुरे हैं ऐसे लोगों को पास बुलाकर महब्बत से समझाना चाहिए बल्कि ऐसा करना .ज़ुरूरी है।

आख़िर में वही बात फिर कहना है कि गुनाहों के अज़ाब से कभी न कभी छुटकारा मिल जाएगा मगर अगर ईमान छिन गया तो कभी छुटकारा न मिलेगा। अल्लाह तआ़ला तमाम सुन्नियों को अपने महबूब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के सदक़े बदमहज़हबों की सोहबत से बचाए और दुनिया से साथ ईमान के उठाए। आमीन।

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "यक रोज़ा" के कवर की फोटो कापी



मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "यक रोज़ा" के सफ़ा 17 की फ़ोटो कापी

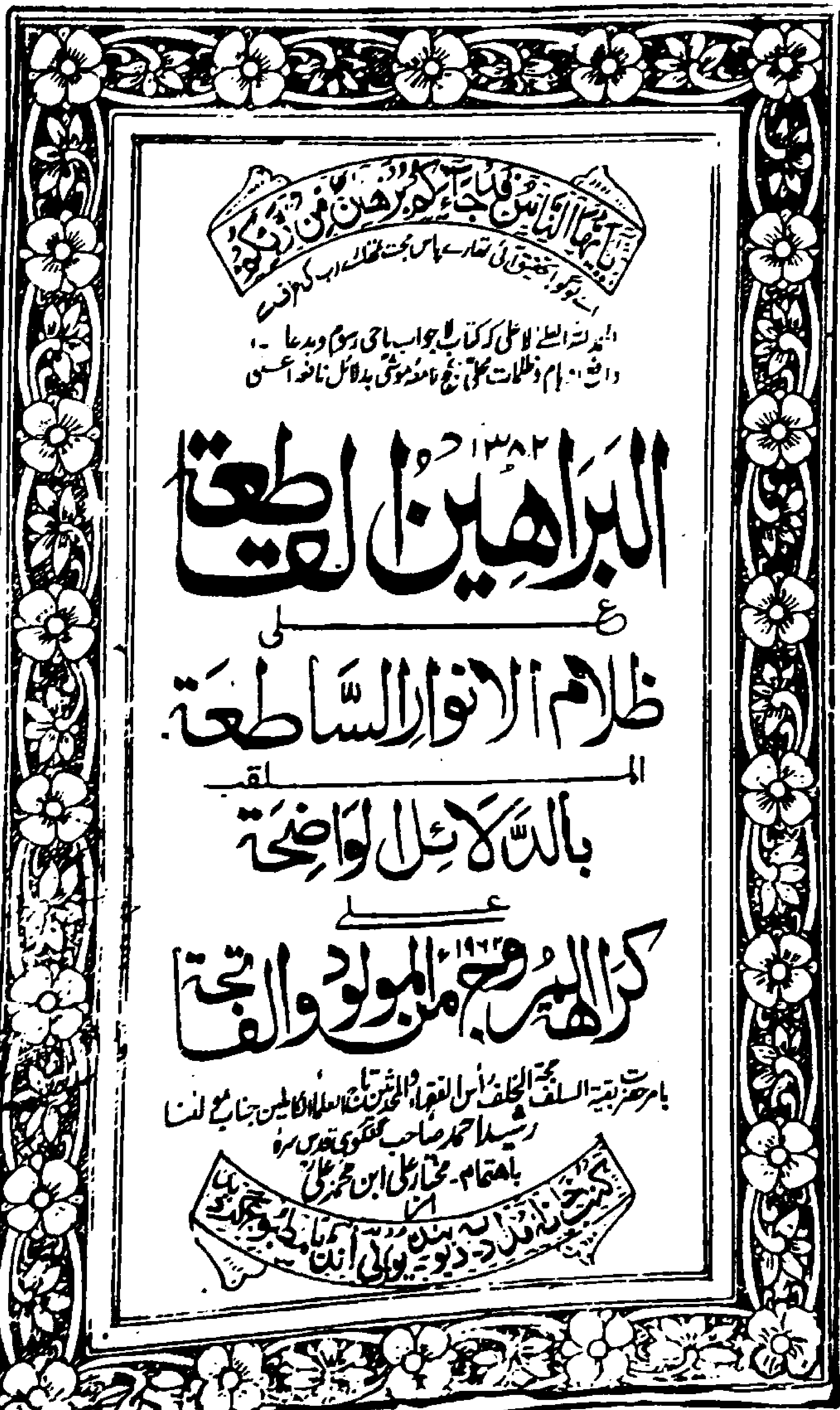
१٧

اقول - اگر قول به وقوعِ مثلِ مذکور تجویز کذبِ مسطور است معاذ الله از آنکه
ما قول بامکانِ مثلِ مذکور پس مستلزم امکانِ کذبِ مذکور نیست - علاوه بریں
قول که به امکان مثل مذکور بایں وجه هم می تواند شد که اصلا اختیار عدم وقوع آن اصلا واقع
نشده و عدم اختیار به عدم وقوع مثل مذکور بل به عدم اختیار بقرآن مجید راسا از اصل
ممکن نیست داخل تحت قدرت الٰهیه کما قال الله تعالیٰ عزوجل قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ
عَلَیْکُمْ وَلَآ اَدْرٰکُمْ بِهٖ ، و نیز بعد اختیار ممکن است که ایشان را فراموش گردانیده شود پس
قول بامکان وجود مثل اصلا منتج به تکذیب نصی از نصوص نگردد و سلب قرآن مجید بعد
انزال ممکن است داخل قدرت الٰهیه کما قال الله تعالیٰ وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِیْٓ اَوْحَیْنَآ
اِلَیْکَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَکَ بِهٖ عَلَیْنَا وَکِیْلًا۔

قوله - و هو محال لانه نقص والنقص علیه تعالیٰ محال -

اقول اگر مراد از محال ممتنع لذاته است که تحت قدرت الٰهیه داخل نیست
پس لا نسلم که کذب مذکور محال بمعنی مسطور باشد چه عقد قضیه غیر مطابقه للواقع و القای
آن بر ملائکه و انبیاء خارج از قدرت الٰهیه نیست والا لازم آید که قدرت انسانی ازید
از قدرت ربانی باشد چه عقد قضیه غیر مطابقه للواقع و القای آن بر مخاطبین در قدرت
اکثر افراد انسانی هست . کذب مذکور را منافی حکمت او است پس ممتنع بالغیر است -
و عدم کذب را از کمالات حضرت حق سبحانه می شمارند و او را جل شانه بآن مدح می
سه بخلاف اخرس و جماد که ایشان را کسی بعدم کذب مدح نمی کند - و نیز ظاهر است

मौ. ख़लील अहमद अम्बेठी की किताब "बरहाने क़ातेअ" के कवर की फ़ोटो कापी



يٰاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاۗءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ

اے لوگو! تحقیق آئی تمہارے پاس حجت تمہارے رب کی طرف سے

الحمد للہ کہ کتاب لاجواب ماحی رسوم و بدعات

دافع اوہام و ظلمات محلّی بہ حجج قاطعہ موشّی بدلائل ناصعہ

١٣٨٢ھ

البراهين القاطعة

على

ظلام الانوار الساطعة

الملقب

بالدلائل الواضحة

على

كراهة المروج من المولد والفاتحة

١٩٦٣ء

بامر حضرت بقیۃ السلف حجۃ الخلف راس الفقہاء والمحدثین تاج العلماء الکاملین جناب مولانا

رشید احمد صاحب گنگوہی قدس سرہ

باہتمام محمد مختار علی ابن محمد علی

کتب خانہ امدادیہ دیوبند یوپی انڈیا

मौ. ख़लील अहमद अम्बेठी की किताब "बरहाने क़ातेअ" के सफ़ा 6 की फ़ोटो कापी

۶

دکھائے کروڑوں درود اس امام رسل پر کہ روح پرفتوح پر جس کے فیض تعلیم و ہدایت سے ہر زندہ دل اپنے مردگانِ غمناک کی ارواح کو فاتحہ و درود
سے راحت رساں ہے ربنا اغفر لنا ولاخواننا الذین سبقونا بالایمان ولا تجعل فی قلوبنا غلا للذین امنوا ربنا انک رؤف الرحیم
اما بعد: اہل اسلام کو اپنی اس حالت نازک پر رونا چاہیئے کہ اسلام ایک گل پژمردہ کی طرح سموم اختلافات بیجا سے آناً فاناً کمہلایا جاتا
ہے۔ اور عناد و فساد ایک تند باد شدید ظلمانی کی طرح ہر طرف سے اٹھا چلا آتا ہے نہ زبانیں تھمیں نہ سینے صاف ہیں سیکڑوں مفسد ہیں
ہزاروں اختلاف کوئی یہ کہتا ہے کہ جناب باری عزاسمہ جس کی شان عالی یہ ہے ومن اصدق من اللہ حدیثا اللہ تعالیٰ سے زیادہ سچا کون

کرکے متمدح کرکے داد چاہتا ہے اور بریں فہم و دانش و علم چند جہلائی تحسین پر اپنے جامہ میں نہیں سماتا چنانچہ خود تحریر رسالہ گواہ اس دعوے
کی ہے لہذا خوب روشن ہو گیا اور مثل آفتاب نیمروز کے واضح ہوا کہ مؤلف اس کا مولوی عبدالسمیع رامپوری ہے جو میرٹھ میں بر مکان
شیخ الٰہی بخش مرحوم رہتا ہے کہ اس نے ابتدائے طفلی سے رسائل مبتدعین کو جمع کرکے یہ ملکہ واہیہ بہم پہنچایا، اور باوجودیکہ خدمت جناب مولانا احمد
علی صاحب سہارنپوری اور مولوی سعادت علی صاحب سہارنپوری اور مولوی شیخ محمد صاحب تھانوی -------- اور مولوی
محمد قاسم صاحب نانوتوی رحمۃ اللہ علیہم میں یہ بضاعۃ مزجاۃ علم بے فہم کی حاصل کی تھی ان کو بھی مع علماء متقدم و متاخر کے نشانِ سہام
طعن و شتم بنایا، اس وجہ سے زیادہ تر موجب ملال و تعجب کا ہوا، چونکہ جہلاء ضلال اس کتاب پر ناز کرتے ہیں اور خود مؤلف بھی اس تار
عنکبوت کو حصن حصین تصور کرتا ہے اس کی حقیقت جہل کے کشف کو ضروری جانا تاکہ مؤلف کو مبلغ اپنے علم و فہم کا واضح ہو جائے
اور ہر ناظر پر کیفیت مؤلف کی اور استعداد و لیاقت اس کی ہویدا ہو جائے، اور اس رد انوار ساطعہ کا نام البراہین القاطعہ
علی ظلام الانوار الساطعہ رکھا گیا اور اس رد میں لفظ مؤلف سے مراد مولوی عبدالسمیع رامپوری ہووے گا اور ....
مجیب وہ عالم کہ جس کے جواب پر مؤلف نے بحث شروع کی ہے اور اس جواب میں مقاصد مضامین اس رسالہ کا ابطال اور حاصل
مراد مؤلف کا قمع کیا گیا ہے اور اس کے الفاظ و عبارت کی اغلاط اور ہفوات و خرافات کا جواب اور سب و طعن کا انتقام اور جملہ جملہ کا
افساد و ابطال بسبب خوف و طوالت کے ترک کیا گیا ہے، الا ماشاء اللہ تعالیٰ پس بغور ملاحظہ طلب ہے کہ مؤلف کے جملہ مطالب کو نیست
و نابود اور جمیع قبائح و مفاسد کو باختصار تمام شائع و مشہور باذنہ تعالیٰ کر دیا گیا ہے کہ تھوڑی فہم والا بھی اس تالیف و مؤلف کی قدر پر
مطلع ہو جائے گا۔ واللہ ولی التوفیق و علیہ اعتمادی و بیدہ ازمۃ الحق والتحقیق۔ قولہ کوئی کہتا ہے کہ جناب باری عزاسمہ الخ اقول۔
مسئلہ خلف وعید قدماء میں مختلف فیہ ہے امکان کذب کا مسئلہ تو اب جدید کسی نے نہیں نکالا بلکہ قدماء میں اختلاف ہوا ہے کہ خلف
وعید آیا جائز ہے کہ نہیں چنانچہ در مختار میں ہے ھل یجوز الخلف فی الوعید فظاھر ما فی المواقف والمقاصد ان الاشاعرۃ قائلون
بجوازہ لانہ لا یعد نقصا بل جودا وکرما الخ (خلف وعید جائز ہے کہ نہیں ظاہر تو یہ ہے اشاعرہ اس کے قائل ہیں ...... اس وجہ سے
کہ وہ اس کو نقص نہیں شمار کرتے بلکہ بخشش اور کرم تصور کرتے ہیں) ایسا ہی دیگر کتب میں لکھا ہے پس اس پر طعن کرنا مؤلف کا پہلے مشائخ
پر طعن کرنا ہے اور اس پر تعجب کرنا محض لاعلمی ہے ہاں حق تعالیٰ کو اپنی مخلوق کی مثل پیدا کرنے پر قادر نہ ہونا آج تک کسی اہل علم نے نہ
کیا تھا جیسا کہ اس شیز دہم صدی کے مبتدعین نے کہا ہے اور عجز قادر مطلق کے معتقد ہوئے اور ان اللہ علی کل شیئ قدیر کے خلاف
عقیدہ ٹھہرایا اس پر مؤلف کو افسوس اور غیرت نہ ہوئی پس یہ باجرالاتق دیدہ ہے کہ تمام امت کے خلاف حق تعالیٰ کے عجز پر عقیدہ ٹھہرا

۱ اختلاف کی آندھی ۲ اہل بدعت ۳ گمان کو پسند کرنے والے ۴ گمراہ جاہل ۵ مکڑی کا جال ۶ مضبوط قلعہ ۷ ظاہر شدہ

۱ واضح ۲ تیرہویں صدی کا ۳ اقرار کرنے والے

मौ. ख़लील अहमद अम्बेठी की किताब "बराहीने क़ातेअ" के सफ़ा 55 की फोटो कापी

۵۵

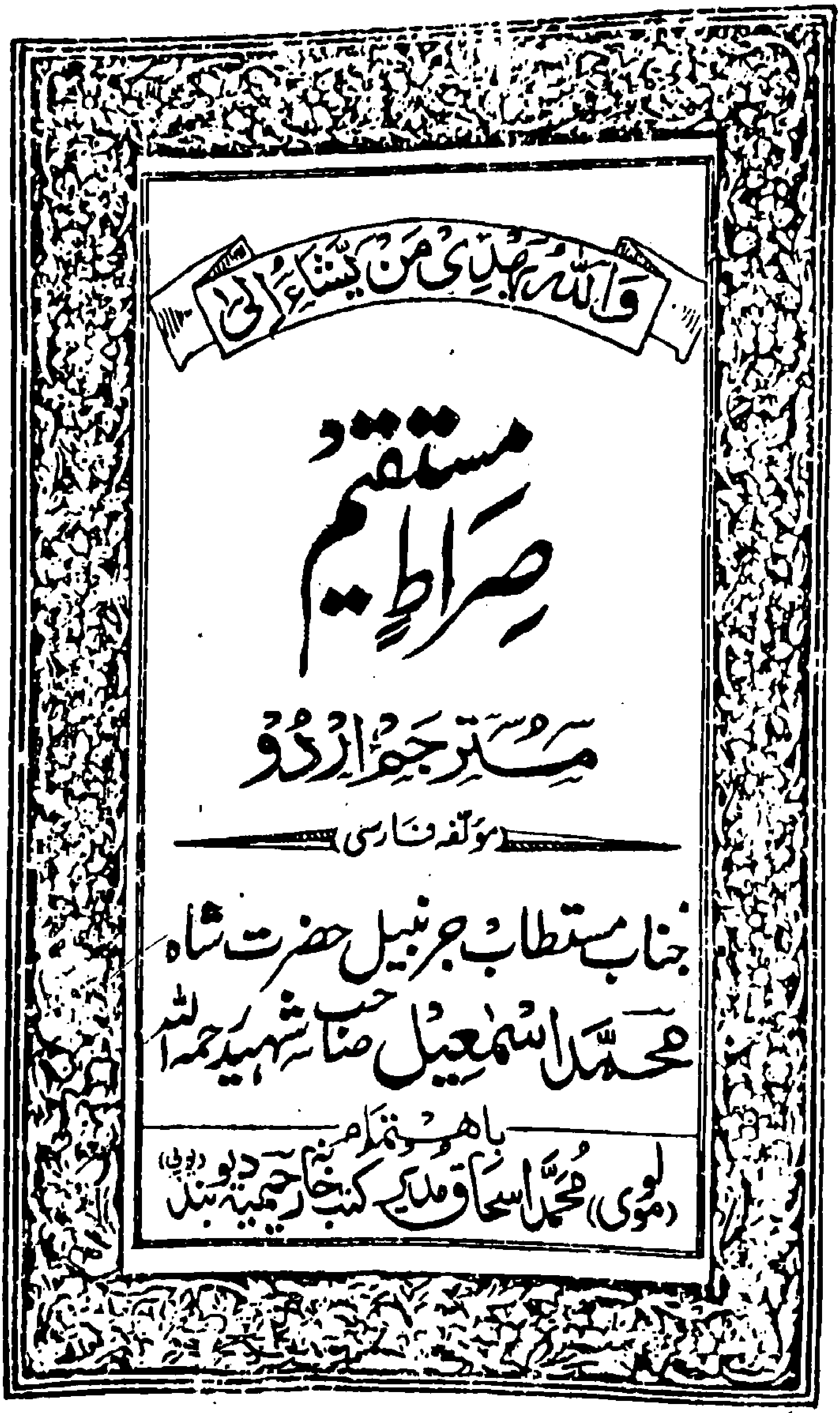
اور آدمی مرتے ہیں ہر جگہ ملک الموت موجود ہے اور مشکوٰۃ میں ہے کہ ملک الموت وقت موت کے سرہانے ہوتا ہے مومن کے ہیں اور کافر کے
بھی یہ حدیث طویل ہے اور قاضی ثناء اللہ نے تذکرۃ الموتیٰ میں نقل کیا ہے ایک حدیث کو طبرانی اور ابن منده اس میں یہ بھی ہے کہ ملک الموت
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے بیان کیا کہ ایسا کوئی گھر نہیں نیک یا بد آدمیوں کا مسکن طرف ہو کہ تو ہر روز رات اور دن دیکھا کرتا ہوں اور
ہر چھوٹے بڑے کو ایسا پہچانتا ہوں کہ وہ خود بھی اپنے کو اس قدر نہیں پہچانتے ان احادیث سے معلوم ہوا کہ ملک الموت ہر جگہ حاضر ہے بلکہ
ملک الموت علیہ السلام تو ایک فرشتہ مقرب ہیں، دیکھو شیطان ہر جگہ موجود ہے، درمختار کے مسائل نماز میں لکھا ہے کہ شیطان اولاد آدم
کے ساتھ دن کو رہتا ہے اور اس کا بیٹا آدمیوں کے ساتھ رات کو رہتا ہے علامہ شامی نے اس کی شرح میں لکھا ہے کہ شیطان تمام
بنی آدم کے ساتھ رہتا ہے مگر جس کو اللہ نے بچا لیا بعد اس کے لکھا ہے واقدرہ علی ذلک کما اقدر ملک الموت علی نظیر ذلک
یعنی اللہ تعالیٰ نے شیطان کو اس بات کی قدرت دیدی ہے جس طرح ملک الموت کو سب جگہ موجود ہونے پر قادر کر دیا انتہیٰ کلامہ
اب عالم اجسام محسوسہ میں اس کی مثال سنیے، کوئی آدمی مشرق سے مغرب تک آبادی دنیا کی سیر کرے جہاں جاوے گا چاند کو موجود
پاوے گا اور سورج کو بھی پاوے گا پھر اگر وہ کہے کہ ایک چاند سب جگہ موجود ہے اور ایک سورج سب جگہ موجود رہتا ہے تو علاوہ سے
چاہیے وہ کافر ہو جاوے کہ اس نے چاند کو ہر جگہ موجود کہا حالانکہ تحقیق یہ ہے کہ نہ وہ مشرک ہے نہ کافر خاصہ مسلمان ہے پس اسی

حضرت خضر کو ملا اس سے زیادہ پر قادر نہ تھے اور حضرت موسیٰ کو باوجود افضلیت کے نہ ملا تو وہ حضرت خضر مفضول کی برابر اس علم
مکاشفہ کو پیدا نہ کر سکے پس آفتاب و ماہتاب کو جو اس ہیئت و وسعت نور پر بنایا اور ملک الموت اور شیطان کو جو یہ وسعت علم دی
اس کا حال مشاہدہ اور نصوص قطعیہ سے معلوم ہوا اب کسی افضل کو قیاس کرکے اس میں بھی مثل یا زائد اس مفضول سے ثابت
کرنا کسی عاقل ذی علم کا کام نہیں اول تو عقائد کے مسائل قیاسی نہیں کہ قیاس سے ثابت ہو جاویں بلکہ قطعی ہیں قطعیات نصوص سے
ثابت ہوتے ہیں کہ خبر واحد بھی یہاں مفید نہیں لہٰذا اس کا اثبات اس وقت قابل التفات ہو کہ مؤلف قطعیات سے اس کو ثابت
کرے اور خلاف تمام امت کے ایک قیاس فاسدہ سے عقیدہ خلق کا اگر فاسد کیا چاہے تو کب قابل التفات ہوگا دوسرے قرآن و
حدیث سے اس کے خلاف ثابت ہے پس اس کا خلاف کس طرح قبول ہو سکتا ہے بلکہ یہ سب قول مؤلف کا مردود ہوگا خود فخر عالم
علیہ السلام فرماتے ہیں واللہ لا ادری ما یفعل بی ولا بکم الحدیث اور شیخ عبد الحق روایت کرتے ہیں کہ مجھ کو دیوار کے پیچھے کا بھی علم
نہیں اور مجلس نکاح کا مسئلہ بھی بحر الرائق وغیرہ کتب سے لکھا گیا تیسرے اگر افضلیت ہی موجب اس کی ہے تو تمام مسلمان اگرچہ فاسق
ہوں اور خود مؤلف بھی شیطان سے افضل ہیں تو مؤلف سب عوام میں بسبب افضلیت کے شیطان سے زیادہ نہیں تو اس کی برابر تو
علم محیط بزعم خود ثابت کر دیوے اور مؤلف خود اپنے زعم سے بہت بڑا اکمل الایمان ہے تو شیطان سے ضرور افضل ہو کر اعلم من
الشیطان ہوگا معاذ اللہ، مؤلف کے ایسے جہل پر تعجب بھی ہوتا ہے اور رنج بھی ہوتا ہے کہ ایسی نالائق بات منہ سے نکالنا کس قدر
دور از علم و عقل ہے۔ الحاصل غور کرنا چاہیے کہ شیطان و ملک الموت کا حال دیکھ کر علم محیط زمین کا فخر عالم کو خلاف نصوص قطعیہ کے
بلا دلیل محض قیاس فاسدہ سے ثابت کرنا شرک نہیں تو کون سا ایمان کا حصہ ہے شیطان و ملک الموت کو یہ وسعت نص سے ثابت
ہوئی، فخر عالم کی وسعت علم کی کونسی نص قطعی ہے کہ جس سے تمام نصوص کو رد کرکے ایک شرک ثابت کرتا ہے اور خاصہ کی تعریف تہذیب

۱ جس پر کسی کو فضیلت حاصل ہو گئے مرید دلائل سے!

ملا کہ شیطان سے بڑا عالم

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "सिराते मुस्तक़ीम" के कवर की फ़ोटो कापी


واللہ یہدی من یشاء الیٰ

صراط مستقیم

مترجم اردو

مؤلفہ فارسی

جناب مستطاب جرنیل حضرت شاہ
محمد اسمٰعیل صاحب شہید رحمہ اللہ

باہتمام
مولوی محمد اسحاق مالک کتب خانہ رحیمیہ دیوبند (یوپی)

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "सिराते मुस्तक़ीम" के फ़ारसी एडीशन के सफ़ा 86 की फ़ोटो कापी

تحمل نمی شد بلکه آنهم منجمله کملات نماز میگردید زیراکه آن تدبیر از جمله ملهمات حضرت حق در دل ایشان بوده بخلاف
کسی که خود متوجه تدبیر امری از امور دنیه یا دنیویه شود بر هر کس آن مقام منکشف میشود و میداند که بمقتضای ظلمات

بعضها فوق بعض از وسوسه زنا خیال مجامعت زوجه خود بهتر است و صرف همت بسوی شیخ و امثال آن

از معظمین گو جناب رسالتمآب باشند بچندین مرتبه بدتر از استغراق در صورت گاو و خر خود است که خیال آن
با تعظیم و اجلال بسویدای دل انسان میچسپد بخلاف خیال گاو و خر که نه آن قدر چسپیدگی می بود و نه تعظیم بلکه مهان
و محقر می بود و این تعظیم و اجلال غیر که در نماز ملحوظ و مقصود میشود بشرک میکشد بالجمله منظور بیان تفاوت مراتب وساو
س است انسان را باید که آگاه شده ذبح عائق از قصد حضوری حق منجم و بس نگردد و غرض درین مقام علاج این محل
است بر ضعیف الفهم برکس ناکس تا به سد پس اگر وسوسه از قبیل قبیح ترین وساوس بود و بس خود بالتجای تمام ما کند
هر چند هر خیر منوط بفضل الهی است لیکن در بعض چیزها اسباب ظاهری چندان دخل ندارد و حصول آن برهه بفضل
الهی است و بس از این قبیل است دفع این وساوس و بخدمت شیخ خود عرض نماید یا که مرشد از وی انا ترین کار
است بتدبیری مفید تر شاید آگاه سازد و دعا خواهد کرد و اگر وسوسه از طرف نفس یا از طرف شیطان بسوی دیگر
مذکور است پس علاجش آن است که اگر مثلا در فرض ظهر مثلا بعد از فراغ از فرض و سنت در خلوت و تنهائی یعنی
جدا یک وسوسه کرده شانزده رکعت بخواند اگر در تمام رکعات خیالات منتشر مانده بود و اگر در تمام رکعات خیالات
نمانده بعض بحضور و خالی از خیالات گزرانیده و بعض آن بلوث بآلودگی خیالات گشته پس مقابل هر رکعات
که در آن وسوسه شده چهار رکعت مقرره نموده بحساب آن بخواند و تدارک نماز عصر بعد مغرب کند و همچنین مغرب
بعشا و علی هذا القیاس عشا و تلاوت فجر بعد طلوع آفتاب کند تا نفل تا شروع نشود و چون این کار بر نفس شاق است
البته از آن باز خواهد آمد و خود را باز خواهد داشت و چونکه نفس بر کاری محمد بر آید شکر الهی بسیار بجا آورد و بمدارات نفس
مکافات آن بترفیه و آرام دادن و خواهش او بموجب شرع بوی رسانیدن بعمل آرد و اگر تهجد از ملتزم آن بسبب
تسویل نفسانی یا شیطانی قضا شود صباح آن روزه دارد و اگر در روزه مخلی از مخلات شرعیه نفس شیطانی بسوی
کار آرد تنبیه آن شب بیداری همه شب با آن روزه پیوسته است میباید و شیطان چون لنا قریود ما ایس خیزد
نفس را شریک خود می سازد تا دو ما ای در آید تنبیه تا دیر که نفس و شیطان هر دو از شرارت باز می مانند بلکه

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "सिराते मुस्तक़ीम" के उर्दू एडीशन के सफ़ा 126 की फ़ोटो कापी

مدعا کا ملا دینا مخلص لوگوں کے خلوص کے مخالف ہے اور خود بخود مسائل کا دل میں آجانا۔ اور ارواح اور فرشتوں کا کشف ان فاخرہ خلعتوں میں سے ہے جو حضور حق میں مستغرق با اخلاص لوگوں کو نہایت مہربانیوں کی وجہ سے عطا ہوا کرتے ہیں پس یہ ان کے حق میں ایک ایسا کمال ہے کہ شان کے نوصہ پر منجم ہو لیا ہے اور ان کی نماز بھی عبادت ہے کہ اس کا ثمرہ آنکھوں کے سامنے آگیا ہے۔

اس حاجتوں کی وہ دعائیں جو بالکل نمازی سے پروردگار بے نیاز کی بارگاہ میں حاجت روائی کے منحصر ہونے کے اعتقاد کے باعث عین نماز میں صادر ہوتی ہیں اسی قبیل سے ہیں یعنی نماز کے لئے کمال ہے گو وہ قلیل حاجتیں معاش ہی کے متعلق ہوں اور اپنی حاجتوں کے بارہ میں نفس کے ساتھ مشورے کرنا قبیح وسوسوں اور نماز کے نقصان میں سے ہے اور جو کچھ حضرت عمر رضی اللہ عنہ سے منقول ہے کہ نماز میں سامان لشکر کی تدبیر کیا کرتے تھے سو اس قصہ سے مغرور ہو کر اپنی نماز کو تباہ نہ کرنا چاہیئے ؎

کار پاکاں را قیاس از خود مگیر   گرچہ ماند در نوشتن شیر و شیر

(یعنی پاک لوگوں کے کاموں کو اپنے اوپر قیاس نہ کرو اگرچہ شیر و شیر (دودھ) لکھنے میں ایک ہیں)

حضرت خضر علیہ السلام کے لئے تو کشتی کے توڑنے اور بے گناہ بچے کو مار ڈالنے میں ثواب تھا اور دوسروں کے لئے نہایت درجہ کا گناہ ہے جناب فاروق رضی اللہ عنہ کا وہ درجہ تھا کہ لشکر کی تیاری آپ کی نماز میں خلل انداز نہ ہوتی تھی بلکہ وہ بھی نماز کے کامل کرنے کا ذریعہ ہو جاتی تھی اس لئے کہ وہ تدبیر اللہ جل شانہ کے الہامات میں سے آپ کے دل میں ڈالی جاتی تھی اور جو شخص خود کسی امر کی تدبیر کی طرف متوجہ ہو خواہ وہ امر دینی ہو یا دنیاوی بالکل اس کے برخلاف ہے اور اس شخص پر یہ مقام کھل جاتا ہے وہ جانتا ہے ہاں بمقتضائے

ظُلُمٰتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ   اندھیرے ہیں جو ایسے ہیں بعض سے بعض اوپر ہیں۔

زنا کے وسوسے سے اپنی بی بی کی مجامعت کا خیال بہتر ہے اور شیخ یا اسی جیسے اور بزرگوں کی طرف خواہ جناب رسالت مآب ہی ہوں۔ اپنی ہمت کو لگا دینا اپنے بیل اور گدھے کی صورت میں مستغرق ہونے سے برا ہے۔ کیونکہ شیخ کا خیال تو تعظیم اور بزرگی کے ساتھ انسان کے دل میں چپٹ جاتا ہے اور بیل اور گدھے کے خیال کو نہ تو اس قدر چسپیدگی ہوتی ہے اور نہ تعظیم بلکہ حقیر اور ذلیل ہوتا ہے اور غیر کی یہ تعظیم اور بزرگی جو نماز میں ملحوظ ہو وہ شرک کی طرف کھینچ کر لے جاتی ہے۔

मौ. अशरफ़ अली थानवी की किताब "हिफ़ज़ुल ईमान" के कवर की फ़ोटो कापी

ہر قسم کی کتب تصانیف علمائے دیوبند خریدتے وقت مولوی سید احمد مالک کتبخانہ اعزازیہ دیوبند کو یاد رکھیے

اَللّٰہُ یَحْکُمُ بَیْنَکُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ

حفظ الایمان

مع

بسط البنان

مصنفہ

حضرت مولانا محمد اشرف علی صاحب تھانوی قدس سرہٗ

جس کو

مولوی سید احمد مالک کتب خانہ اعزازیہ دیوبند نے

باہتمام خاص اپنے

کتبخانہ اعزازیہ دیوبند ضلع سہارنپور میں طبع کرایا

ہر قسم کی درسی و غیر درسی کتب قرآن مجید حمائل مترجم و غیر مترجم قاعدے سپارے ملنے کا پتہ: مولوی سید احمد مالک کتبخانہ اعزازیہ

मौ. अशरफ़ अली थानवी की किताब "हिफ़्ज़ुल ईमान" के सफ़ा 8 की फोटो कापी

یہاں خاصیت دلیل مراد نہیں۔ فافہم واتامل واللہ اعلم فقط
جواب سوال سوم۔ مطلق غیب سے مراد اطلاقات شرعیہ میں وہی غیب ہے جس پر کوئی دلیل
قائم نہ ہو اور اس کے ادراک کے لئے کوئی واسطہ اور سبیل نہ ہو اسی بنا پر لا یعلم من فی السمٰوٰت
والارض الغیب الا اللہ اور ولو کنت اعلم الغیب وغیرہ فرمایا گیا ہے اور جو علم
بواسطہ ہو اس پر غیب کا اطلاق محتاج قرینہ ہے تو بلا قرینہ مخلوق پر علم غیب کا اطلاق موہم شرک ہونے
کی وجہ سے ممنوع و ناجائز ہوگا قرآن مجید میں لفظ راعنا کی ممانعت اور حدیث مسلم میں عبدی
وامتی و ربی کہنے سے نہی۔ اسی وجہ سے وارد ہے اس لئے حضور سرور عالم صلی اللہ علیہ وسلم پر عالم
الغیب کا اطلاق جائز نہ ہوگا اور اگر ایسی تاویل سے ان الفاظ کا اطلاق جائز ہو تو خالق و رازق
وغیرہا بتاویل اسناد الی السبب کے بھی اطلاق کرنا جائز ہوگا کیونکہ آپ ایجاد و بقائے عالم کے
سبب ہیں بلکہ خدا بمعنی مالک اور معبود بمعنی مطاع کہنا بھی درست ہوگا اور جس طرح آپ پر عالم
الغیب کا اطلاق اس تاویل خاص سے جائز ہوگا اسی طرح دوسری تاویل سے اس صفت کی نفی
حق جل وعلا شانہ سے بھی جائز ہوگی یعنی علم غیب بالمعنی الثانی بواسطہ اللہ تعالیٰ کے لئے ثابت نہیں
پس اگر اپنے ذہن میں معنی ثانی کو حاضر کرکے کوئی کہتا پھرے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم عالم الغیب
ہیں اور حق تعالیٰ شانہ عالم الغیب نہیں نعوذ باللہ منہ تو کیا اس کلام کو منہ سے نکالنے کی کوئی عقل
مند دین اجازت دینا گوارا کرسکتا ہے اس بنا پر تو بانوا فقیروں کی تمام بیہودہ صدائیں بھی خلاف
شرع نہ ہوں گی تو شرع کیا ہوا بچوں کا کھیل ہوا کہ جب چاہا بنالیا جب چاہا مٹا دیا پھر یہ کہ آپ
کی ذات مقدسہ پر علم غیب کا حکم کیا جانا اگر بقول زید صحیح ہو تو دریافت طلب یہ امر ہے کہ اس
غیب سے مراد بعض غیب ہے یا کل غیب اگر بعض علوم غیبیہ مراد ہیں تو اس میں حضور کی ہی کیا
تخصیص ہے ایسا علم غیب تو زید و عمرو بلکہ ہر صبی و مجنون بلکہ جمیع حیوانات و بہائم کے لئے بھی
حاصل ہے کیونکہ ہر شخص کو کسی نہ کسی ایسی بات کا علم ہوتا ہے جو دوسرے شخص سے مخفی ہے تو
چاہئے کہ سب کو عالم الغیب کہا جاوے پھر اگر زید اس کا التزام کرلے کہ ہاں میں سب کو عالم الغیب
کہوں گا تو پھر علم غیب کو منجملہ کمالات نبویہ کیوں شمار کیا جاتا ہے جس امر میں مومن بلکہ انسان کی بھی
خصوصیت نہ ہو وہ کمالات نبویہ سے کب ہو سکتا ہے اور اگر التزام نہ کیا جاوے تو نبی غیر نبی میں وجہ
فرق بیان کرنا ضرور ہے اور اگر تمام علوم غیب مراد ہیں اس طرح کہ اس کی ایک فرد بھی خارج نہ
رہے تو اس کا بطلان دلیل نقلی و عقلی سے ثابت ہے دلائل نقلیہ بیشمار ہیں خود قرآن مجید میں آیت

मौ. क़ासिम नानूतवी की किताब "तहज़ीरुन्नास" के कवर की फोटो कापी

انہ ھو الحکیم الخبیر

الحمد للہ والمنۃ کہ یہ رسالہ مؤلفہ جناب مولینا محمد قاسم صاحب نانوتوی

مزیل التباس در دفع اثر ابن عباس ہے

۱۳۵۵ھ

تحذیر الناس

باہتمام

احقر محمد علی مالک کتبخانہ امدادیہ دیوبند

بمبئی جوب برقی پریس دہلی سے طبع کرا کر

کتبخانہ امدادیہ دیوبند سے شائع کیا

یہ رسالہ اور ہر قسم کی اسلامی دینی و انگریزی کتب نہایت ہی ارزاں قیمت پر ملتی ہیں کتب خانہ امدادیہ دیوبند

मौ. क़ासिम नानूतवी की किताब "तहज़ीरुन्नास" के सफ़ा 2 की फोटो कापी

تحذیر الناس ۲

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

کیا فرماتے ہیں علماء دین اس باب میں کہ زید نے بہ تتبع ایک عالم کے جس کی تصدیق ایک مطلق علیمین
نے بھی کی تھی دربارۂ قول ابن عباسؓ جو درمنثور وغیرہ میں ہے ان اللہ خلق سبع ارضین
فی کل ارض آدم کآدمکم ونوح کنوحکم وابراہیم کابراہیمکم وعیسیٰ کعیساکم ونبی کنبیکم
کے یہ عبارت تحریر کی کہ میرا یہ عقیدہ ہے کہ حدیث مذکور صحیح اور معتبر ہے اور زمین کے طبقات
جدا جدا ہیں اور ہر طبقے میں مخلوق الٰہی ہے اور حدیث مذکور سے ہر طبقے میں انبیاء کا ہونا معلوم
ہوتا ہے لیکن اگرچہ ایک ایک خاتم کا ہونا طبقات باقیہ میں ثابت ہوتا ہے مگر اس کا مثل ہونا ہمارے
خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وسلم کے ثابت نہیں اور نہ یہ میرا عقیدہ ہے کہ وہ خاتم مماثل آنحضرت صلعم کے ہوں اسلئے
کہ اولاد آدم جس کا ذکر وَلَقَدْ کَرَّمْنَا بَنِیْ آدَمَ میں ہے اور سب مخلوقات سے افضل ہے وہ اسی طبقے
کے آدم کی اولاد ہے بالاجماع اور ہمارے حضرت صلعم سب اولاد آدم سے افضل ہیں تو بلاشبہ
آپ تمام مخلوقات سے افضل ہوئے پس دوسرے طبقات کے خاتم جو مخلوقات میں داخل ہیں آپ کے
مماثل کسی طرح نہیں ہو سکتے انتہی اور باوجود اس تحریر کے زید یہ کہتا ہے کہ اگر شرع سے اس کے
خلاف ثابت ہوگا تو میں اسی کو مان لوں گا میرا اصرار اس تحریر پہ نہیں پس علمائے شرع سے استفسار
یہ ہے کہ الفاظ حدیث ان معنوں کو محتمل ہیں یا نہیں اور زید بوجہ اس تحریر کے کافر یا فاسق یا خارج
اہل سنت وجماعت سے ہوگا یا نہیں بینوا توجروا ۔

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہٖ خَاتَمِ النَّبِیِّیْنَ وَسَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَآلِہٖ
وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ بعد حمد وصلوٰۃ کے قبل عرض جواب یہ گزارش ہے کہ اول معنی خاتم النبیین معلوم

لے یعنی آیۂ کریمہ میں جو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو خاتم النبیین فرمایا گیا ہے اول اس کے معنی سمجھنے چاہئیں ۱۲

मौ. क़ासिम नानूतवी की किताब "तहज़ीरुन्नास" के सफ़ा 3 की फ़ोटो कापी

کہنے چاہئیں تا کہ ہم جواب میں کچھ وقت نہ ہو سو عوام کے خیال میں تو رسول اللہ صلعم کا خاتم ہونا
بایں معنی ہے کہ آپکا زمانہ انبیاء سابق کے زمانے کے بعد اور آپ سب میں آخر نبی ہیں مگر اہل فہم پر
روشن ہوگا کہ تقدم یا تاخر زمانہ میں بالذات کچھ فضیلت نہیں پھر مقام مدح میں وَلٰکِنْ رَّسُوْلَ اللّٰہِ
وَخَاتَمَ النَّبِیّٖنَ فرمانا اس صورت میں کیونکر صحیح ہو سکتا ہے ہاں اگر اس وصف کو اوصاف مدح
میں سے نہ کہئے اور اس مقام کو مقام مدح قرار نہ دیجئے تو البتہ خاتمیت باعتبار تاخر زمانی صحیح
ہو سکتی ہے مگر میں جانتا ہوں کہ اہل اسلام میں سے کسیکو یہ بات گوارا نہ ہوگی کہ اس میں ایک تو خدا
کی جانب نعوذ باللہ زیادہ گوئی کا وہم ہے آخر اس وصف میں اور قد و قامت و شکل و رنگ و حسب و
نسب و سکونت وغیرہ اوصاف میں جنکو نبوت یا اور فضائل میں کچھ دخل نہیں کیا فرق ہے جو اسکو
ذکر کیا اوروں کو ذکر نہ کیا دوسرے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی جانب نقصان قدر کا احتمال کیونکہ
اہل کمال کے کمالات ذکر کیا کرتے ہیں اور ایسے ویسے لوگوں کے اس قسم کے احوال بیان کیا کرتے
ہیں اعتبار نہو تو تاریخوں کو دیکھ لیجئے باقی یہ احتمال کہ یہ دین آخری دین تھا اس لئے سد باب اتباع
مدعیان نبوت کیا ہے جو کل جھوٹے دعوی کر کے خلائق کو گمراہ کریں گے البتہ فی حد ذاتہ قابل لحاظ ہے
پر جملہ مَا کَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِکُمْ اور جملہ وَلٰکِنْ رَّسُوْلَ اللّٰہِ وَخَاتَمَ النَّبِیّٖنَ میں کیا تناسب
تھا جو ایک کو دوسرے پر عطف کیا اور ایک کو مستدرک منہ اور دوسرے کو استدراک قرار دیا اور
ظاہر ہے کہ اس قسم کی بے ربطی اور بے ارتباطی خدا کے کلام معجز نظام میں متصور نہیں اگر سد باب مذکور منظور
ہی تھا تو اس کے لئے اور بیسیوں موقع تھے بلکہ بنائے خاتمیت اور بات پر ہے جس سے تاخر زمانی اور
سد باب مذکور خود بخود لازم آجاتا ہے اور فضیلت نبوی دوبالا ہو جاتی ہے تفصیل اس اجمال کی یہ ہے
کہ موصوف بالعرض کا قصہ موصوف بالذات پر ختم ہو جاتا ہے جیسے موصوف بالعرض کا وصف موصوف
بالذات سے مکتسب ہوتا ہے موصوف بالذات کا وصف جسکا ذاتی ہونا اور غیر مکتسب من الغیر ہونا
لفظ بالذات ہی سے مفہوم ہے کسی غیر سے مکتسب اور مستعار نہیں ہوتا مثال درکار ہو تو لیجئے زمین
و کہسار اور در و دیوار کا نور اگر آفتاب کا فیض ہے تو آفتاب کا نور کسی اور کا فیض نہیں اور ہماری
غرض وصف ذاتی ہونے سے اتنی ہی تھی بایں ہمہ یہ وصف اگر آفتاب کا ذاتی نہیں تو جسکا تم کہو
وہی موصوف بالذات ہوگا اور اس کا نور ذاتی ہوگا کسی اور سے مکتسب اور کسی اور کا فیض نہ ہوگا
الغرض یہ بات بدیہی ہے کہ موصوف بالذات سے آگے سلسلہ ختم ہو جاتا ہے چنانچہ خدا کے لئے کسی اور
خدا کے نہونے کی وجہ اگر ہے تو یہی ہے یعنی ممکنات کا وجود اور کمالات وجود سب عرضی یعنے بالعرض

ف۱ یعنی عوام کا خیال تو یہ ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم خاتم النبیین بایں معنی ہیں کہ آپ سب آخری ... یعنی یہ عوام کا خیال

मौ. क़ासिम नानूतवी की किताब "तहज़ीरुन्नास" के सफ़ा 13 की फोटो कापी

تحذیر الناس ۱۳

ہونا ثابت ہوتا ہے اور آپ کا اس وصف میں کسی کی طرف محتاج نہ ہونا انبیاء گذشتہ ہوں یا
کوئی اور اسی طرح اگر فرض کیجئے آپ کے زمانہ میں بھی اس زمین میں یا کسی اور زمین میں یا آسمان میں
کوئی نبی ہو تو وہ بھی اس وصف نبوت میں آپ ہی کا محتاج ہوگا اور اس کا سلسلہ نبوت بہر طور
آپ پر ختم ہوگا اور کیوں نہ ہو عمل کا سلسلہ علم پر ختم ہوتا ہے جب علم ممکن للبشر ہی ختم ہو لیا تو پھر سلسلہ
علم و عمل کیا چلے غرض اختتام اگر بایں معنی تجویز کیا جاوے جو میں نے عرض کیا تو آپ کا خاتم ہونا انبیاء گذشتہ
ہی کی نسبت خاص نہ ہوگا بلکہ اگر بالفرض آپ کے زمانے میں بھی کہیں اور کوئی نبی ہو جب بھی آپ کا
خاتم ہونا بدستور باقی رہتا ہے مگر جیسے اطلاق خاتم النبیین اس بات کو مقتضی ہے کہ اس لفظ میں کچھ تاویل نہ
کیجئے اور علی العموم تمام انبیاء کا خاتم کہئے اسی طرح اطلاق [illegible] اللہ الذی خلق سبع
سموات ومن الارض مثلہن یتنزل الامر بینہن ...... [illegible] اس بات کو
مقتضی ہے کہ سوا [illegible] زمین [illegible] سے مفہوم ہے اور ان
دونوں لفظوں کا ذکر کرنا اس باب میں [illegible]
[illegible] ذاتی یا [illegible] ذاتی [illegible]
اور [illegible] ہو جاتے ہیں [illegible]
[illegible] اور [illegible] ہونے میں [illegible] حدیث مرفوع سے [illegible]
ہوتی ہے جس سے [illegible] معلوم ہوا ہے صاحب مشکوٰۃ نے [illegible] امام ترمذی [illegible]
[illegible] میں اس کو روایت کیا ہے اور ترمذی میں کتاب التفسیر میں سورۂ حدید کی
تفسیر میں روایت کیا ہے وہ حدیث یہ ہے۔ وعن ابی ہریرۃ قال بینما نبی اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] قال فانہا الرقیع سقف محفوظ وموج مکفوف ثم
قال ہل تدرون ما بینکم وبینہا [illegible] خمسمائۃ عام ثم
قال ہل تدرون ما فوق ذلک [illegible] خمسمائۃ سنۃ
ثم قال ذلک [illegible] سموات [illegible] ثم قال ہل تدرون ما فوق
ذلک [illegible] ثم قال ہل

मौ. क़ासिम नानूतवी की किताब "तहज़ीरुन्नास" के सफ़ा 24 की फ़ोटो कापी

اب اتنا ہی اقرار کریں بلکہ اس سے بھی بڑھ کر انکار میں تو تکذیب رسول اللہ صلعم کا کھٹکا ہی تھا اقرار
میں تو کچھ اندیشہ ہی نہیں بلکہ سات زمینوں کی جگہ اگر لاکھ دو لاکھ اور بھی اسی طرح کی زمینیں تسلیم کیجئے
تو میں ذمہ کش ہوں کہ انکار سے زیادہ اس اقرار میں کچھ وقعت نہ ہوگی نہ کسی آیۃ کا تعارض نہ کسی
حدیث سے معارضہ رہا۔ اثر معلوم اس میں سات سے زیادہ کی نفی نہیں سو جب انکار اثر مذکور کی
باوجود تصحیح ائمہ حدیث یہ جرأت ہے تو اقرار اراضی زائدہ از سبع میں تو کچھ ڈر ہی نہیں علاوہ بریں
بر تقدیر خاتمیت زمانی انکار اثر مذکور میں قدر نبوی صلی اللہ علیہ وسلم کچھ افزائش نہیں ظاہر ہے کہ اگر ایک شہر
آباد ہو اور اس کا ایک شخص حاکم ہو یا سب میں افضل تو بعید اس کے کہ اس شہر کی برابر دوسرا ویسا
ہی شہر آباد کیا جائے اور اس میں بھی ایسا ہی ایک حاکم ہو سب میں افضل تو اس شہر کی آبادی
اور اس کے حاکم کی حکومت یا اس کے نزد فضل کی افضلیت سے حاکم یا افضل شہر اول کی
حکومت یا افضلیت میں کچھ کمی نہ آجائیگی اور اگر وہ صورت تسلیم اور چھ زمینوں کے
وہاں کے آدم و نوح وغیرہم علیہم السلام یہاں کے آدم و نوح علیہم السلام وغیرہم سے زمانہ
سابق میں ہوں تو باوجود مماثلت کلی بھی آپ کی خاتمیت زمانے سے انکار نہ ہو سکے گا جو وہاں
کے محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے مساوات میں کچھ حجت کیجئے ہاں اگر خاتمیت بمعنے اتصاف ذاتی بوصف نبوت
لیجئے جیسا اس ہیچمدان نے عرض کیا ہے تو پھر سوا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور کسی کو افراد مقصود بالخلق میں
سے مماثل نبوی صلی اللہ علیہ وسلم نہیں کہہ سکتے بلکہ اس صورت میں فقط انبیاء کی افراد خارجی ہی پر آپ کی
افضلیت ثابت نہ ہوگی افراد مقدرہ پر بھی آپ کی افضلیت ثابت ہو جائیگی بلکہ اگر بالفرض بعد
زمانہ نبوی صلی اللہ علیہ وسلم بھی کوئی نبی پیدا ہو تو پھر بھی خاتمیت محمدی میں کچھ فرق نہ آئے گا چہ جائیکہ
آپ کے معاصر کسی اور زمین میں یا فرض کیجئے اسی زمین میں کوئی اور نبی تجویز کیا جائے بالجملہ
ثبوت اثر مذکور دونا ثبت خاتمیت سے معارض و مخالف خاتم النبیین نہیں جو یوں کہا جائیگا
یہ اثر شاذ بمعنی مخالف روایۃ ثقات ہے اور اس سے یہ بھی واضح ہو گیا ہوگا کہ حسب زعم منکران
اثر اس اثر میں کوئی علت غامضہ بھی نہیں جو اسی راہ سے انکار صحت کیجئے کیونکہ اول تو امام
بیہقی کا اس اثر کی نسبت صحیح لکھنا ہی اس بات کی دلیل ہے کہ اس میں کوئی علت غامضہ خفیہ
قادح فی الصحۃ نہیں دوسرے شذوذ تھا تو یہی تھا کہ مخالف جملہ خاتم النبیین ہے اور علت تھی
تب بھی یہی تھی اگر اور کوئی آیت یا حدیث ایسی ہی ہوتی جس سے سات سے کم زیادہ زمینوں
کا ہونا یا انبیاء کا کم و بیش ہونا یا نہ ہونا ثابت ہوتا تو کہہ سکتے تھے کہ وجہ شذوذ یہ ہے مگر آج تک

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "तक़्वीयतुल ईमान" के कवर की फ़ोटो कापी

ماشاء اللہ لاقوۃ الا باللہ العلی العظیم

تقویۃ الایمان

مصنفہ

حضرت مولانا شاہ اسماعیل صاحب شہید

(۱)۔۔ تذکیر الاخوان

(۲)۔۔ خط مولوی محمد اسمٰعیل شہیدؒ

(۳)۔۔ فتویٰ درباره تقویۃ الایمان و تذکیر الاخوان

(۴)۔۔ ترجمہ عقائد نامہ شیخ عبدالحق محدث دہلوی

(۵)۔۔ فتویٰ درباره علم غیب

(۶)۔۔ رسالہ حارق الاشرار

(۷)۔۔ رسالہ ہدایت الایمان منظوم (۸)۔۔ شجرۂ ایمانیہ

ناشر

راشد کمپنی دیوبند (یوپی)

[illegible]

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "तक़्वीयतुल ईमान" के सफ़ा 13 की फोटो कापी

۱۳

کل بھائی بولے یا اس کے تئیں بادشاہ کا سا مجرا کرے یا اس کے لئے ایک دن جشن کا ٹھیرا دے اور بادشاہ کی طرح نذر دلوادے یہ تقصیر سب تقصیروں سے بڑی ہے اس کی سزا مقرر اس کو پہنچتی ہے اور جو بادشاہ اس سے غفلت کرے اور ایسوں کو سزا نہ دیوے اس کی بادشاہت میں قصور ہے چنانچہ عقلمند لوگ ایسے بادشاہ کو بے غیرت کہتے ہیں سو اس مالک الملک شہنشاہ غیور سے ڈرا چاہیے کہ پہلے درجے کا زور رکھتا ہے اور ویسی غیرت وہ مشرکین سے کیونکر غفلت کرے گا اور کس طرح ان کو ان کی سزا نہ دیگا۔ اللہ سب مسلمانوں پر رحمت کرے اور ان کو شرک کی آفت سے بچاوے آمین

وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ۔ اور فرمایا اللہ تعالیٰ نے یعنی سورۂ لقمان میں جب کہا لقمان نے اپنے بیٹے کو اور وہ نصیحت کرتا تھا اس کو اے بیٹے میرے مت شریک بنا اللہ کا بیشک شریک بنانا بڑی بے انصافی ہے۔

ف۔ یعنی اللہ صاحب نے لقمان کو عقلمندی دی تھی سو انہوں نے اس سے سمجھا کہ بے انصافی یہی ہے کہ کسی کا حق اور کسی کو پکڑا دینا اور جس نے اللہ کا حق اس کی مخلوق کو دیا تو بڑے سے بڑے کا حق لیکر ذلیل سے ذلیل کو دیدیا جیسے بادشاہ کا تاج ایک چمار کے سر پر رکھ دیجئے اس سے بڑی کیا بے انصافی کیا ہوگی اور یہ یقین جان لینا چاہیے کہ ہر مخلوق بڑا ہو یا چھوٹا وہ اللہ کی شان کے آگے چمار سے بھی ذلیل ہے اس آیت سے معلوم ہوا کہ جیسے شرع کی راہ سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ شرک سب سے بڑا گناہ ہے ایسے ہی عقل کی راہ سے بھی یہی معلوم ہوتا ہے کہ شرک سب عیبوں سے بڑا عیب ہے اور یہی حق ہے اس واسطے کہ آدمی میں بڑے سے بڑا عیب یہی ہے کہ اپنے بڑوں کی بے ادبی کرے سو اللہ سے بڑا کوئی نہیں اور شرک اسی کی بے ادبی ہے۔

وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ۔ فرمایا اللہ تعالیٰ نے یعنی سورۂ انبیاء میں اور نہیں بھیجا ہم نے تجھ سے پہلے کوئی رسول مگر کہ اس کو یہی حکم بھیجا کہ بیشک بات یوں ہی کوئی ماننے کے لائق نہیں سوائے میرے سو بندگی کرو میری۔

ف۔ یعنی جتنے پیغمبر آئے سو وہ اللہ کی طرف سے یہی حکم لائے ہیں کہ اللہ کو مانے اور اس کے سوائے کسی کو نہ مانے۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ شرک سے منع اور توحید کا حکم سب شریعتوں میں ہے سو یہی راہ نجات کی ہے اس کے سوائے اور سب راہیں غلط ہیں۔

اَخْرَجَ مُسْلِمٌ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مشکوٰۃ کے باب الریا میں لکھا ہے کہ مسلم نے ذکر کیا کہ نقل کیا ابوہریرہؓ نے کہ کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے کہ فرمایا اللہ نے

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "तक़वीयतुल ईमान" के सफ़ा 28 की फ़ोटो कापी

حرام ہو بلکہ اتنی ہی بات کا ذکر ہے کہ کسی مخلوق کے نام پر جو کوئی جانور مشہور کیا کہ یہ گائے سید احمد کبیر کی ہے یا یہ
بکرا شیخ سدو کا ہے سو وہ حرام ہو جاتا ہے پھر کوئی جانور مرغی یا اونٹ کسی مخلوق کے نام کا کر دیجئے ولی کا یا نبی کا باپ
کا یا دادے کا بھوت کا یا پری کا سب حرام ہے اور ناپاک کرنے والے پر شرک ثابت ہو جاتا ہے وَقَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی
یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَیْرٌ اَمِ اللّٰہُ الْوَاحِدُ الْقَہَّارُ ۝ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِہٖۤ اِلَّا
اَسْمَآءً سَمَّیْتُمُوْہَاۤ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُکُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰہُ بِہَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُکْمُ اِلَّا لِلّٰہِ ؕ اَمَرَ اَلَّا
تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاہُ ؕ ذٰلِکَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ وَلٰکِنَّ اَکْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ۝ ترجمہ اور کہا اللہ صاحب نے یعنی
سورۂ یوسف میں کہ حضرت یوسفؑ نے قید خانہ میں اور قیدیوں سے کہا اے رفیقو قید خانے کے کیا کئی مالک
جدے جدے بہتر ہیں یا اللہ ایک زبردست نہیں مانتے ہو تم ورے اسکے مگر کئی ناموں کو کہ ٹھہرا لئے ہیں تم
نے اور تمہارے باپ دادوں نے نہیں اتاری اللہ نے انکی کچھ سند نہیں حکم کسی کا سوائے اللہ کے اس نے
یہی حکم کیا ہے کہ کسی کو اسکے سوائے مت مانو یہی ہے دین مضبوط مگر اکثر لوگ نہیں جانتے ف یعنے اول
تو خدا کے حق میں ہی مالک ہونے بہت نقصان کرتا ہے بلکہ ایک مالک زبردست چاہئے کہ سب مراد اسکی پوری
کرے اور سب کاروبار اس کے بنادے اور دوسرے یہ کہ ان مالکوں کی کچھ حقیقت بھی نہیں وہ کچھ چیز اصل
میں نہیں ہیں بلکہ آپ ہی لوگ خیال باندھ لیتے ہیں کہ مینہ برسانا کسی اور کے اختیار میں ہے اور دانہ اگانا کسی
اور کے اور اولاد کوئی اور دیتا ہے اور تندرستی کوئی اور پھر آپ ہی ان کے نام ٹھہرا لیتے ہیں فلانے کام کے
مختار کا نام یہ اور فلانے کا یہ پھر آپ ہی ان کو مانتے ہیں اور ان کاموں کیوقت پکارتے ہیں پھر اسیطرح ایک مدت میں
یہ رسم جاری ہوتی ہے حالانکہ وہ سب محض اپنے غلط خیالات میں ہیں کچھ انکی حقیقت نہیں وہاں سوا اللہ کے
کوئی اور نہ کسی کا یہ نام اگر کسی کا یہ نام ہے تو اسکو کسی کاروبار میں کچھ دخل نہیں سو سب خیال ہی خیال ہے اس نام
کا کوئی شخص وہاں مالک اور مختار نہیں جو ان کاموں کا مختار ہے اس کا نام اللہ ہے محمد یا علی نہیں اور جسکا نام محمد
یا علی ہے وہ کسی چیز کا مختار نہیں سو ایسا شخص کہ اسکا نام محمد یا علی ہو اور اسکے اختیار میں عالم کے سب کاروبار ہوں
ایسا حقیقت میں کوئی شخص نہیں بلکہ محض اپنا خیال ہے سو اس قسم کے خیال باندھنے کا اللہ نے تو حکم نہیں دیا
اور کسی کا حکم اسکے مقابل معتبر نہیں بلکہ اللہ نے تو ایسے خیال باندھنے سے منع کیا ہے اور وہ کون ہے کہ اس
کے کہنے سے ان باتوں کا اعتبار ہووے یہی اصل دین ہے کہ اللہ ہی کے حکم پر چلئے اور کسی کا حکم اسکے مقابل میں
ہرگز نہ مانئے لیکن اکثر لوگ یہ راہ نہیں چلتے بلکہ اپنے بیہودوں کی رسموں کو اللہ کے حکم سے مقدم سمجھتے ہیں اس آیت
سے معلوم ہوا کہ کسی کی راہ و رسم کو ماننا اور اسی کے حکم کو اپنی سند سمجھنا یہ بھی انہیں باتوں میں سے ہے کہ خاص
اللہ نے اپنی تعظیم کے واسطے ٹھہرائی ہیں پھر جو کوئی یہ معاملہ کسی مخلوق سے کرے تو اس پر بھی شرک ثابت ہوتا ہے
کو اللہ تک پہنچنے کی راہ بندوں تک رسول ہی کی خبر دینا ہے سو جو کوئی کسی امام کے یا مجتہد کے یا غوث و قطب کے یا مولوی
و مشائخ کے یا باپ دادوں کے یا کسی بادشاہ وزیر کے یا پادری و پنڈت کی بات کو اور ان کی راہ و رسم کو

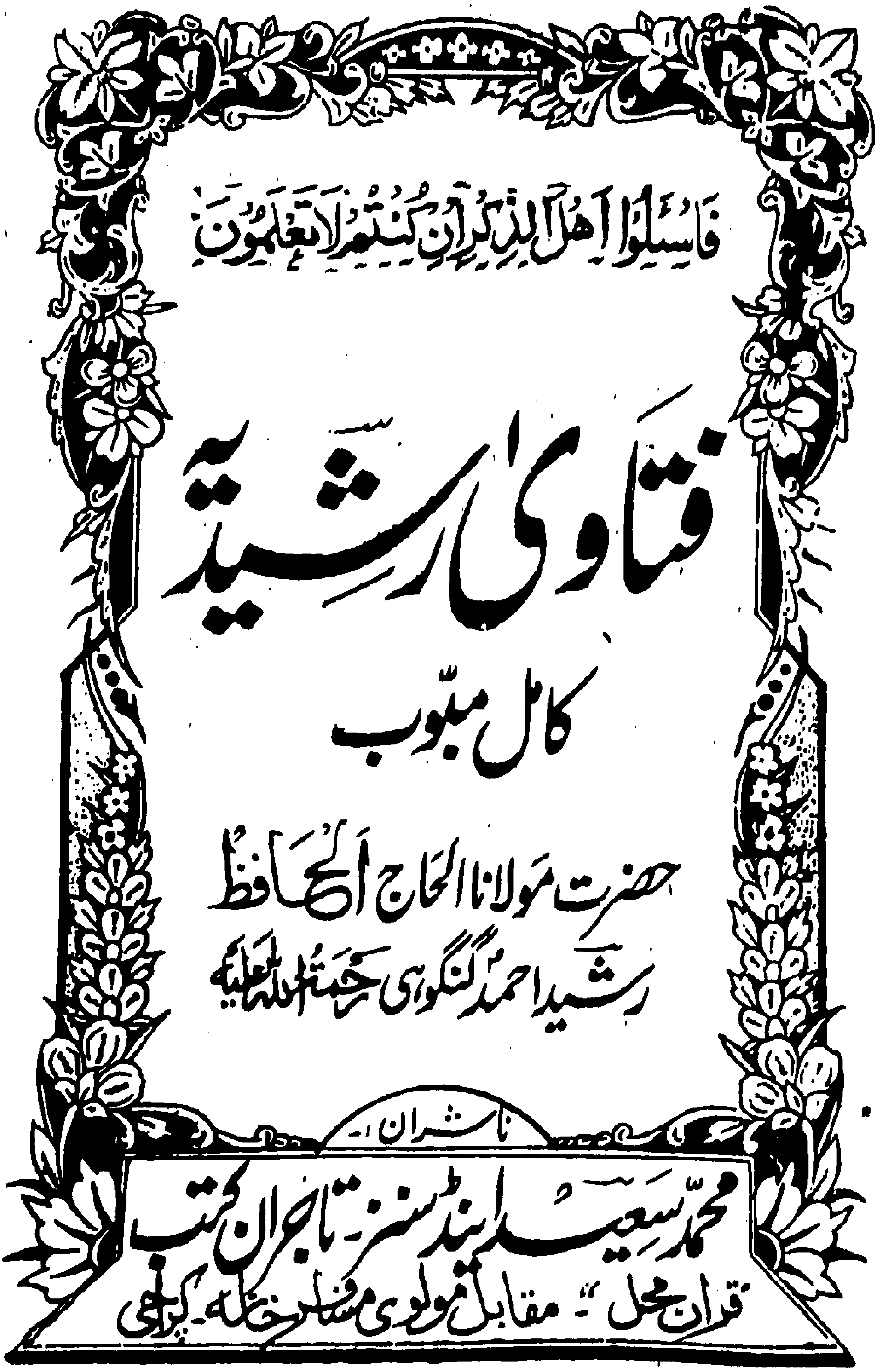
मौ. इस्माईल देहलवी की किताब “तक़वीयतुल ईमान” के सफ़ा 39 की फ़ोटो कापी

اپنا خیال اور وہم بھی دوڑائیے پھر کسی کام میں دخل کرنے کی اور اس کی سلطنت میں، سو اس لئے کہ اس کو قدرت ہے وہ خود مالک الملک بغیر لشکر اور فوج کے اور بغیر کسی وزیر اور مشیر کے ایک آن میں کروڑوں کام کرتا رہتا ہے وہ کسی کے روبرو سفارش کرے اور کس کا منہ کہ اس کے سامنے کسی کام کا مختار بن کے بیٹھے سبحان اللہ اشرف المخلوقات محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی تو اس کے دربار میں یہ حالت ہے کہ ایک گنوار کے منہ سے اتنی بات سنتے ہی مارے دہشت کے بے حواس ہو گئے اور عرش سے فرش تک جو اللہ کی عظمت بھری ہوئی ہے بیان کرنے لگے پھر کیا کہئے ان لوگوں کو کہ اس مالک الملک سے ایک بھائی بندی کا رشتہ یا دوستی آشنائی کا سا علاقہ سمجھ کر کیا کیا بڑھ بڑھ کر باتیں کہتے ہیں کوئی کہتا ہے کہ میں نے اپنے رب کو ایک کوڑی کو مول لیا اور کوئی کہتا ہے کہ میں اپنے رب سے دو برس بڑا ہوں کوئی کہتا ہے کہ اگر میرا رب میرے پیر کے سوا کسی اور صورت میں ظاہر ہو تو ہرگز اس کو نہ دیکھوں۔ اور کسی نے یہ بیت کہی ہے بیت دل از مہر محمد ریش دارم ۔ رقابت با خدائے خویش دارم ۔ اور کسی نے یوں کہا ع با خدا دیوانہ باش و با محمد ہوشیار ۔ اور کوئی حقیقت محمدی کو حقیقت الوہیت سے افضل بتاتا ہے۔ اللہ پناہ میں رکھے ایسی ایسی باتوں سے کیا اچھی بیت کہی ہے کسی شاعر نے بیت از خدا خواہیم توفیق ادب ۔ بے ادب محروم گشت از فضل رب ۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ یہ جو لوگوں میں ایک ختم مشہور ہے کہ اس میں یوں پڑھتے ہیں یا شیخ عبد القادر جیلانی شیئاً للہ یعنے اے شیخ عبد القادر دو تم اللہ کے واسطے یہ لفظ نہ کہنا چاہئے ہاں اگر یوں کہے یا اللہ کچھ دے شیخ عبد القادر کے واسطے تو بجا ہے غرض کہ ایسا لفظ منہ سے نہ بولے کہ جس سے کچھ بو شرک کی یا بے ادبی کی آوے کہ اس کی بہت بڑی شان ہے اور بڑا بے پرواہ بادشاہ ہے ایک نکتہ میں پکڑ لینا اور ایک نکتہ میں نواز دینا اسی کا کام ہے اور یہ بات محض بیجا ہے کہ ظاہر میں لفظ بے ادبی کا بولے اور اس سے کچھ اور معنی مرادی لے کہ معما اور پہیلی بولنے کی اور بہت جگہ ہیں کچھ اللہ کی جناب میں ضرور نہیں کوئی شخص اپنے بادشاہ سے یا اپنے باپ سے ٹھٹھا نہیں کرتا اور جگت نہیں بولتا اس کام کے واسطے دوست آشنا ہیں نہ باپ اور نہ بادشاہ۔ أَخْرَجَ مُسْلِمٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ أَحَبَّ أَسْمَائِكُمْ عَبْدُ اللّٰهِ وَعَبْدُ الرَّحْمٰنِ ۔ ترجمہ مشکوٰۃ کے باب الاسامی میں لکھا ہے کہ مسلم نے ذکر کیا کہ نقل کیا ابن عمرؓ نے کہ پیغمبر خدا نے فرمایا کہ تمہارے ناموں میں اچھا نام عبد اللہ و عبد الرحمن ہے ف یعنے عبد اللہ کے معنے بندہ اللہ کا اور عبد الرحمن کے معنے بندہ رحمن کا سو اسی میں داخل ہے عبد الخالق خدا بخش اللہ دیا اللہ داد غرض جس نام میں اللہ کی طرف نسبت نکلے موافق اللہ کے ویسے نام کا ذکر ہو کہ اور کسی کو نہیں بولتے جنج أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ عَنْ شُرَيْحِ بْنِ هَانِئٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ لَمَّا وَفَدَ إِلَى رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعَ قَوْمِهِ سَمِعَهُمْ يُكَنُّونَهُ بِأَبِي الْحَكَمِ فَدَعَاهُ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ إِنَّ اللّٰهَ

मौ. इस्माईल देहलवी की किताब "तक़वीयतुल ईमान" के सफ़ा 42 की फ़ोटो कापी

سزاوار ہے کہ تم کو سجدہ کریں سو فرمایا کہ بندگی کرو اپنے رب کی اور تعظیم کرو اپنے بھائی کی ف
یعنے انسان آپس میں سب بھائی ہیں جو بڑا بزرگ ہو وہ بڑا بھائی ہے سو اسکی بڑے بھائی کی سی
تعظیم کیجیے اور مالک سب کا اللہ ہے بندگی اس کو چاہیے ۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ اولیاء و انبیاء
امام و امام زادہ پیر و شہید یعنے جتنے اللہ کے مقرب بندے ہیں وہ سب انسان ہی ہیں اور بندے عاجز
اور ہمارے بھائی مگر ان کو اللہ نے بڑائی دی وہ بڑے بھائی ہوئے ہم کو ان کی فرمانبرداری کا حکم ہے ہم
انکے چھوٹے ہیں سو ان کی تعظیم انسانوں کی سی کرنی چاہیے نہ خدا کی سی اور یہ بھی معلوم ہوا کہ بعضے بزرگوں
کو بعضے درخت اور بعضے جانور مانتے ہیں چنانچہ بعضے درگاہوں پر شیر حاضر رہتے ہیں اور بعضے پر ہاتھی اور بعضے
پر بھیڑیے مگر آدمی کو اسکی کچھ سند نہ پکڑنی چاہیے بلکہ آدمی ویسی ہی تعظیم کرے کہ اللہ نے بتلائی ہو اور شرع میں
جائز ہو مثلاً قبروں پر مجاور بننا شرع میں نہیں بتایا سو ہرگز نہ بنے ۔ اور کسی کی قبر پر کوئی شیر رات دن بیٹھا رہتا
ہو تو اس کی سند نہ پکڑے کہ آدمی کو جانور کی ریس نہ کرنی چاہیے اَخْرَجَ اَبُوْدَاوٗدَ عَنْ قَیْسِ ابْنِ سَعْدٍ
قَالَ اَتَیْتُ الْحِیْرَةَ فَرَاَیْتُھُمْ یَسْجُدُوْنَ لِمَرْزُبَانٍ لَّھُمْ فَقُلْتُ لَرَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ
اَحَقُّ اَنْ یُّسْجَدَ لَہٗ فَاَتَیْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ اِنِّیْ رَاَیْتُ الْحِیْرَةَ فَرَ
اَیْتُھُمْ یَسْجُدُوْنَ لِمَرْزُبَانٍ لَّھُمْ فَاَنْتَ اَحَقُّ اَنْ نَّسْجُدَ لَکَ فَقَالَ لِیْ اَرَاَیْتَ لَوْ مَرَرْتَ بِقَبْرِیْ
اَکُنْتَ تَسْجُدُ لَہٗ فَقُلْتُ لَا فَقَالَ لَا تَفْعَلُوْا ترجمہ مشکوٰۃ کے باب عشرۃ النساء میں لکھا ہے کہ ابوداؤد
نے ذکر کیا کہ قیس بن سعد نے نقل کیا کہ گیا میں ایک شہر میں جس کا نام حیرہ ہے سو دیکھا میں نے وہاں
کے لوگوں کو کہ سجدہ کرتے تھے اپنے راجہ کو سو کہا میں نے البتہ پیغمبر خدا زیادہ لائق ہیں کہ سجدہ کیجیے
ان کو پھر آیا میں پیغمبر خدا کے پاس پھر کہا میں نے کہ گیا تھا میں حیرہ میں سو دیکھا میں نے ان لوگوں
کو کہ سجدہ کرتے ہیں اپنے راجہ کو سو آپ بہت لائق ہیں کہ سجدہ کریں ہم تم کو تو فرمایا مجھ کو بھلا خیال
تو کرو جو تو گذرے میری قبر پر کیا سجدہ کرے تو اس کو کہا میں نے نہیں فرمایا کہ مت کرو ف
یعنے میں بھی ایک دن مر کر مٹی میں ملنے والا ہوں تو کب سجدے کے لائق ہوں سجدہ تو اسی
پاک ذات کو ہے کہ نہ مرے کبھی اس حدیث سے معلوم ہوا کہ سجدہ نہ کسی زندہ کو کیجیے نہ
کسی مردہ کو نہ کسی قبر کو کیجیے نہ کسی تھان کو کیونکہ جو زندہ ہے سو ایک دن مرنے والا ہے اور جو مر گیا سو
کبھی زندہ تھا اور بشریت کی قید میں گرفتار پھر مر کر خدا نہیں بن گیا ہے بندہ ہی بندہ ہے اَخْرَجَ
مُسْلِمٌ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَا یَقُوْلَنَّ اَحَدُکُمْ
عَبْدِیْ وَاَمَتِیْ کُلُّکُمْ عَبِیْدُ اللّٰہِ وَکُلُّ نِسَائِکُمْ اِمَاءُ اللّٰہِ وَلَا یَقُلِ الْعَبْدُ لِسَیِّدِہٖ
مَوْلَایَ فَاِنَّ مَوْلَاکُمُ اللّٰہُ ترجمہ
مشکوٰۃ کے باب الاسامی میں لکھا ہے کہ مسلم نے ذکر کیا کہ ابوہریرہ نے نقل کیا کہ پیغمبر خدا نے فرمایا کہ کوئی

मौ. रशीद अहमद गंगोही की किताब "फतावा रशीदया" के कवर की फोटो कापी



فاسئلوا اھل الذکر ان کنتم لا تعلمون

فتاویٰ رشیدیہ

کامل مبوّب

حضرت مولانا الحاج الحافظ
رشید احمد گنگوہی رحمۃ اللہ علیہ

ناشران:

محمد سعید اینڈ سنز۔ تاجران کتب
قرآن محل۔ مقابل مولوی مسافر خانہ۔ کراچی

मौ. रशीद अहमद गंगोही की किताब "फ़तावा रशीदया" के सफ़ा 147 की फ़ोटो कापी

فتاوی رشیدیہ کامل ۱۴۷

ہوئی یا نہیں۔

جواب - جو امر شرعاً حرام ہے کسی کی خاطر داری سے کرنا حرام جانکر بھی فسق اور حرام ہے ہرگز نہیں چاہئے معصیت میں کسی کی رضا درست نہیں۔ فقط

رشید احمد

بعد دفن مکان میت پر فاتحہ کا حکم

سوال - بعض لوگوں میں دستور ہے کہ جسوقت میت کو دفن کرکے آتے ہیں اسکے گھر والے اسوقت فاتحہ پڑھتے ہیں یہ فعل فاتحہ پڑھنا درست ہے یا نہیں۔

جواب - اس فاتحہ کا ثبوت کچھ نہیں فقط کتبہ الاحقر رشید احمد گنگوہی عفی عنہ

رشید احمد

میلاد مروجہ کا حکم

سوال - زید نے بکر سے دریافت کیا کہ مجلس میلاد مروجہ حال جائز ہے یا نہیں اور اس میں شریک ہونا کیسا ہے بکر خود بھی مجلس میلاد کرتا تھا اور آئندہ سال کو ارادہ بکر کا بھی ترک مجلس کا تھا بخیال اسکے کہ خرچ ہوتا تھا اور اپنے اعتقاد میں ناجائز جانتا تھا مگر منع کرنا مجلس کا بوجہ اسکے تھا کہ اس وجہ سے کوئی مجھکو طعنہ نہ دیگا جبکہ میں اس مجلس کو نہ کرونگا بہانہ شرع کا ہو جاویگا اور خود نہ شریک ہونا مجلس کا اس وجہ سے ترک کیا کہ لوگ معترض ہونگے اول تو ان خیالات سے منع ہوا بعدہ بہ نیت خالصاً للہ مانع ہوا لہٰذا اس سبب سے بکر کو ترک بدعت سابق و حل و انکار بدعت سے ثواب ہوگا یا نہیں اور باعث ریا تو نہیں ہے۔

جواب - بہر حال گناہ سے محفوظ رہا جب سے قصد ترک کیا بہتر ہوا کہ بعزم ترک گناہ کا ہوا فقط واللہ تعالیٰ اعلم بندہ رشید احمد گنگوہی عفی عنہ

رشید احمد

کسی عرس میں شرکت جائز نہیں

سوال - جس عرس میں صرف قرآن شریف پڑھا جاوے اور تقسیم شیرینی ہو شریک ہونا جائز ہے یا نہیں۔ (در رسلہ میر محبوب علی صاحب دہلی دریبہ کلاں)

جواب - کسی عرس اور مولود میں شریک ہونا درست نہیں اور کوئی سا عرس اور مولود درست نہیں ہے۔

محرم میں تمام رسوم بدعت ہیں

سوال - محرم میں عشرہ وغیرہ کے روز شہادت کا بیان کرنا مع اشعار بروایت صحیح یا بعض ضعیفہ بھی و نیز سبیل لگانا اور چندہ دینا اور شربت و دودھ بچوں کو پلانا درست ہے یا نہیں۔

جواب - محرم میں ذکر شہادت حسنین علیہما السلام کرنا اگرچہ بروایات صحیح ہو یا سبیل لگانا شربت

لہ بعض دارہ محمد یحییٰ صاحب ۱۲ ؎ قال الشیخ علی القاری فی رد بدعات التعزیہ ۱۲ طلحہ حکل القرءۃ بالقرآن علی المیت بالتعیین فی المقبرۃ والمسجد والبیت بدعۃ مذمومۃ التعین ۱۲ ؎ قال فی اصول المسائل من ذکر مقتل الحسین فی یوم عاشوراء ایہام ۱۲ و قال ان ذلک من شعائر الروافض ۱۲

मौ. रशीद अहमद गंगोही की किताब "फ़तावा रशीदया" के सफ़ा 148 की फ़ोटो कापी

بلانا یا چندہ سبیل اور شربت میں دینا یا دودھ پلانا سب نادرست اور تشبہ روافض کی وجہ سے حرام ہیں فقط

اہل میت کے یہاں فاتحہ پڑھنے اور جوڑا دینے کا حکم

سوال حسب مروجہ دستور برادری اہل میت کے یہاں جاکر فاتحہ پڑھنا اور پگڑی جوڑا لوینا درست ہے یا نہیں۔

جواب۔ یہ سب امور بدعت اور نادرست ہیں البتہ صرف تعزیت کے لئے جانا درست ہے اگر دفن کفن میں شریک نہ ہوا ہو فقط

صلوٰۃ معکوس وغیرہ

سوال۔ صلوٰۃ غوثیہ جو اکثر عوام پڑھتے ہیں جائز ہے یا نہیں اور صلوٰۃ معکوس وصلوٰۃ ہول بھی جائز ہے یا نہیں۔ (از حافظ عبد الرحیم صاحب)

جواب۔ صلوٰۃ غوثیہ کی حقیقت ہم کو معلوم نہیں اور صلوٰۃ معکوس فی الحقیقت نماز نہیں۔ بلکہ مجاہدہ ہے اور صلوٰۃ ہول کا ثبوت صحاح حدیث سے نہیں فقط رشید احمد عفی عنہ

محفل میلاد مشروع کا حکم

سوال۔ محفل میلاد جس میں روایات صحیحہ پڑھی جاویں اور لاف وگزاف اور روایات موضوعہ اور کاذبہ نہ ہوں شریک ہونا کیسا ہے۔

جواب۔ ناجائز ہے بسبب اور وجوہ کے فقط

میت کو بلا قیود ورسوم ایصال ثواب میں ثواب ہے۔

سوال۔ میت کو ثواب پہنچانا بغیر تعین تاریخ کے یعنی تیجا دسواں چالیسواں نہ ہو درست ہے یا نہیں۔

جواب۔ ثواب میت کو پہنچانا بلا قید تاریخ وغیرہ اگر ہو تو عین ثواب ہے اور جب تخصیصات اور التزامات مروجہ ہوں تو نادرست[3] اور باعث مواخذہ ہو جاتا ہے فقط

چالیسویں تک روٹی دینے کا حکم

سوال۔ مرنے کے بعد چالیس روز تک روٹی ملا کو دینا درست ہے یا نہیں۔

جواب۔ چالیس روز تک روٹی کی رسم کر لینا بدعت ہے ایسے ہی گیارہویں بھی بدعت ہے بلا پابندی رسم وقیود ایصال ثواب مستحسن ہے فقط۔

---

[1] زوال فی الدر المختار ۱۲ [2] مانزالسائل میں مفصل مرقوم ہے ۱۲ [3] فتاویٰ عزیزی جلد دوم صفحہ ۱۰۰ میں مرقوم ہے مراد از طعام بہت سنا ایں است کہ تا چہل روز سے خورانند و جماعت قلب آنست کہ بیشتر از ہنگام سنوح موت میت وہم بعد ازاں خیال سر انجام ایں طعام و تقسیم تن نیا بیں الا قربا یا سکان مساجد دامنگیر خاطر میشود کسانیکہ ایں طعام بانہا میرسد از وقت موت متوقع وچشم دوختہ بریں طعام مے باشند مقصود شرعی آنست کہ از موت میت عبرت گیرند و در فکر آخرت مشغول طونند واز غفلت ہوشیار شوند وایں مقصود ازیں صورت بالکلیہ مقصود میگردد دانچہ در حدیث صحیح آمدہ است ودر عمل سنہ موجود است ہمیں قدر است کہ نہی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من طعام المیت الخ ۱۲

मौ. रशीद अहमद गंगोही की किताब "फतावा रशीदया" के सफ़ा 488 की फोटो कापी

جواب۔ زید غلط کہتا ہے حقہ نوشی کی نماز اور دعا سب مقبول ہوتا ہے البتہ اس حقہ کی بو کا ازالہ نہ کرنا اور منہ میں رکھنا مکروہ ہے فقط۔

([illegible]) سوال۔ نفع لینا شرع میں کہاں تک جائز ہے بتدلال مسئلوں کو زیب فرما کر جلد حضرت تحریر فرما دیں

جواب۔ نفع جہاں تک چاہے لے لیکن کسی کو دھوکا نہ دے فقط واللہ تعالیٰ اعلم رشید احمد گنگوہی عفی عنہ [مہر: رشید احمد]

(حقہ و تمباکو کا حکم) سوال۔ حقہ پینا یا تمباکو کھانا یا سونگھنا کیسا ہے حرام ہے یا مکروہ تحریمہ یا مکروہ تنزیہہ ہے اور تماکو فروش اور نیچے بند کے گھر کا کھانا کیسا ہے۔

(مرسلہ میاں جی عبدالرحمن صاحب سہنسپور ضلع بجنور)

جواب۔ حقہ پینا تمباکو کھانا مکروہ تنزیہہ ہے اگر بو آوے ورنہ کچھ حرج نہیں اور حقہ تمباکو فروش کا مال حلال ہے ضیافت بھی اس کے گھر کھانا درست ہے فقط رشید احمد

(ہندوؤں کے تہوار پر ان کے ہدیہ کا حکم) سوال۔ ہندو تہوار ہولی یا دیوالی میں اپنے استاذ یا حاکم یا نوکر کو کھیلیں یا پوری یا اور کچھ کھانا بطور تحفہ بھیجتے ہیں ان چیزوں کا لینا اور کھانا استاد و حاکم و نوکر مسلمان کو درست ہے یا نہیں۔ (مرسلہ میاں جی عبدالرحمن صاحب سہنسپور ضلع بجنور)

جواب۔ درست ہے فقط۔ رشید احمد عفی عنہ

(گیروا رنگ کا حکم) سوال۔ کپڑے گیرو میں رنگنا جیسے صوفی لوگ رنگتے ہیں کیسا ہے۔

(مرسلہ میاں جی عبدالرحمن صاحب سہنسپور ضلع بجنور)

جواب۔ گیرو میں کپڑے رنگنا درست ہے بشرطیکہ میلا رنہ ہو فقط واللہ تعالیٰ اعلم رشید احمد گنگوہی عفی عنہ۔ [مہر: رشید احمد]

الجواب صحیح۔ محمد عبداللطیف عفی عنہ [مہر: عبداللطیف]

(ہندوؤں کے تہوار پر خوشی کے گیت گانا ناجائز ہے) سوال۔ ہندوؤں کے لڑکوں کو ان کے تہوار ہولی یا دیوالی میں بطور عیدی ان کے تہوار کی تعریف میں کچھ اشعار بنا کر جس طور کہ میاں جی لوگ پڑھایا کرتے ہیں پڑھانا درست ہے یا نہیں۔ (مرسلہ میاں جی عبدالرحمن صاحب سہنسپور ضلع بجنور)

جواب۔ یہ درست نہیں فقط رشید احمد عفی عنہ

(عرس وغیرہ میں بہ نیت تجارت جانا جائز نہیں) سوال۔ مسلمانوں کے میلوں میں جیسے پیران کلیر وغیرہ میں واسطے سوداگری

لہ مولوی محمد یحییٰ صاحب ۱۲

मौ. रशीद अहमद गंगोही की किताब "फ़तावा रशीदया" के सफ़ा 498 की फ़ोटो कापी

قبول کرے اور کھا دے جبکہ اس نے قرض لیکر وہ مال طیار کیا ہو خواہ پھر وہ رنڈی اپنے کسب حرام سے وہ قرض ادا کرے تو حضور فرماویں کہ ڈوم رنڈی وغیرہ کا مال لیکر اپنے قرضدار کو دینا یا وہ قرض لیکر ہی دے اور پھر وہ مال اسے لینا جائز ہے یا نہیں۔

(مرسلہ مولوی ابرار احمد صاحب بچھرایوں ضلع مرادآباد مدرسہ جعفریہ ۱۳۰۲ھ)

جواب۔ اگر کوئی شخص قرض لیکر کسی کار خیر میں لگا دے یا کسی کو صدقہ اور ہدیہ دے تو وہ کام بھی ہو جاوے اور اس موہوب لہ کو یہ صدقہ اور ہدیہ بھی لینا درست ہے مگر جب واہب مدیون اپنا قرض حرام مال سے ادا کریگا تو سخت گنہگار ہوگا اور اصل مالک کا دیندار رہیگا ایسے ہی یہ حرام مال کا قرض میں لینے والا بھی اگر مسلمان ہے تو سخت گنہگار رہیگا فقط واللہ تعالیٰ اعلم بندہ رشید احمد گنگوہی عفی عنہ

دوائی تقسیم کا حکم **سوال** - دوائی غذا اور مٹھائی تر یا خشک کھانی درست ہے یا نہیں۔

جواب جس کی نجاست یا حرمت تحقیق ہو یا غالب گمان ہو وہ نہ کھاوے اور جس کا حال معلوم نہو اسکا کھانا لینا درست ہے فقط۔

رافضی کے ہدیہ کا حکم **سوال** - رافضی کا ہدیہ دعوت اور جنازہ میں نماز کی شرکت جائز ہے یا نہیں۔

جواب - رافضی کا ہدیہ دعوت کھانا گو درست ہے مگر ضرور نماز جنازہ اور ان سے محبت نادرست ہے اسلئے دعوت وغیرہ بھی نہ کھانی چاہیئے کہ اس سے محبت بڑھتی ہے فقط واللہ تعالیٰ اعلم بندہ رشید احمد گنگوہی عفی عنہ

ہندوؤں کی سبیل سے پانی پینا درست ہے **سوال** - ہندو جو پیاؤ یا سبیل لگاتے ہیں سودی روپیہ صرف کر کے مسلمانوں کو اسکا پانی پینا درست ہے یا نہیں۔

جواب - اس پیاؤ سے پانی پینا مضائقہ نہیں ہے فقط۔

اسقاط حمل کا حکم۔ **سوال** - ایک بے بیاہی عورت کو حمل رہ گیا اب بوجہ بیعزتی کے خفیہ کرنا اور اسقاط کرنا چاہتی ہے ایسی صورت میں علاج اسقاط کرنا اور کرانا گناہ ہوگا یا نہیں۔

جواب - اگر اس میں جان پڑگئی ہے تو پھر اسقاط میں سعی کرنا بیشک سخت گناہ اور بحکم قتل ہے ہرگز ایسی دوا دینی درست نہیں ہے فقط۔

قبلہ و کعبہ کہنے کا حکم **سوال** خط میں القاب قبلہ و کعبہ لکھنا درست ہے یا نہیں۔

جواب - قبلہ و کعبہ کسی کو لکھنا درست نہیں ہے فقط۔

---

۱ بقلم مولوی محمد یحییٰ صاحب ۱۲ ۲ فتاوی رشیدیہ میں مرقوم ہے ۱۲

मौ. अशरफ़ अली थानवी के मलफ़ूज़ात "अल इमदाद" के कवर की फोटो कापी



رب زدنی علما

الامداد

مشتمل بر شعب علیہ متنوعہ خمسہ سلسلہ و دائرہ

بابت ماہ صفر المظفر ۱۳۲۶ ہجری

بادارۃ الاحقر رفیق احمد

از مطبع امداد المطابع تھانہ بھون جلوہ نمود گرفت

मौ. अशरफ़ अली थानवी के मलफ़ूज़ात "अल इमदाद" के सफ़ा 34 की फ़ोटो कापी

داعی ہوتا ہے بعض اوقات حدود شرعیہ کا خیال بھی نہیں رہتا ایسا شخص مشابہ حضرت صدیق اکبر
کے اس حال کے ہے جب تک وہ اسلام نہ لائے تھے کہ اس وقت بھی وہ حضرت رسول اللہ
صلی اللہ علیہ وسلم کی نصرت فرماتے تھے مگر محض محبت طبعیہ سے نہ کہ حمیت شرعیہ سے بس خواب میں
ایسے خادموں کی حقیقت بتلائی گئی اس خواب میں جزو مہتم بالشان یہی تھا باقی ظاہر ہے والسلام

۲۰ر شوال ۱۳۳۵ھ۔

سوال۔ اب وجہ اس کی عرض کرتا ہوں کہ بیعت ہونے کا خیال مجھکو کیوں ہوا اور حضور کی
طرف کیوں رجوع کیا بیعت کا شوق صرف مطالعہ کتب تصوف سے اور حضور کی جانب رجوع اسلئے
کہ ہمارے کنبہ کے صاحبان مولانا مولوی محمد صاحب مرحوم مولانا مولوی عبداللہ صاحب مرحوم و
مولانا مولوی عبدالعزیز صاحب مرحوم لودیانہ والوں سے حضور کے اعتقادات ملتے جلتے تھے اس
سے یہ غرض تھی کہ ہمارے نانا یا اور کوئی اپنے دادا وغیرہ علماء کے اعتقادات کو خراب ہی کیوں
ان کو بلا وجہ ترجیح دی جاوے اصل غرض یہ ہے کہ حضور کے اور بندہ کے اعتقادات بالکل ایک
ہیں اور اگر مولوی صاحبان لودیانوی اور حضور کے درمیان کسی فروعات میں اختلاف بھی ہو
تو اسمیں بھی جناب کی طرف رجوع کرتا ہوں (۲) اور حضور کی تصنیف چند کتابیں زیر مطالعہ
رہی ہیں جن میں سے بہشتی زیور تحفہ جان ہے اور شرح مثنوی مولانا رومی رحمۃ اللہ علیہ کے علاوہ
اور بھی چند تصانیف نظر سے گذریں (۳) ایک دفعہ رامپور ریاست میں جانے کا اتفاق ہوا تو وہاں
ایک مسجد میں ایک مولوی صاحب کہ طالب علم تھے ان کے پاس ٹھہرنے کا اتفاق ہو گیا اور یہ بھی
معلوم ہوا کہ وہ مولوی صاحب حضور سے بیعت ہیں اس لئے ان سے اور بھی محبت ہو گئی دوران
گفتگو میں معلوم ہوا کہ ان کے پاس تھانہ بھون سے دو رسالہ الامداد اور حسن العزیز بھی ماہواری
آتے ہیں بندہ نے ان کے دیکھنے کے واسطے درخواست کی تو ان مولوی صاحب طالب علم
نے چند رسالہ مجھکو دیکھنے کے واسطے دئے الحمد للہ جو لطف ان سے اٹھایا بیان سے باہر ہے
ایک روز کا ذکر ہے کہ حسن العزیز دیکھ رہا تھا اور دوپہر کا وقت تھا کہ نیند نے غلبہ کیا اور سو جانے کا
ارادہ کیا رسالہ حسن العزیز کو ایک طرف رکھ دیا لیکن جب بندہ نے دوسری طرف کروٹ بدلی تو
دل میں خیال آیا کہ کتاب کو پشت ہو گئی اسلئے رسالہ حسن العزیز کو اٹھا کر اپنے سر کی جانب رکھ لیا

मौ. अशरफ़ अली थानवी के मलफ़ूज़ात "अल इमदाद" के सफ़ा 35 की फ़ोटो कापी

اور سو گیا کچھ عرصہ کے بعد خواب دیکھتا ہوں کہ کلمہ شریف لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ پڑھتا ہوں
لیکن محمد رسول اللہ کی جگہ حضور کا نام لیتا ہوں اتنے میں دل کے اندر خیال پیدا ہوا کہ مجھ سے غلطی ہوئی
کلمہ شریف کے پڑھنے میں اسکو صحیح پڑھنا چاہئے اس خیال سے دوبارہ کلمہ شریف پڑھتا ہوں دل پر
تو یہ ہے کہ صحیح پڑھا جاوے لیکن زبان سے بیساختہ بجائے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے نام کے
اشرف علی نکل جاتا ہے حالانکہ مجھکو اس بات کا علم ہے کہ اس طرح درست نہیں لیکن بے اختیار زبان
سے یہی کلمہ نکلتا ہے۔ دو تین بار جب یہی صورت ہوئی تو حضور کو اپنے سامنے دیکھتا ہوں اور بھی
چند شخص حضور کے پاس تھے لیکن اتنے میں میری یہ حالت ہوگئی کہ میں کھڑا کھڑا بوجہ اس کے کہ
رقت طاری ہوگئی زمین پر گر گیا اور نہایت زور کے ساتھ ایک چیخ ماری اور مجھکو معلوم ہوتا تھا کہ
میرے اندر کوئی طاقت باقی نہیں رہی اتنے میں بندہ خواب سے بیدار ہوگیا لیکن بدن میں بدستور
بے حسی تھی اور وہ اثر ناطاقتی بدستور تھا لیکن حالت خواب اور بیداری میں حضور کا ہی خیال
تھا لیکن حالت بیداری میں کلمہ شریف کی غلطی پر جب خیال آیا تو اس بات کا ارادہ ہوا کہ اس خیال
کو دل سے دور کیا جاوے اس واسطے کہ پھر کوئی ایسی غلطی نہ ہو جاوے باین خیال بندہ بیٹھ گیا اور پھر
دوسری کروٹ لیٹ کر کلمہ شریف کی غلطی کے تدارک میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پر درود شریف
پڑھتا ہوں لیکن پھر بھی یہ کہتا ہوں اللھم صل علی سیدنا ونبینا ومولانا اشرف علی حالانکہ
اب بیدار ہوں خواب نہیں لیکن بے اختیار ہوں مجبور ہوں زبان اپنے قابو میں نہیں اس روز
ایسا ہی کچھ خیال رہا تو دوسرے روز بیداری میں رقت رہی خوب رویا اور بھی بہت سے وجوہات
ہیں جو حضور کے ساتھ باعث محبت ہیں کہاں تک عرض کروں۔

جواب اس واقعہ میں تسلی تھی کہ جس کی طرف تم رجوع کرتے ہو وہ بعونہ تعالیٰ متبع سنت ہے

۲۴ شوال ۱۳۳۵ھ۔

سوال جناب مخدومنا مولانا عم فیضہم وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ۔ مکرمت نامہ وارد
ہو کر باعث اعزاز ہوا یہ ناچیز حضرت جد امجد قبلہ عالم مد ظلہ العالی کا بڑا نواسہ مولوی
صاحب مرحوم کا لڑکا ہے اس میں شبہ نہیں کہ جناب نے ضروریات زمانہ کے لحاظ سے دینی خدمت
بہت کی ہے اور بہت سے رسائل مفیدہ دینیات میں تصنیف فرما کر لوگوں کو مستفیض فرمایا مگر آپ سے

कुछ मुश्किल अल्फ़ाज़ के मअनी

शब्द	अर्थ
अक्स	फ़ोटो कापी
अहकाम	हुक्म की जमा
अम्बिया	नबी की जमा
अक़वाल	क़ौल, बात
अबदलअबाद	हमेशा हमेशा
आक़बत	आख़रत
ईज़ा	तकलीफ़
इस्तहक़ाक़	हक़दार होना
इख़्तलाफ़	मतभेद
इब्तिदा	शुरूआत
इत्तेहाद	एकता
उलूमे ग़ैबिया	ग़ैब की यानी छुपी हुई बातों का ज्ञान
उज़्र	मजबूरी
उलफ़त	महब्बत
जदीद	नया
पेशगोईयाँ	भविष्यवाणियाँ
पिसर	बेटा
पैरो	अनुयायी, मानने वाले
फ़ितना परदाज़	झगड़ा बढ़ाने वाला
फ़लसफ़ी	दार्शनिक
फुरूई मसाइल	वो मसाइल जिनका अमल से तअल्लुक़ है अक़ीदे से नहीं
फ़ासिक़े मोलिन	खुले आम कबीरा गुनाह करने वाला
बिदअत	नया काम
बिदअते हसना	वह नया काम जो अच्छा हो
बिदअते सइया	वह नया काम जो बुरा हो

बहाएम	चौपाए, जानवर
बऔनिही तआला	अल्लाह तआला की मदद से
बशारते जमीला	बड़ी बशारत
बदगो	बुराई करने वाला
बकसरत	ज़्यादा करने वाला
मुरत्तब	संकलन
मुनक़ता	कटा हुआ, टूट जाना
मज़लूम	जिस पर ज़ुल्म हो
मज़ालिम	ज़ुल्म की जमा
मुजद्दिद	दीन को निखारने वाला जो हर सदी के आख़िर में पैदा होता है
मलफ़ूज़ात	बुज़ुर्गों की बातें
मुत्तबे सुन्नत	सुन्नत पर चलने वाला
मशीख़ियत	शैख़ या पीर होना
मफ़हूम	अर्थ, मतलब
मुताला	अध्ययन
मुअज़्ज़म	अज़मत वाला, इज़्ज़त वाला
मरदूद	नालाइक़, पाजी
मश्रिक़	पूरब
मग़रिब	पश्चिम
मुख़्तसर	संक्षिप्त
मफ़ाद	फ़ायदा
मुहाल	असम्भव
मुनाफ़िक़	छुपा काफ़िर
तुर्शरूई	कड़वा बोलना
तअल्लुक़ात	संबन्ध
दावते फ़िक्र	ग़ौर और फ़िक्र की दावत
निसार	क़ुर्बान

वुसअत	विस्तार, फैलाव
वक़्अत	इज़्ज़त, अहमियत
शेवा	तरीक़ा
शाय	प्रकाशित
शय	चीज़
शदीद	सख़्त
सरीह	साफ़
तारीख़	इतिहास
तफ़सीर	विस्तार पूर्वक
तफ़रीक़	जुदाई
ताईद	समर्थन करना
तक़रीज़	किसी किताब पर अपनी राय देना
ताज़याना	जुर्म की सज़ा
तख़सीस	ख़ासियत
तख़रीज	हदीस निकाल कर बयान करना
तहक़ीक़	जांच पड़ताल
हुस्ने ख़त्मा	अच्छी मौत यानी ईमान पर मरना
हद से तजावुज़	सीमा से बाहर
हादी	रहनुमा
हक़ीर समझना	कमतर समझना, बुरा समझना
हक़	सच
हक़ीक़ी	वास्तव में
हबीब	दोस्त
रद्द	विरोध में लिखना या करना
रियाकारी	दिखावा
रूहुल .क़ुदुस	पाक रूह (यानी जिब्रील अलैहिस्सलाम)
रुजू करना	वापस फिरना
राबता	सम्पर्क

बहारे शरीअत हिन्दी में

आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ख़लीफ़ा सदरुश शरिआ अल्लामा मुह़म्मद अमजद अली अलैहिर्रह़मा की यह किताब बहुत ही मशहूर -ओ- मारूफ़ है। इस किताब का हिन्दी तर्जमा जनाब मुह़म्मद अह़मद साहब ने किया। इस किताब के बीस हिस्से हैं मगर अभी तक पाँच हिस्से एक साथ एक ही जिल्द में छपे हैं। इस किताब के पहले हिस्से में अल्लाह रसूल और नबियों के बारे में अक़ीदे, फरिश्तों और जिन्न का बयान है। इसके अलावा पहले ही हिस्से में आलमे बरज़ख क़ब्र, हश्र, जन्नत और दोज़ख़ का बयान है। इसके दूसरे हिस्से में वुज़ू, .गुस्ल, तयम्मुम, वग़ैरा का बयान है और साथ ही औरतों के मसाइल हैज़, नफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान है। दूसरे ही हिस्से में नजासत और नजासत को पाक करने का बयान भी है। इस किताब के तीसरे हिस्से में अज़ान व नमाज़ का बहुत ही तफ़सील के साथ बयान है। चौथे हिस्से में नफ़्ल नमाज़ों का बयान, क़ज़ा नमाज़ों का बयान, जुमे के मुताल्लिक़ अहकाम और मरीज़ की नमाज़ का बयान है। चौथे ही हिस्से में मौत आने और मय्यत के नहलाने व कफ़न दफ़न का बयान भी है। पाँचवें हिस्से में ज़कात व रोज़े का बहुत तफ़सील के साथ बयान है। लिहाज़ा यह किताब पढ़ने से तअल्लुक़ रखती है।

इस्लामी अख़्लाक़ -ओ- आदाब

आलाहज़रत इमाम अह्मद रज़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ख़लीफ़ा सदरुश शरिआ अल्लामा मुह़म्मद अमजद अली अलैहिर्रह्मा की किताब बहारे शरीअत का यह सोलहवाँ हिस्सा है। इस किताब को जनाब मुह़म्मद अह़मद साहब ने हिन्दी में पेश किया है। इस किताब में रोज़मर्रा के मसाइल का बयान है। इसमें खाने पीने, लिबास जूता व अंगूठी पहनने, बैठने छूने देखने व चलने के आदाब, सलाम व मुसाफ़ा, छींक, जमाही का बयान है। साथ ही .कुरआन मजीद पढ़ने, आदाबे मस्जिद, आदाबे क़िब्ला का बयान है। मरीज़ की इयादत, लहू लइब का बयान है। झूट बुग़्ज़ हसद .जुल्म .गुस्सा तकब्बुर रिया का बयान है। औलाद व पड़ोसियों के हुक़ूक़ का बयान है। अल्लाह के लिए दोस्ती व दुश्मनी का बयान है। ज़ीनत, ख़तना का बयान है। नाम रखने का बयान है। कस्ब व इल्मो तालीम का बयान है। अम्र बिल मारूफ़ नही अनिल मुन्कर का बयान है। क़ब्रों की ज़्यारत, इसाले सवाब और मीलाद शरीफ़ का बयान है। इसके अलावा सैकड़ों मसाइल का बयान है। गर्ज़ यह किताब पढ़ने से तअल्लुक़ रखती है।

सच्ची हिकायात हिन्दी में

मौलाना अबुन्नूर बशीर रह़मतुल्लाही तआ़ला अ़लैह की यह किताब उर्दू ज़बान में बहुत मशहूर है। इसमें बुज़ुर्गों की सैकड़ों हिकायात हैं और साथ ही हर हिकायत के साथ सबक़ भी दिया गया है और इस सबक़ से जहाँ हज़ारों नसीहतें मिलती हैं वहाँ हमारे बुज़ुर्गों के तसर्रुफ़ात, इख़्तयारात, इल्मे ग़ैब, मदद करना, वग़ैरह का भी सुबूत मिलता है। हर हिकायत के साथ हवाला भी दिया गया है कि यह हिकायत कहाँ से ली गई है। लगभग सारी ही हिकायात मशहूर -ओ- मारूफ़ किताबों से ली गई हैं। इस किताब के पांचो हिस्सों को जनाब मुह़म्मद अह़मद साहब ने हिन्दी में पेश किया है।

शरहे सलामे रज़ा हिन्दी में

आलाहज़रत मुजद्दिद दीन -ओ- मिल्लत शाह अह़मद रज़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के सलाम की शरहे (Explanation) उर्दू ज़बान में 500 से ज़्यादा सफ़हात पर शाय हो चुकी है जिसकी शरहे मुफ़्ती मुह़म्मद अह़मद ख़ाँ क़ादिरी (पाकिस्तान) ने की जो कि पढ़नें से तअल्लुक़ रखती है। इसी सलाम के लगभग चालीस अश्आर की शरहे जनाब मुह़म्मद अह़मद साहब ने हिन्दी ज़बान में की जो कि बहुत मुख़्तसर 32 सफ़हात पर छप चुकी है।

नात

अर्शे हक़ है मस्नदे रिफ़अत रसूलुल्लाह की
देखनी है हश्र में इज़्ज़त रसूलुल्लाह की
क़ब्र में लहरायेंगे ता हश्र चश्मे नूर के
जलवा फ़रमा होगी जब तलअत रसूलुल्लाह की
काफ़िरों पर तेग़े वाला से गिरी बर्क़े ग़ज़ब
अब्र आ सा छा गई हैबत रसूलुल्लाह की
ला व रब्बुल अर्श जिसको जो मिला उनसे मिला
बटती है कौनैन में नेअमत रसूलुल्लाह की
वह जहन्नम में गया उनसे जो मुस्तग़नी हुआ
है ख़लीलुल्लाह को हाजत रसूलुल्लाह की
सूरज उल्टे पांव पलटे चाँद इशारे से हो चाक
अंधे नजदी देख ले क़ुदरत रसूलुल्लाह की
तुझसे और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की
ज़िक्र रोके फ़ज़्ल काटे नक़्स का जोयाँ रहे
फिर कहे मरदक कि हूँ उम्मत रसूलुल्लाह की
नजदी उसने तुझको मौहलत दी कि इस आलम में है
काफ़िर ओ मरतद पे भी रहमत रसूलुल्लाह की
हम भिकारी वह करीम उनका ख़ुदा उनसे फ़ज़ूँ
और न कहना नहीं आदत रसूलुल्लाह की
ख़ाक हो कर इश्क़ में आराम से सोना मिला
जान की अकसीर है उलफ़त रसूलुल्लाह की
टूट पायेंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैद -ओ- बन्द
हश्र को खुल जाएगी ताक़त रसूलुल्लाह की

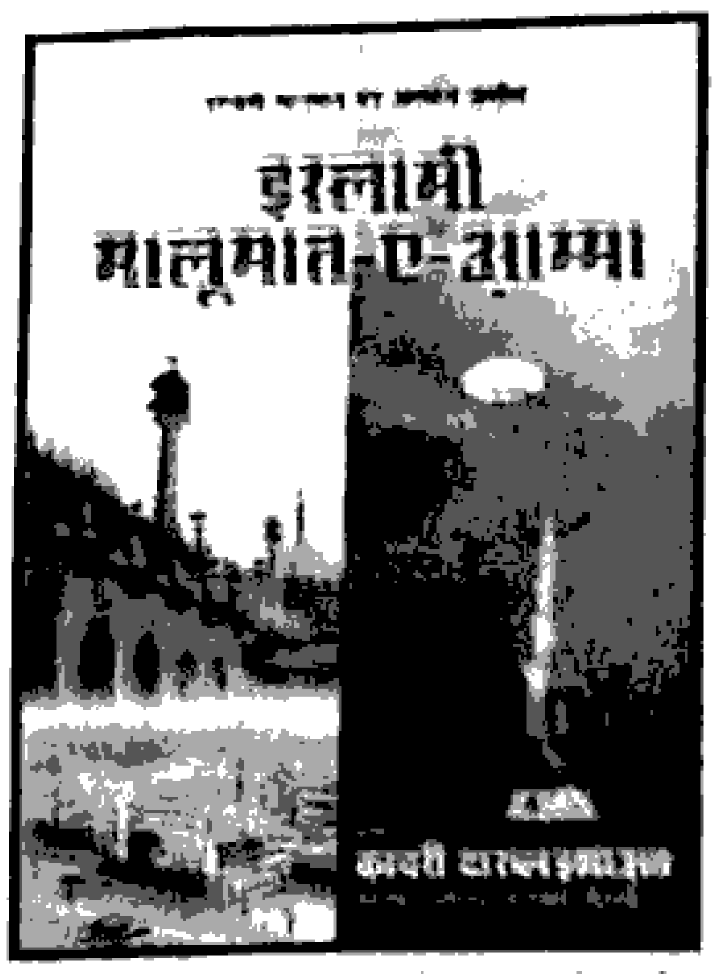
या रब एक साअत में धुल जायेंगे सियाहकारों के जुर्म
जोश पे आ जाए अब रहमत रसूलुल्लाह की
ऐ 'रज़ा' .ख़ुद साहिबे .कुरआँ है मद्दाहे हुज़ूर
तुझसे कब मुमकिन है फिर मिदहत रसूलुल्लाह की

अर्शे हक़ → अल्लाह तआला का अर्श, मसनद → बैठने की जगह, – ता हश्र → हश्र तक, तलअत → चमक, ------- तेग़ → तलवार, बर्क़े ग़ज़ब → .गुस्से की बिजली, ला व रब्बिल अर्श → नहीं ख़ुदा की क़सम, कौनैन → दोनों आलम, --- मुस्तग़नी → बेपरवाह, ख़लीलुल्लाह → अल्लाह का दोस्त यानी हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम, -------- फज़ूँ → बरतर, अकसीर → वह दवा जो जल्द असर करे, उलफ़त → महब्बत, ----- सियाहकार → गुनाहगार, साहिबे .कुरआँ → .कुरआन वाला यानी अल्लाह तआला, मद्दाहे हुज़ूर → हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की तारीफ़ करने वाला, ---- मिदहत → तरीफ़, सर ता–ब–क़दम → सर से पांव तक

क़ता

अल्लाह की सर ता–ब–क़दम शान हैं ये
इन सा नहीं इन्सान वह इन्सान हैं ये
.कुरआँ तो ईमान बताता है इन्हें
ईमान यह कहता है मेरी जान हैं ये

(आलाहज़रत)



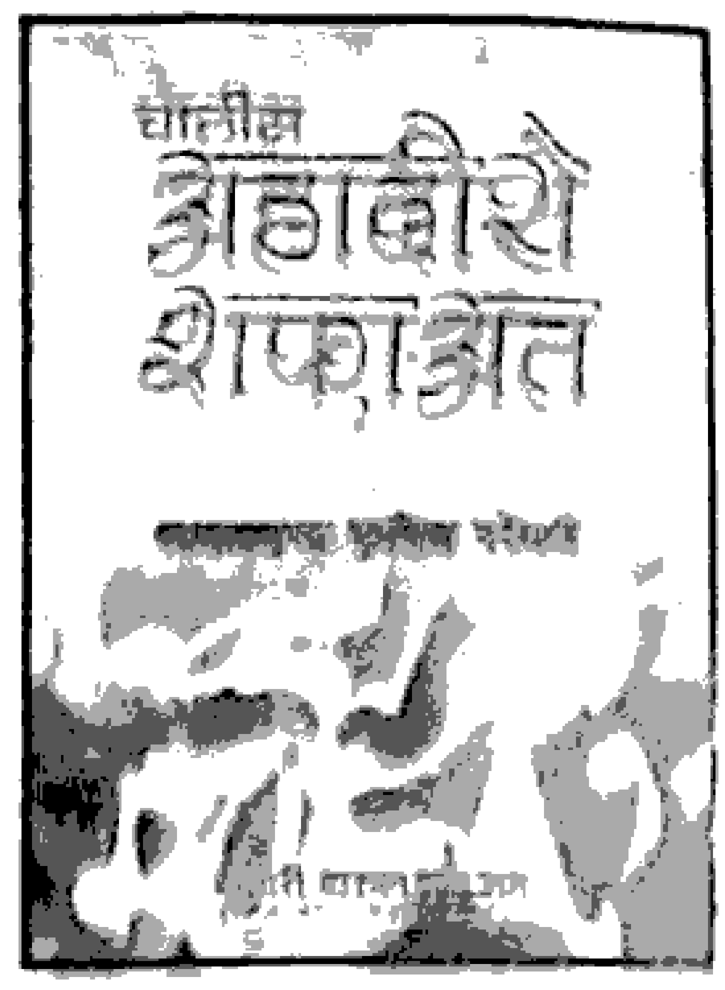
Rs. 12/-



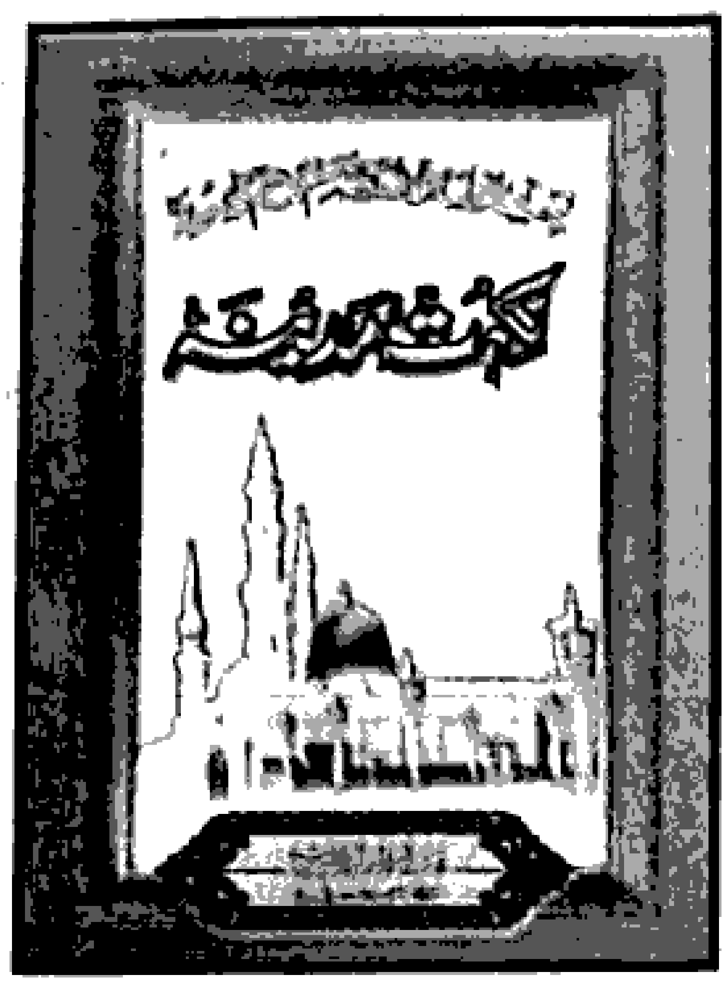
Rs. 30-



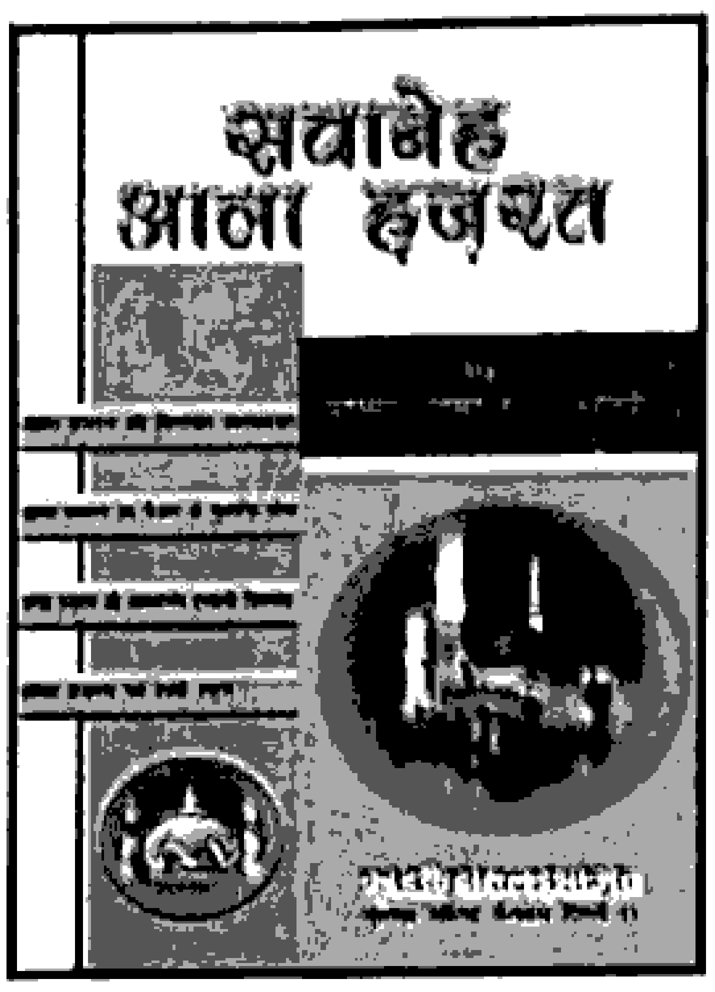
Rs. 5/-



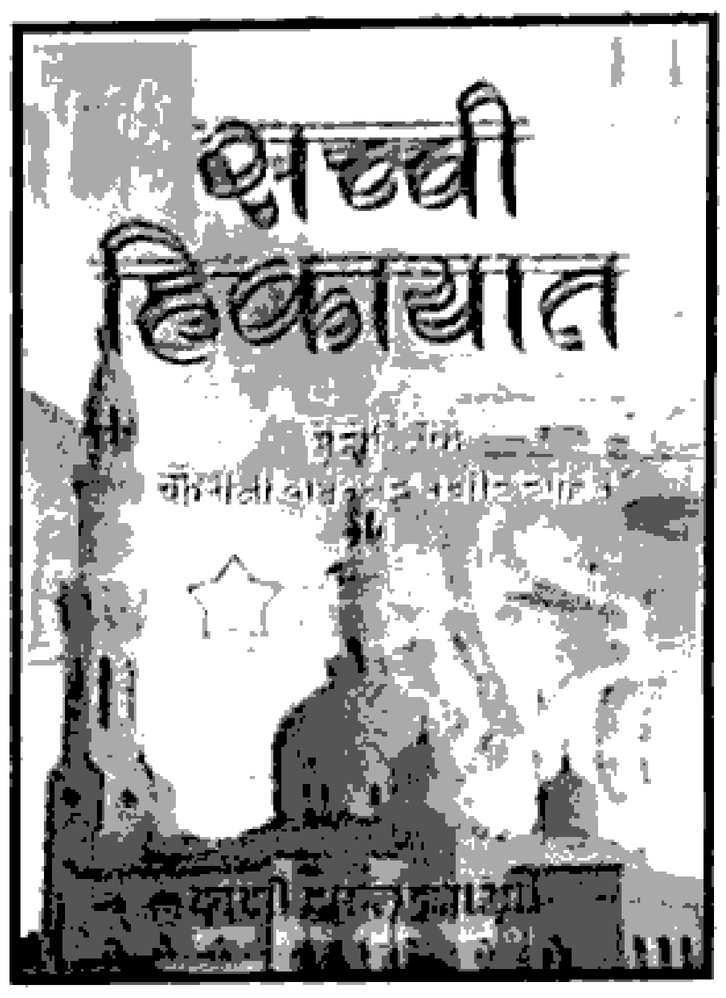
Rs.7/-



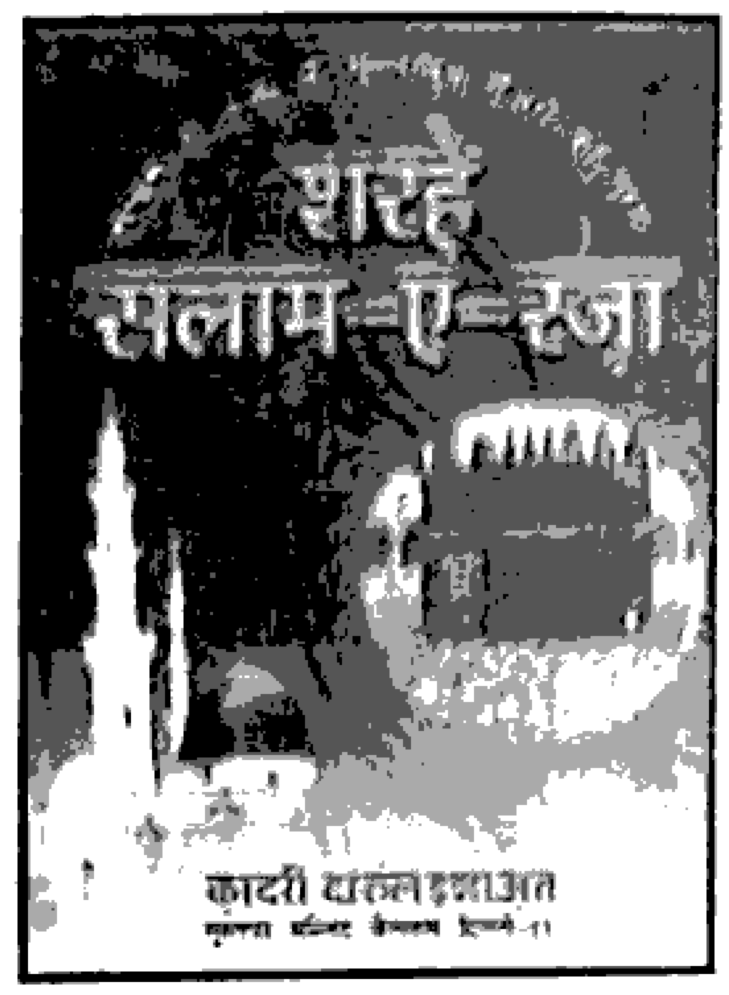
Rs. 10/-



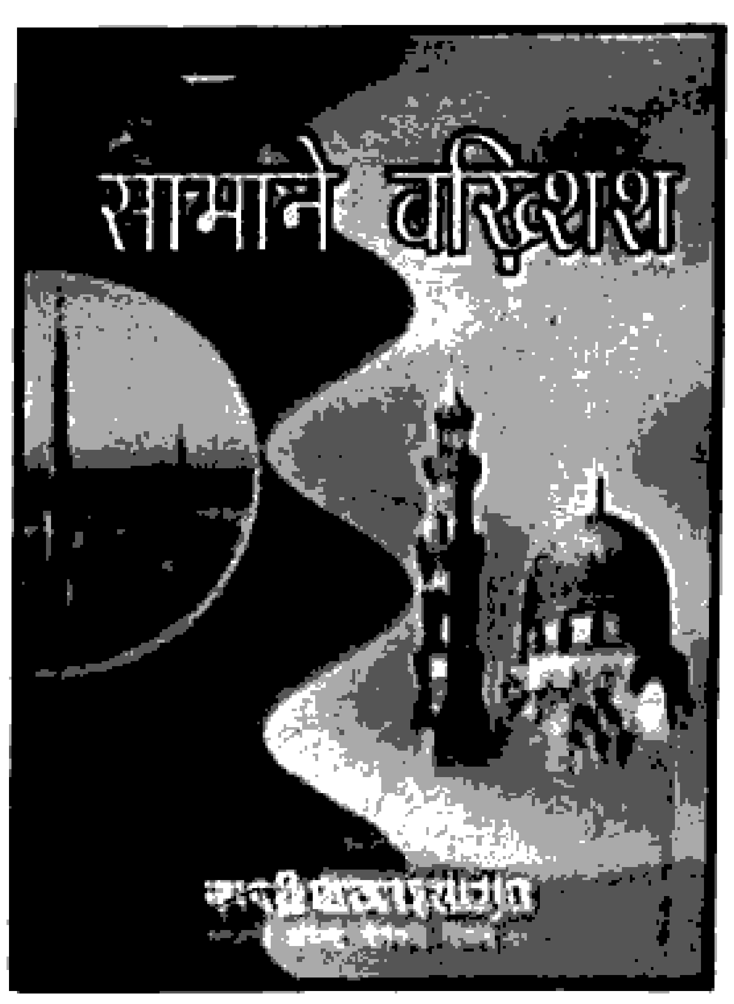
Rs. 35/-



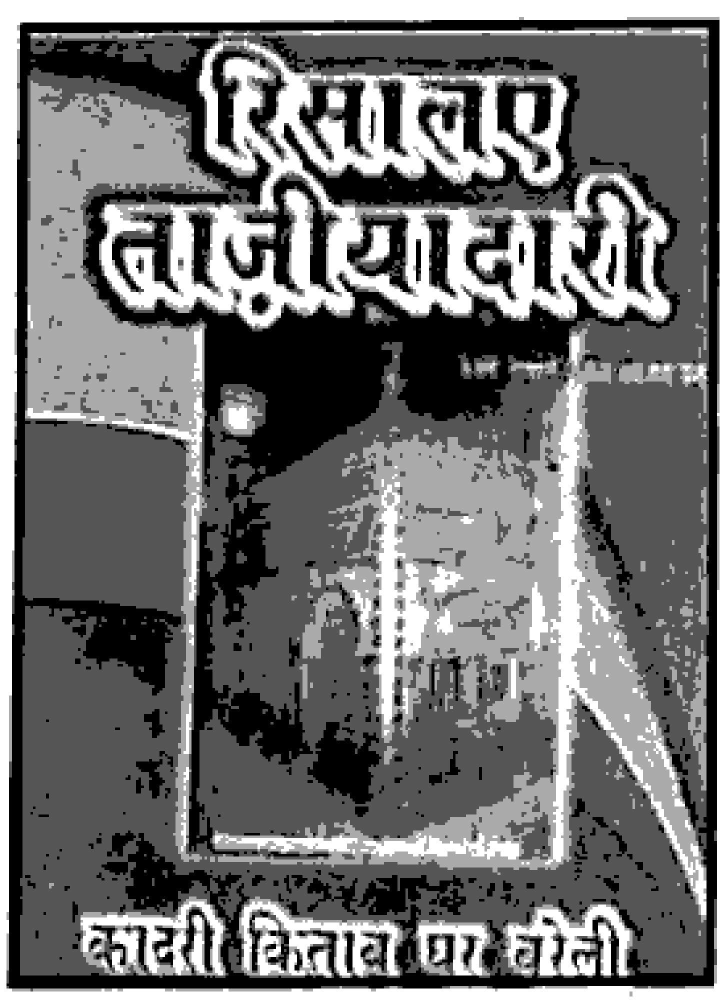
Vol-I to IV Rs.160/-



Rs. 6/-



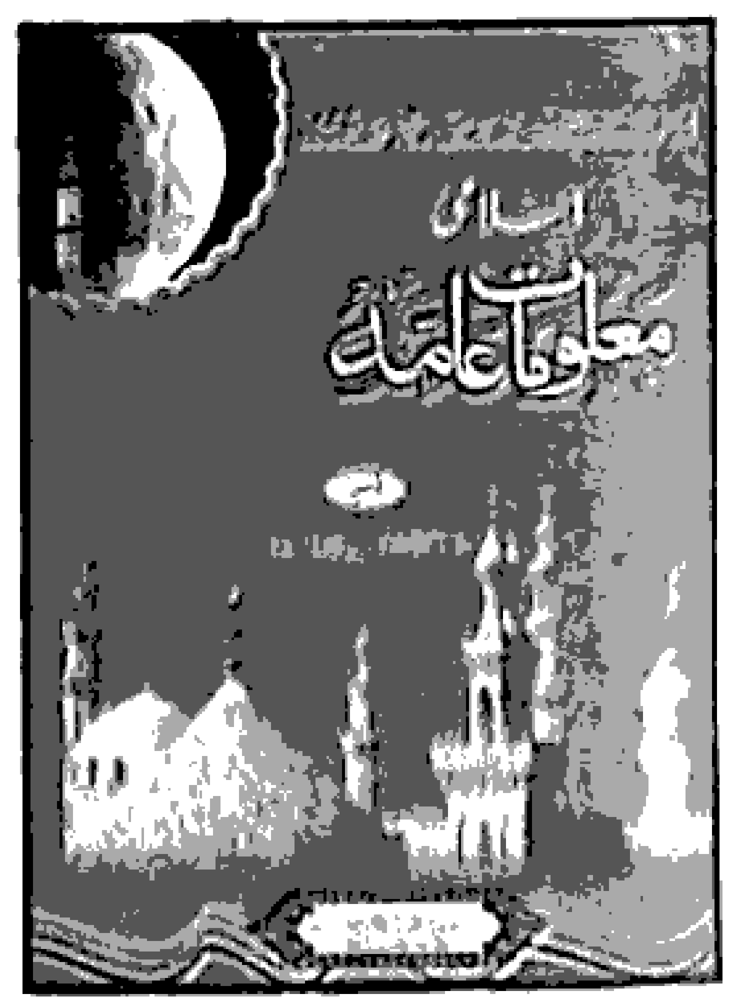
Rs.15/-



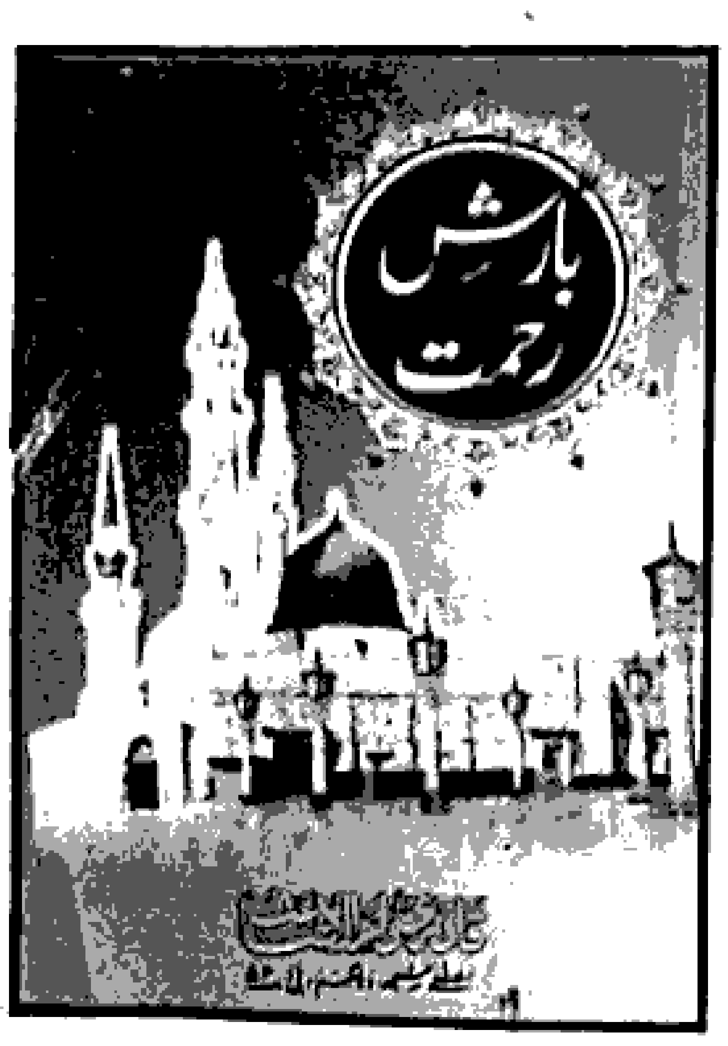
Rs.8/-



Rs. 90/-



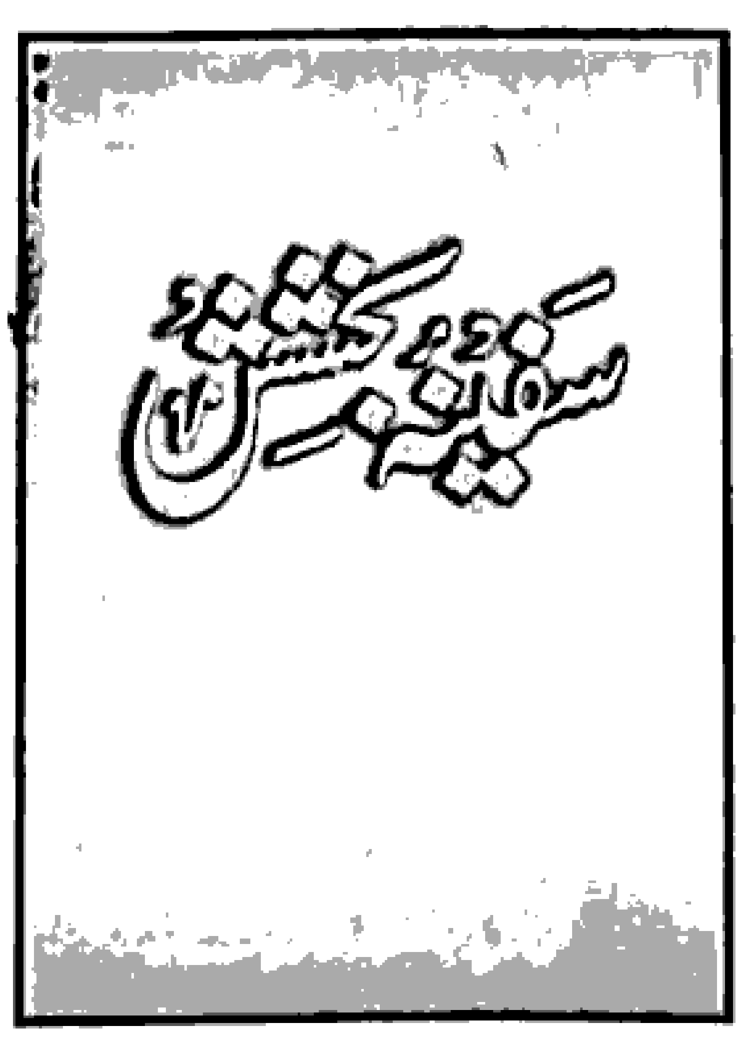
Rs. 25/-



Rs. 8/-



Rs. 25/-



Rs. 15/-



Rs. 15/-